राष्ट्रीय दैनिक

प्रात·किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

हर खबर पर पकड़

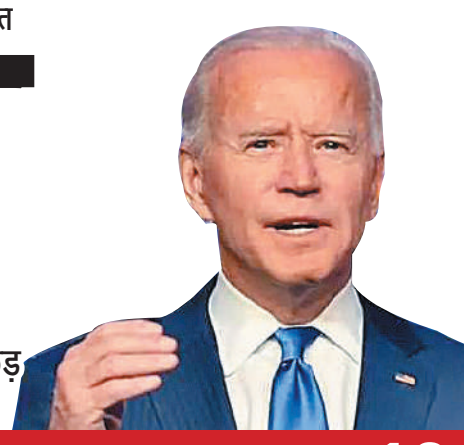

11 टी-20 विश्व कप में सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज...

अचानक हमास का नाम भूल गए बाइडन... 12

वर्ष : 14 | अंक : 267 | नई दिल्ली, शुक्रवार, 09 फरवरी, 2024 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

राजस्थान की वित्त मंत्री ने पेश किया अंतरिम बजट, 70,000 पदों पर भर्तियों की घोषणा

प्रात: किरण/एजेंसी

जयपुर। राजस्थान की वित्त मंत्री दीया कुमारी ने बृहस्पतिवार को विधानसभा में लेखानुदान या अंतरिम बजट पेश किया जिसमें उन्होंने 70,000 पदों पर भर्तियां करने, मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के तहत 20,000 गांवों में पांच लाख जल संचयन संरचनाएं तैयार करने सहित कई घोषणाएं कीं। अपने बजट भाषण में उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने राज्य पर कर्जभार सहित कई अन्य मुद्दों को लेकर पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार के कार्यकाल में राज्य जहां एक ओर विपरीत वित्तीय स्थिति में आ गया, वहीं दूसरी ओर गलत नीतियों, भ्रष्टाचार, लचर कानून व्यवस्था, कुशासन एवं तुष्टिकरण के कारण प्रदेश के विकास की गति भी मंद हुई। उन्होंने कहा, "इन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करते हुए हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार के सहयोग के साथ-साथ, हमारी सरकार की ठोस कार्ययोजना, सुशासन एवं कठिन परिश्रम से प्रदेश को सतत विकास के मार्ग पर ले जायेंगे। उन्होंने कहा, "मैं सदन को भरोसा दिलाना चाहूंगी कि राजस्थान को विकसित, समृद्ध, सशक्त एवं खुशहाल प्रदेश बनाने के लिए किसी भी प्रकार के संसाधनों की कमी नहीं आने दी जायेगी।" इस दौरान की गई प्रमुख घोषणाओं में भर्तियां भी हैं। मंत्री ने कहा, "युवाओं को सम्बल प्रदान कर उनके रोजगार के अधिकाधिक अवसरों का सृजन करना हमारी सरकार की प्राथमिकता है। इस क्रम में, युवाओं को रोजगार को आगामी वर्ष में सरकार के अधीन लगभग 70 हजार पदों पर भर्तियां किये जाने की मैं, घोषणा करती हूं। साथ ही, युवाओं की काउंसलिंग और मार्गदर्शन के माध्यम से निजी क्षेत्र में उनके स्वर्णिम करियर निर्माण के लिए राज्य के समस्त संभाग मुख्यालयों पर युवा साथी केन्द्र स्थापित किये जाने का भी प्रस्ताव है। इसपर 10 करोड़ रुपये खर्च होंगे।" वित्त वर्ष 2024-25 का पूर्ण बजट जुलाई में पेश किया जाएगा। संविधान के अनुच्छेद 116 के तहत, बजट स्वीकृत होने तक सीमित अवधि के लिए आवश्यक सरकारी व्यय को पूरा करने के लिए लेखानुदान प्रस्तुत किया जाता है। मौजूदा लेखानुदान जुलाई, 2024 तक पेश किया गया है। अपने भाषण के दौरान दीया कुमारी ने पूर्व सरकार पर वित्तीय कुप्रबंधन, भ्रष्टाचार, दूरदर्शिता की कमी का आरोप लगाया जिसको लेकर हंगामा हो गया। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली सहित कांग्रेस के अन्य विधायकों ने आपत्ति जताई और हंगामा किया। मुख्यमंत्री भजनलाल ने हस्तक्षेप करते हुए उनसे महिला वित्त मंत्री द्वारा पेश बजट भाषण सुनने का अनुरोध किया। नेता प्रतिपक्ष जूली ने कहा कि महिला मंत्री द्वारा लेखानुदान पेश करने पर कोई आपत्ति नहीं है लेकिन इसमें राजनीतिक आरोप लगाना अनुचित है। उन्होंने कहा कि वित्त मंत्री को अपने बजट में राजनीतिक टिप्पणियां करने के बजाय बजट भाषण पढ़ना चाहिए।

अधिकतम तापमान 17°C
न्यूनतम तापमान 13°C

बाजार

सोना 64,625

चांदी 79,800

सेंसेक्स 71,428

निफ्टी 21,717

संक्षिप्त खबरें

पूर्व महाधिवक्ता शशांक शेखर सिंह भाजपा में शामिल

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की मध्यप्रदेश इकाई के अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा और अन्य पार्टी नेताओं की मौजूदगी में आज यहां कांग्रेस नेता एवं राज्य के पूर्व महाधिवक्ता शशांक शेखर सिंह भाजपा में शामिल हो गए। प्रदेश संगठन के अनुसार प्रदेश भाजपा कार्यालय में उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला, पूर्व मंत्री नरोत्तम मिश्रा और जबलपुर महापौर जगतबहादुर अन्नू की उपस्थिति में श्री सिंह भाजपा में शामिल हुए। श्री शर्मा ने भगवा दुपट्टा पहनाकर श्री सिंह को पार्टी में औपचारिक तौर पर शामिल कराया।

हरदा में बारह पटाखा फैक्ट्रियाँ सील

हरदा। मध्यप्रदेश के हरदा में जिला प्रशासन ने पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट से हुई जनहानि के दृष्टिगत यहाँ संचालित 12 पटाखा फैक्ट्रियों को तत्काल प्रभाव से सील कर दिया है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार जिला मुख्यालय के बैरागड क्षेत्र में स्थित पटाखा फैक्ट्री में मंगलवार को विस्फोट से हुई जनहानि के परिप्रेक्ष्य में जिला प्रशासन द्वारा जिले में संचालित सभी 12 पटाखा फैक्टरियों को शासन द्वारा जारी दिशा निदेर्शों के पालन एवं मापदंडों के अनुरूप न होने पर तत्काल प्रभाव से सील किया गया। इनमें जिले के ग्राम पीपलपानी, तहसील सिराली की दो, ग्राम कुंजरगावँ, तहसील हंडिया की तीन, ग्राम हंडिया की 1, ग्राम बैरागढ़, तहसील हरदा की चार, ग्राम रहटाखुर्द, तहसील हरदा की ती एवं ग्राम दूधकच्छ, तहसील हरदा की पटाखा फैक्ट्रियां शामिल हैं।

कश्मीर घाटी में शीतलहर से तापमान में गिरावट

श्रीनगर, 08 फरवरी (वेब वार्ता)। कश्मीर घाटी में शीत लहर के कारण रात के तापमान में गिरावट आयी है और राजधानी श्रीनगर का न्यूनतम तापमान गुरुवार को शून्य से 5.2 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया। मौसम विज्ञान केंद्र ने बताया कि प्रदेश में हाल ही में हुए भारी हिमपात के बाद पर्यटन स्थलों पर न्यूनतम तापमान में गिरावट जारी है। मध्य कश्मीर में गंदेरबल जिले के सोनमर्ग पर्यटन स्थल पर रात का तापमान शून्य से कम 13.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। उत्तरी कश्मीर के गुलमर्ग के स्की रिसॉर्ट में न्यूनतम तापमान शून्य से कम 12 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। पहलगाम में न्यूनतम तापमान शून्य से कम 11.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि एक दिन पहले यहाँ का तापमान शून्य से कम 10.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था, जो सामान्य से 4.9 डिग्री सेल्सियस कम है।

अमृत काल में राष्ट्र समृद्धि में सहयोग दें : पीएम मोदी

प्रात: किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को राज्यसभा ने कहा कि देश अमृत काल में समृद्धि की नई ऊंचाइयां छू रहा है और इसे समाज तक ले जाने में सभी को योगदान करना चाहिए। श्री मोदी ने सदन में सेवानिवृत हो रहे 68 सदस्यों के विदाई के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राज्यसभा में प्रति दो वर्ष के बाद नए सदस्य आते हैं और पुराने विदा लेते हैं। यह सदन निरंतरता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि यह सदन प्रति दो वर्ष के बाद नई ऊर्जा अर्जित करता है और अपने कार्यों का निर्वहन पूरा करता है। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री और सेवानिवृत हो रहे डॉ मनमोहन सिंह का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके जीवन से सभी सदस्यों को प्रेरणा लेनी चाहिए। एक सांसद के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्माण करते हुए उन्होंने न केवल संसदीय कार्यों को पूरा किया है बल्कि लोकतंत्र को भी मजबूती दी है। उन्होंने कहा कि देश अमृत काल के दौर में है और देश समृद्धि की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। सेवानिवृत हो रहे सदस्यों को इस समृद्धि को समाज के प्रत्येक तबके तक ले जाने में मदद करनी चाहिए। इन सदस्यों के पास अनमोल अनुभव होता है जिसे वे समाज के कल्याण में प्रयोग कर सकते हैं। प्रधानमंत्री ने कोविड काल के दौरान सदन में विभिन्न प्रतिबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि सभी सदस्यों ने इसमें सहयोग किया और राष्ट्र सेवा को सर्वोपरि समझा। उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में सदन की कई घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि सदन में फैशन शो भी हुआ और काले कपड़े पहनने का अनुभव भी देखा। उन्होंने कहा है कि देश में नई समृद्धि आ रही है। हमारे यहां अच्छे काम के समय काला टीका लगाने की परंपरा है। अमृत काल में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे काला टीका लगाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मैं इसका स्वागत करता हूं। श्री मोदी ने संस्कृत के एक श्लोक का उल्लेख करते हुए कहा कि गुणी व्यक्तियों के साथ रहने से गुण बढ़ जाते हैं जबकि निर्गुण व्यक्तियों के साथ रहने से दोष बढ़ जाते हैं। नदियों का जल तभी तक पीने योग्य होता है जब तक वह बहता रहता है। इसलिए सदस्यों को निरंतर चलते रहने का प्रयास करना चाहिए समाज में अपना योगदान देते रहना चाहिए।

जेवर एयरपोर्ट इस साल हो जाएगा शुरू : सिंधिया

प्रात: किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। सरकार ने आज लोकसभा में कहा कि देश में हवाई अड्डों की संख्या तेजी से बढ़ रही है और इस साल के अंत तक उत्तर प्रदेश में जेवर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा से भी विमानों का संचालन शुरू हो जाएगा। नागर विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने लोकसभा में एक पूरक प्रश्न के जवाब में यह जानकारी देते हुए गुरुवार को बताया कि देश में हवाई अड्डों की संख्या 74 से बढ़कर 149 हो चुकी है और यात्रियों की संख्या में जबरदस्त इजाफा हुआ है। उन्होंने बताया की कोविड से पहले जहां 14.50 करोड़ यात्रियों ने हवाई सेवा का इस्तेमाल किया था वही इस साल ही अब तक 15 करोड़ 20 लाख से ज्यादा लोग हवाई सेवा का इस्तेमाल कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में 2014 तक 6 हवाई अड्डे थे जिनकी संख्या बढ़कर अब 10 हो गई है और इस साल के अंत तक जेवर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के साथ ही राज्य में कुल 16 हवाई अड्डों से विभिन्न क्षेत्रों के लिए उड़ानों का संचालन शुरू कर दिया जाएगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि घरेलू स्तर पर देश में विमान सेवा में सफर करने वाली यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ने से हम 7वें से तीसरे स्थान पर आ चुके हैं और 2029 तक घरेलू तथा विदेशी विमान सेवाओं के दायरे में हमारे तीसरे स्थान पर पहुंचने का अनुमान है। इस समय घरेलू विदेशी यात्रा सेवा में हम सातवें स्तर पर हैं। उन्होंने कहा कि तूतीकोरिन, देवघर, पुणे, अवंतीपुरा गोरखपुर और बलिया से जल्द ही विमान सेवाएं शुरू की जाएंगी।

केंद्र, विपक्षी सरकारों के खिलाफ युद्ध छेड़ रहा है : अरविंद केजरीवाल

प्रात: किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बृहस्पतिवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए उस पर विपक्षी दलों के नेतृत्व वाली राज्य सरकारों के खिलाफ युद्ध छेड़ने का आरोप लगाया। मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के नेतृत्व में केरल के वाम लोकतांत्रिक मोर्चा के नेताओं और सांसदों ने बृहस्पतिवार को दिल्ली के जंतर-मंतर पर केंद्र सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। केजरीवाल ने विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया। प्रदर्शन में केजरीवाल ने कहा, विपक्षी दल देश के 70 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। भाजपा ने विपक्ष शासित राज्यों के खिलाफ जंग छेड़ रखी है। केंद्र सरकार विपक्षी सरकारों को परेशान करने के लिए हर हथकंडा अपना रही है। उन्होंने कहा, वह उन्हें निधि देने से वंचित कर रही है, राज्यपालों और उपराज्यपालों के माध्यम से काम में बाधा डाल रही है। वह विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार करने के लिए केंद्रीय एजेंसियों का उपयोग करके उन्हें परेशान भी कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनकारी ₹यहां अपने परिवारों के लिए भीख मांगने या कुछ मांगने नहीं आए हैं। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक ने कहा, ₹मैं यहां 2 करोड़ लोगों का हक मांगने आया हूं। अगर आप हमें फंड नहीं देंगे तो हम सड़क कैसे बनाएंगे, बिजली कैसे देंगे और विकास के लिए काम कैसे करेंगे? पंजाब का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि राज्य सरकार को ग्रामीण विकास निधि जारी करने के लिए उच्चतम न्यायालय जाना पड़ा। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्यपाल विपक्ष शासित राज्यों में राज्य के विषयों में हस्तक्षेप कर रहे हैं और विपक्षी नेताओं को फंसाने के लिए ईडी जैसी एजेंसियों का इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्होंने कहा, उन्होंने हेमंत सोरेन (झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री) को गिरफ्तार कर लिया, अब वे मुझे भी गिरफ्तार कर सकते हैं। वे सरकार गिराने के लिए किसी को भी गिरफ्तार कर सकते हैं और जेल भेज सकते हैं। केजरीवाल ने कहा, ₹मैं भाजपा से कहना चाहता हूं कि अहंकार न करें। एक समय आ सकता है जब हम वहां (सत्ता में) होंगे और आप यहां (विपक्ष में) होंगे और यही कानून आपको परेशान कर सकते हैं।

सीएम केजरीवाल को दो बार जाना होगा अदालत

नई दिल्ली। दिल्ली के सीएम और आप संयोजक अरविंद केजरीवाल के नाम बुधवार को अदालत ने दो समन जारी किए हैं। दो अलग-अलग मामलों में इस महीने उन्होंने कोर्ट में पेश होकर अपना पक्ष रखना होगा। 17 फरवरी और 29 फरवरी को उन्हें कोर्ट में हाजिर होने को कहा गया है। अदालत ने कथित आबकारी घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले में ईडी द्वारा जारी समन को नजरअंदाज करने की शिकायत पर सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया। ईडी ने 3 फरवरी को अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट दिव्या मल्होत्रा के समक्ष शिकायत दी थी। एजेंसी ने पीएमएलए की धारा 50 (समन जारी करने की शक्ति) के तहत केजरीवाल को जारी समन का पालन नहीं करने और जांच में शामिल नहीं होने पर शिकायत दर्ज की गई थी। अदालत ने अपने आदेश में माना कि प्रथम दृष्ट्या आईपीसी की धारा 174 के तहत अपराध हुआ है। कोर्ट ने शिकायत पर संज्ञान लेते हुए केजरीवाल को समन भेजा है। मामले में आप के तीन नेताओं, पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, सांसद संजय सिंह और विजय नायर को ईडी पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। यूट्यूबर ध्रुव राठी का एक विवादित वीडियो रीट्वीट करने के मामले में भी दिल्ली के सीएम को 29 फरवरी को कोर्ट में पेश होना होगा। केजरीवाल को बुधवार को ही राउज एवेन्यू कोर्ट में पेश होना था। लेकिन उनके वकील ने बजट में व्यस्तता का हवाला देत हुए व्यक्तिगत पेशी से छूट मांगी। अदालत ने बुधवार को छूट दे दी। लेकिन 29 फरवरी को पेश होने का आदेश दिया है।

देश में बनाए गए 10 करोड़ से अधिक आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट

प्रात: किरण

नई दिल्ली। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत अबतक 10 करोड़ से अधिक आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट बनाए गए हैं। गुरुवार को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की तरफ से जानकारी दी गई है कि देशव्यापी स्वास्थ्य देखभाल को डिजिटाइज करने की पहल के तहत गुरुवार को आभा कार्ड की संख्या 10 करोड़ के पार हो गई है। आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट, व्यक्तियों को यूनीक हेल्थ कार्ड प्रदान करता है। आभा कार्ड क्या है? आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट कार्ड के नाम से भी जाना जाने वाला आभा कार्ड भारत सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली हेल्थकेयर पहचान है। यह आपके मोबाइल नंबर और आधार नंबर का उपयोग करके बनाई गई 14-अंकों की पहचान संख्या है।

पेट्रोल में एथेनॉल मिलावट 20% करने का लक्ष्य : सरकार

प्रात: किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। सरकार ने कहा है कि पेट्रोल डीजल पर आयात कम करने के लिए जरुरी कदम उठाए जा रहे हैं और पेट्रोल डीजल में इथेनॉल के मिश्रण से आयत पर निर्भरता को कम करने का प्रयास किया जा रहा है। जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने लोकसभा में एक पूरक प्रश्न के जवाब में यह जानकारी देते हुए बताया कि आयत निर्भरता कम करने और विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ाने की लिए पेट्रोल डीजल

में ईथेनॉल के मिश्रण को 14 प्रतिशत से बढ़कर अब 20 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य तय झरने पर विचार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पेट्रोल में एथेनॉल के मिश्रण से 24000 करोड रुपए की विदेशी मुद्रा की बचत हुई है और इस पैसे का इस्तेमाल सरकार किसानों की स्थिति में सुधार के लिए कर रही है। भविष्य में इस दिशा में और प्रयास किया जा रहे हैं। हाइड्रोकार्बन ईंधन क्षेत्र में 10 वर्षों में निर्भरता बढ़ने की बात स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा कि इस अवधि में हाइड्रोकार्बन ईंधन की खपत बढ़ी है और खपत बढ़ने से इस क्षेत्र में निर्भरता का बढ़ना भी स्वाभाविक था। उनका कहना था की सरकार पर्यावरण मानकों को ध्यान में रखते हुए गैस तथा पेट्रोल का उत्पादन बढ़ा रही है।

पीएम पर राहुल की टिप्पणी निंदनीय : भाजपा

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के उस बयान की निंदा की है, जिसमें राहुल ने प्रधानमंत्री पर जातीय टिप्पणी की थी। भाजपा के वरिष्ठ नेता व लोकसभा सांसद रविशंकर प्रसाद ने गुरुवार को संसद भवन परिसर में मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री पर निजी टिप्पणी कर उन्हें अपमानित किया है। इससे पता चलता है कि कांग्रेस हताश हो चुकी है। उसके पास अब मुद्दे नहीं बचे हैं। प्रधानमंत्री को देश के सभी वर्गों ने स्वीकार किया है जबकि कांग्रेस को देश की जनता ने नकार दिया है। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान एक सभा में कहा कि प्रधानमंत्री मोदी सामान्य जाति से आते हैं। वह तेली जाति में पैदा हुए थे। इस जाति को गुजरात में वर्ष 2000 में ओबीसी में भाजपा ने शामिल किया था। इसलिए प्रधानमंत्री को जातीय जनगणना पर भरोसा नहीं है।

कांग्रेस ने जारी किया ब्लैक पेपर, सरकार की विफलताओं का किया जिक्र

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के खिलाफ बृहस्पतिवार को ब्लैक पेपर जारी किया जिसमें महंगाई, बेरोजगारी, सामाजिक न्याय, किसान और कई अन्य विषयों पर सरकार की विफलताओं का उल्लेख किया गया है। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने यह ब्लैक पेपर जारी किया। पार्टी ने इसे 10 साल, अन्याय काल नाम दिया है। उन्होंने सरकार और प्रधानमंत्री मोदी पर उनकी विफलतायें छिपाने का आरोप लगाया और कहा कि ऐसे में इस सरकार के खिलाफ ब्लैक पेपर लाने का फैसला किया गया। कांग्रेस ने यह ब्लैक पेपर ऐसे समय जारी किया है जब सरकार संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के 10 साल के कार्यकाल पर एक श्वेत पत्र जारी करने की घोषणा की है। कांग्रेस अध्यक्ष ने संवाददाताओं से कहा, प्रधानमंत्री मोदी जब भी संसद में अपनी बात रखते हैं तो अपनी विफलताओं को छिपाते हैं। वहीं, जब हम सरकार की असफलताओं के बारे में बोलते हैं, तब उसे महत्व नहीं दिया जाता है। इसलिए हम ब्लैक पेपर निकालकर जनता को सरकार की विफलताओं के बारे में बताना चाहते हैं। उन्होंने दावा किया कि देश में सबसे बड़ा मुद्दा बेरोजगारी है, लेकिन

मोदी सरकार इसकी बात कभी नहीं करती। खरगे ने कहा कि सरकार हमेशा अपने 10 साल के कार्यकाल की तुलना संप्रग सरकार से करती है, लेकिन पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस की उपलब्धियों के बारे में कभी नहीं बताती। उन्होंने सरकार पर विपक्षी पार्टियों के शासन वाले राज्यों के साथ भेदभाव का आरोप लगाया। खरगे ने सरकार पर रोजगार के मोर्चे पर विफल रहने का आरोप लगाया और कहा, दो करोड़ नौकरियों देना, किसानों को एमएसपी सुनिश्चित करना मोदी की गारंटी थी। वह इन्हें पूरा नहीं कर सके और अब नई गारंटी लेकर आ गए हैं।

समारोह राष्ट्रपति ने राष्ट्रपति भवन में विविधता का अमृत महोत्सव का किया उद्घाटन

पूर्वोत्तर बहुमूल्य प्राकृतिक सुंदरता, प्रतिभाशाली लोगों से समृद्ध है : मुर्मू

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बृहस्पतिवार को कहा कि पूर्वोत्तर बहुमूल्य प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है और वहां के लोगों में अद्भुत प्रतिभा है जो उनके नृत्य, संगीत, वेशभूषा, हस्तशिल्प और व्यंजनों में दिखाई देती है। राष्ट्रपति भवन में विविधता का अमृत महोत्सव का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि पूर्वोत्तर में भारतीय संस्कृति के कई खूबसूरत और विविध रूप देखने को मिलते हैं। मुर्मू ने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है कि विविधता का अमृत महोत्सव का पहला संस्करण पूर्वोत्तर के उत्सव के साथ शुरू किया जा रहा है। राष्ट्रपति भवन द्वारा जारी

एक बयान में मुर्मू के हवाले से कहा गया, पूर्वोत्तर को बहुमूल्य प्राकृतिक सुंदरता का आशीर्वाद प्राप्त है। वहां के लोगों में अद्भुत प्रतिभा है जो नृत्य, संगीत, वेशभूषा, हस्तशिल्प और व्यंजनों में दिखाई देती है। राष्ट्रपति ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक विविधता ही उसकी ताकत है। मुर्मू ने कहा, यह हमारी सौम्य शक्ति है। इस विविधता का जश्न मनाने से हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और उसमें निहित एकता का प्रदर्शन और अनुभव दोनों होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि इस महोत्सव में बड़ी संख्या में लोग आएंगे और पूर्वोत्तर की सांस्कृतिक ऊर्जा का अनुभव करेंगे। भारत की समृद्ध विविधता का जश्न मनाने और प्रदर्शित करने के लिए राष्ट्रपति भवन में विविधता का अमृत महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव को सात विशिष्ट संस्करणों-पूर्वोत्तर, दक्षिण, उत्तर, पूर्व, पश्चिम, मध्य क्षेत्र और केंद्र शासित प्रदेश के रूप में बांटा गया है। इस महोत्सव का पहला संस्करण उत्तर-पूर्व पर केंद्रित है। यह महोत्सव असम, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, मेघालय और सिक्किम की सुंदरता, समृद्ध विरासत और जीवंत संस्कृतियों को प्रदर्शित करता है। यह महोत्सव आम जनता के लिए 8 से 11 फरवरी तक सुबह 10 बजे से रात 8 बजे तक खुला रहेगा।

संक्षिप्त समाचार

झाड़ी में मृत मिला तेंदुआ, शिकार के लिए लगाए फंदे में फंसने की आशंका

गूलरभोज, एजेंसी। तराई केंद्रीय वन प्रभाग के पीपलपड़ाव रेंज में एक झाड़ी में संदिग्ध परिस्थितियों में तेंदुए का शव मिला है। तेंदुए के गले में निशान मिलने से फंदे में फंसकर मौत होने का अंदेशा जताया जा रहा है। वन विभाग की टीम शव को कब्जे में लेकर पीपल पड़ाव रेंज कार्यालय ले गई। विभागीय अधिकारियों के अनुसार पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के बाद ही तेंदुए की मौत की वजह साफ हो सकेगी। बुधवार को हरिपुरा जलाशय के समीप जंगल से कुछ दूरी पर झाड़ी में ग्रामीणों ने तेंदुआ मृत मिला। सूचना पर पहुंची रेंज की टीम ने शव का मुआयना किया। तेंदुए के गले में घाव के निशान मिले हैं। रेंजर रूपनारायण गौतम ने बताया कि नर तेंदुए की उम्र दो से तीन साल के बीच है। प्रथम दृष्टया फंदे में फंस कर मौत की आशंका है। पोस्टमार्टम के बाद ही सही कारणों का पता चल पाएगा। चर्चा है कि क्षेत्र में लोग जंगली जानवरों के शिकार के लिए खेतों के किनारे फंदे लगाते हैं। माना जा रहा है कि किसी फंदे में फंसकर तेंदुए की मौत होने पर शव को फेंक दिया गया होगा।

पूर्व सीएम त्रिवेंद्र सिंह रावत ने पूछा जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी राज राजेश्वराश्रम की कुशलक्षेम

ऋषिकेश, एजेंसी। एम्स में बुधवार को पूर्व सीएम त्रिवेंद्र सिंह रावत और निवर्तमान मेयर अनीता ममगाईं ने शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी राज राजेश्वराश्रम से मुलाकात कर उनका हाल जाना। उन्होंने संस्थान की कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह से भी उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली। निदेशक ने बताया कि जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी राज राजेश्वराश्रम महाराज की स्थिति स्थिर बनी हुई है। बीते सोमवार की शाम उन्हें एम्स में भर्ती कराया गया था। उनका विशेषज्ञ चिकित्सकों की निगरानी में उपचार किया जा रहा है। अस्पताल के उप चिकित्सा अधीक्षक डॉ. भारत भूषण ने बताया कि जांच में शंकराचार्य स्वामी राज राजेश्वराश्रम महाराज निमोनिया से ग्रसित मिले हैं। उन्हें एंटीबायोटिक्स और ऑक्सीजन सपोर्ट पर रखा गया है। उनका कोविड टेस्ट नेगेटिव है। इंसुलिन इंजेक्शन से उनके शुगर को नियंत्रित किया जा रहा है। उन्हें चिकित्सकों की निगरानी में सीसीयू में रखा गया है।

भारत में कहीं स्थापित न हो दूसरा पाकिस्तान, पूरे देश में लागू हो यूसीसी : तोगड़िया

किच्छा, एजेंसी। अंतरराष्ट्रीय हिंदू परिषद के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. प्रवीण तोगड़िया ने समान नागरिक संहिता विधेयक सदन में पास कराने पर धामी सरकार की सराहना की। कहा कि पूरे देश में यह कानून लागू होना चाहिए ताकि देश में कहीं भी दूसरा पाकिस्तान स्थापित न हो। राम मंदिर निर्माण पर बोलते हुए डॉ. तोगड़िया ने कहा कि 496 वर्ष और 25 पीढ़ियों के संघर्ष के बाद आठ करोड़ हिंदुओं की कमाई के सवा रुपये से इसका निर्माण किया गया हैं। इसमें सैकड़ों वर्षों से चले आ रहे करोड़ों हिंदुओं का संघर्ष छिपा है। उन्होंने बताया कि मंदिर निर्माण के लिए उन्होंने पूरे देश में जनजागरण का काम किया था, जिसके बाद पूरा देश एक साथ खड़ा हुआ है। मंदिर बन गया है तो अब हिंदुओं के घरों में खुशियां पहुंचाने का समय है। इसके लिए फिर से जनजागरण अभियान चलाया जा रहा है। वहां परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सावित्री चंद, विवेक राय, जयवर्धन सिंह, शैलेंद्र कुमार, रामप्रीत तिवारी, श्रीनिवास पांडे, स्वतंत्र राय, मयंक चौहान, दिलीप सिंह जीना आदि थे।

अपूर्ण खनन गेट खोलने पर भड़के कर्मचारी

रामनगर, एजेंसी। अपूर्ण खनन गेटों को खोलने पर उत्तराखंड वन विकास निगम कर्मचारी संघ ने विरोध शुरू कर दिया। कर्मियों ने पीडी निस्तारण नहीं होने पर नाराजगी जताने के साथ आंदोलन की चेतावनी भी दी है। उत्तराखंड वन विकास निगम कर्मचारी संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीएस अधिकारी ने बताया कि जिला खनन समिति के स्पष्ट आदेशों के बाद भी वन निगम प्रशासन अपूर्ण गेटों को खनन निकासी के लिए खोल रहा है जो कि नियमविरूद्ध है।

भाजपा नेता को पुलिस ने किया गिरफ्तार, ईडी की कार्रवाई के बाद हुआ एक्शन

ऊधम सिंह नगर, एजेंसी। काशीपुर में ईडी की टीम ने बुधवार को भाजपा नेता अमित सिंह के घर पर छापा मारा। दिनभर जांच पड़ताल की गई, देर रात करीब दस बजे आईटीआई थाना पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। अमित सिंह को पूर्व कैबिनेट मंत्री हरक सिंह रावत का करीबी बताया जा रहा है।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम ने बुधवार को काशीपुर में भाजपा के जिलामंत्री अमित सिंह के घर पर छापा मारकर दिन भर जांच पड़ताल की। टीम को घर से लाखों की नगदी, कुछ जेवरात, कागजात, 32 बोर के सात कारतूस और एक खोखा मिले। कारतूस के दस्तावेज नहीं दिखा पाने पर देर रात करीब दस बजे आईटीआई थाना पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। अमित सिंह को पूर्व कैबिनेट मंत्री हरक सिंह रावत का करीबी बताया जा रहा है।

बुधवार सुबह करीब सात बजे ईडी की आठ सदस्यों की टीम बाजपुर रोड आलू फार्म स्थित भाजपा के जिला मंत्री अमित सिंह के घर पर पहुंची। टीम ने वहां जांच पड़ताल शुरू की और इस दौरान घर के बाहर पुलिस भी सुरक्षा में तैनात रही। इस दौरान पुलिस ने किसी को भी घर के अंदर और बाहर आने-जाने नहीं दिया। दिनभर टीम जांच पड़ताल में जुटी रही।

सूत्रों के अनुसार अमित सिंह के घर से लाखों की नगदी, कुछ जेवरात, दस्तावेज और अन्य सामान मिला है। हालांकि इस मामले में आधिकारिक रूप से कोई पुष्टि नहीं की गई। टीम को घर से 32 बोर के सात कारतूस मिले जिनके कोई विधिक दस्तावेज अमित सिंह नहीं दिखा पाए। इस पर ईडी ने आईटीआई थाना पुलिस को सूचना दी। रात करीब दस बजे प्रभारी निरीक्षक प्रवीण सिंह कोश्यारी अमित सिंह को लेकर थाने पहुंचे और कारतूस के मामले में केस दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया।

भाजपा की राजनीति में तेजी से चमके अमित सिंह इस समय भाजपा काशीपुर की जिला कार्यकारिणी में जिला मंत्री के पद पर आसीन हैं। वह पेशे से ठेकेदार बताए गए हैं। पार्टी के सूत्रों के अनुसार अमित सिंह पहले भाजपा सरकार में वन मंत्री रह चुके हरक सिंह रावत के करीबी रहे हैं। उन्होंने कोरोना काल के समय हरक सिंह के वन और श्रम विभाग के मंत्री रहते सुर्खियां बंटोरी थीं। वह श्रम कल्याण बोर्ड के सदस्य भी रहे। हरक सिंह रावत के कांग्रेस में चले जाने के बाद भी अमित सिंह ने भाजपा नहीं छोड़ी। उन्होंने अपनी जगह बनाई और जिला मंत्री का पद भी पा लिया।

अमित सिंह के बारे में लोगों का कहना है कि पिछले कुछ समय से ही अमित सिंह का रसूख बढ़ा है। उनके पिता एक फैक्टरी में काम करते थे तब उनका परिवार सामान्य परिवारों की तरह ही रहता था लेकिन एक दशक के अंदर अमित सिंह जब अलग-अलग गाड़ियों में नजर आने लगे और उन्होंने बाजपुर रोड पर बड़ा घर बनाया। सूत्रों के मुताबिक शाम करीब साढ़े सात बजे टीम अपने साथ कुछ कागजात भी ले गई। इस दौरान पुलिस कर्मी भी वहीं मौजूद रहे। ईडी की टीम के जाने के बाद पुलिस भी रवाना हो गई। ईडी की टीम के अलावा किसी को भी घर से अंदर-बाहर जाने की इजाजत नहीं थी। हालांकि दोपहर ड्राइवर से खाने के पैकेट मंगाए।

पीएम मोदी और सीएम योगी आदित्यनाथ पर अभद्र टिप्पणी करने वाले अज्ञात पर केस दर्ज

नैनीताल, एजेंसी। रामनगर के सांवल्दे स्थित घर में पीएम और यूपी के सीएम योगी पर अभद्र टिप्पणी करने वाले अज्ञात पर केस दर्ज किया गया है।

रामनगर के सांवल्दे स्थित घर में पीएम और यूपी के सीएम योगी पर अभद्र टिप्पणी के साथ ही धार्मिक उन्माद फैलाने के उद्देश्य से पर्चा चस्पा कर दिया गया। मामले का पता चलते ही बुधवार को ग्रामीणों ने हंगामा कर दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने किसी तरह लोगों को शांत कराया। कोतवाली पुलिस ने तहरीर के बाद अज्ञात पर धार्मिक सौहार्द बिगाड़ने के मामले में केस दर्ज कर लिया है।

सांवल्दे में सोनू आर्य के मकान के बाहर बुधवार सुबह एक पर्चा चिपका हुआ था। पर्चे में धार्मिक उन्माद फैलाने के उद्देश्य से अनर्गल बातें लिखी हुई थी। साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और यूपी के सीएम योगी के खिलाफ अभद्र टिप्पणी की गई थी। मामले की सूचना पर ग्रामीणों में आक्रोश फैल गया और वह कार्रवाई के लिए हंगामा करने लगे पुलिस मौके पर पहुंची और पर्चा चिपकाने वाले के खिलाफ कार्रवाई का आश्वासन देकर लोगों को शांत कराया। वहीं विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के जिला उपाध्यक्ष सूरज चौधरी के नेतृत्व में कार्यकर्ता कोतवाल अरुण कुमार सैनी से मिले। कार्यकर्ताओं ने पर्चा चिपकाने वाले के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। कोतवाल अरुण कुमार सैनी ने बताया कि पर्चा चिपकाने वाले की तलाश की जा रही है। क्षेत्र पंचायत सदस्य कैलाश चंद्र की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ धारा 295ए, 504 और 506 में मुकदमा दर्ज कर लिया।

प्रदेश में समान नागरिक संहिता विधेयक विधान सभा से पारित होने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को किया गया सम्मानित

प्रात: किरण, संवाददाता

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का गुरूवार को सर्वे चौक स्थित आई.आर.डी.टी. सभागार में प्रदेश में समान नागरिक संहिता विधेयक विधान सभा से पारित होने पर गर्मजोशी से स्वागत के साथ सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। स्वर्णिम देवभूमि परिषद द्वारा आयोजित नागरिक अभिनंदन कार्यक्रम में बडी संख्या में बुद्धिजीवियों, जनप्रतिनिधियों एवं अन्य गणमान्य लोगों द्वारा प्रतिभाग किया गया। प्रदेश में समान नागरिक संहिता लागू किये जाने के लिये मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के प्रयासों की सभी ने प्रशंसा की। मुख्यमंत्री ने राज्य विधान सभा में नागरिक संहिता विधेयक पास होने के पीछे उत्तराखण्ड की जनता की शक्ति बताते हुये कहा कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में यह कानून मील का पत्थर साबित होगा। मुख्यमंत्री ने इसके लिये प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, केन्द्र सरकार तथा प्रदेश की देवतुल्य जनता का भी आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे देश का नेतृत्व आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सक्षम हाथों में है, जिनके लिए देश सर्वप्रथम है, जो इस देश को ही अपना परिवार समझते हैं और अपने परिवारजनों का सुख-दुःख ही उनका सुख-दुःख है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने समान नागरिक संहिता पर देवभूमि की सवा करोड़ जनता से किये गए अपने वादे को निभाया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम जनता के हैं और जनता हमारी है, यह कानून जनता के लिये है, जनता की भलाई, समता और समानता के लिये बनाया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने 2022 के विधान सभा चुनाव से पहले प्रदेश की जनता से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के ह्लएक भारत और श्रेष्ठ भारतह्लह्ल मन्त्र को साकार करने के लिए उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता लाने का वादा किया था। प्रदेश की देवतुल्य जनता ने हमें इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना आशीर्वाद देकर पुनः सरकार बनाने का मौका दिया। सरकार गठन के तुरंत बाद, जनता जर्नादन के आदेश को सिर माथे पर रखते हुए हमने अपनी पहली कैबिनेट की बैठक में ही समान नागरिक संहिता बनाने के लिए एक विशेषज्ञ समिति के गठन का निर्णय लिया और 27 मई 2022 को उच्चतम न्यायालय की सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्रीमती रंजना प्रकाश देसाई जी के नेतृत्व में पांच सदस्यीय समिति गठित की। इस समिति के सदस्यों में सिक्किम उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री प्रमोद कोहली जी, समाजसेवी श्री मनु गौड़ जी, उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्य सचिव श्री शत्रुघ्न सिंह जी एवं दून विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो० सुरेखा डंगवाल जी को सम्मिलित किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि देश के सीमांत गांव माणा, जिसे हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश का प्रथम गांव घोषित किया है, वहां से प्रारंभ हुई जनसंवाद यात्रा के दौरान 43 जनसंवाद कार्यक्रम आयोजित किये जाने पर समिति को विभिन्न माध्यमों से लगभग 2.33 लाख सुझाव प्राप्त हुए। प्रदेश के लगभग 10 प्रतिशत परिवारों द्वारा किसी कानून के निर्माण के लिए अपने सुझाव देने का देश में यह पहला अतुलनीय उदाहरण है मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि प्राप्त सुझावों का अध्ययन कर समिति ने उनका रिकॉर्ड समय में विश्लेषण कर अपनी विस्तृत रिपोर्ट 02 फरवरी 2024 को सरकार को सौंपी। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिस प्रकार से इस देवभूमि से निकलने वाली मां गंगा अपने किनारे बसे सभी प्राणियों को बिना भेदभाव के अभिसिंचित करती है उसी प्रकार राज्य विधान सभा से पारित समान नागरिक संहिता के रूप में निकलने वाली समान अधिकारों की संहिता रूपी ये गंगा हमारे सभी नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों को सुनिश्चित करेगी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि सभी नागरिकों के लिए समान कानून की बात संविधान स्वयं करता है, क्योंकि हमारा संविधान एक पंथनिरपेक्ष संविधान है। यह एक आदर्श धारणा है, जो हमारे समाज की विषमताओं को दूर करके, हमारे सामाजिक ढांचे को और अधिक मजबूत बनाती है। उन्होंने कहा कि माँ गंगा-यमुना का यह प्रदेश, भगवान बद्री विशाल, बाबा केदार, आदि कैलाश, ऋषि-मुनियों-तपस्वियों, वीर बलिदानियों की इस पावन धरती ने एक आदर्श स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 44 में उल्लिखित होने के बावजूद अब तक इसे दबाये रखा गया। 1985 के शाह बानो केस के साथ इसी देवभूमि की बेटी शायरा बानो ने दशकों तक न्याय के लिये संघर्ष किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि समान नागरिक संहिता, विवाह, भरण-पोषण, गोद लेने, उत्तराधिकार, विवाह विच्छेद जैसे मामलों में भेदभाव न करते हुए सभी को बराबरी का अधिकार देगा और जो प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार भी है। समान नागरिक संहिता समाज के विभिन्न वर्गों, विशेष रूप से माताओं-बहनों और बेटियों के साथ होने वाले भेदभाव को समाप्त करने में सहायक होगा। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि महिलाओं के साथ होने वाले अत्यचारों को रोका जाए। हमारी माताओं-बहन-बेटियों के साथ होने वाले भेदभाव को समाप्त किया जाए। हमारी आधी आबादी को सच्चे अर्थों में बराबरी का दर्जा देकर हमारी मातृशक्ति को संपूर्ण न्याय दिया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश विकसित भारत का सपना देखने के साथ भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। उनके नेतृत्व में यह देश तीन तलाक और धारा-370 जैसी ऐतिहासिक गलतियों को सुधारने के पथ पर अग्रसर है। उनके नेतृत्व में सैंकड़ों वर्षों के बाद अयोध्या में रामलला अपने जन्मस्थान पर विराजमान हुए हैं, और मातृशक्ति को सशक्त करने के लिए विधायिका में 33 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि इस संहिता में पुरुष व महिलाओं को बराबरी का दर्जा देते हुए विवाह विच्छेद से संबंधित मामलों में विवाह विच्छेद लेने के समान कारण और समान अधिकार दिए गए हैं। समान नागरिक संहिता में महिला के दोबारा विवाह करने से संबंधित किसी भी प्रकार की रूढ़िवादी शर्तों को प्रतिबंधित किया गया है।

ऋषिकेश स्टेशन से अयोध्या के लिए आस्था स्पेशल रवाना, 1344 लोगों ने किया कूच

ऋषिकेश, एजेंसी। राम जन्मभूमि अयोध्या में राम मंदिर में रामलाल की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के बाद लगातार अयोध्या पहुंच रहे हैं। गुरुवार को ऋषिकेश से एक आस्था स्पेशल ट्रेन अयोध्या के लिए रवाना की गई। जिसमें देहरादून तथा पौड़ी क्षेत्र से 1344 राम भक्त अयोध्या के लिए रवाना हुए।

गुरुवार को 11:40 पर योग नगरी ऋषिकेश स्टेशन से अयोध्या जंक्शन के लिए आस्था स्पेशल रवाना की गई। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र प्रसाद भट्ट व कैबिनेट मंत्री धन सिंह रावत ने आस्था स्पेशल को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जय श्री राम के नारों के साथ श्रद्धालुओं ने अयोध्या के लिए कूच किया।

इस दौरान पूरा स्टेशन भगवान श्री राम के नारों से गूंज उठा। इस मौके पर विधायक डोईवाला बृजभूषण गैरोला, विधायक पौड़ी राजकुमार कोली, निवर्तमान महापौर अनीता ममगाई, जिला अध्यक्ष भाजपा रविंद्र राणा, ट्रेन संयोजक सीताराम भट्ट, जिला पंचायत सदस्य संजीव चौहान आदि मौजूद रहे।

24 घंटे जनता के बीच समय बिताएंगे सीएम धामी, लोहाघाट विधानसभा क्षेत्र के कमलेड़ी गांव में करेंगे प्रवास

देहरादून, एजेंसी। भाजपा ने नौ से 11 फरवरी तक चलने वाले गांव चलो अभियान के लिए मुख्यमंत्री समेत सभी मंत्रियों, विधायकों और पार्टी के सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों की जिम्मेदारी तय कर दी है। अभियान के दौरान सभी नेता एक दिन यानी 24 घंटे का समय किसी एक गांव के बूथ पर बिताएंगे। इसी क्रम में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी लोहाघाट विधानसभा क्षेत्र के कमलेड़ी गांव में प्रवास करेंगे। भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने उक्त जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट बदरीनाथ विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत पांडुकेश्वर में प्रवास करेंगे। इसके अतिरिक्त पार्टी के सभी पदाधिकारी, वरिष्ठ कार्यकर्ता राज्य के 11729 बूथों पर 24 घंटे प्रवास करेंगे। इस दौरान वे स्थानीय कार्यकर्ताओं व जनता से संवाद कर केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी देंगे। साथ ही विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों से भी बातचीत करेंगे।

देहरादून रजिस्ट्री फर्जीवाड़ा मामले में फंसे सहायक शासकीय अधिवक्ता, एसआईटी की जांच में लगे गंभीर आरोप

देहरादून, एजेंसी। रजिस्ट्री फर्जीवाड़ा प्रकरण में गतिमान एसआइटी जांच में सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता (राजस्व) सुरेश चंद्र शर्मा पर भी आरोप लगे हैं। आरोपों के आधार पर न्याय विभाग में सुनवाई की जाएगी। तब तक उनका कार्य जिला शासकीय अधिवक्ता को सौंपा गया है।

पिछले साल जुलाई में दून में रजिस्ट्री फर्जीवाड़ा उजागर होने के बाद से एसआइटी जांच के दौरान अब तक कई भू-माफिया के साथ ही इस प्रकरण में दो अधिवक्ता को भी गिरफ्तार किया जा चुका है। जांच गतिमान है और और कई नाम भी सामने आ रहे हैं।

सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता राजस्व सुरेश चंद्र शर्मा पर भी गंभीर आरोप लगे हैं। इसे लेकर एसआइटी प्रभारी एसपी ट्रैफिक सर्वेश पंवार ने न्याय विभाग को पत्र लिखा है। जिस पर संयुक्त सचिव न्याय एवं संयुक्त विधि परामर्शी अशोक कुमार ने कहा कि सुरेश चंद्र शर्मा पर गंभीर आरोप लगे हैं। जिस पर सुनवाई की जाएगी। जब तक सुनवाई चलेगी, तब तक वे मुकदमों की पैरवी नहीं कर सकेंगे।

बर्फ से ढका हेमकुंड साहिब...गोविंद घाट से सात किमी की दूरी तक तीन फीट बर्फ जमी

चमोली, एजेंसी। हेमकुंड साहिब बर्फ से ढका हुआ है। वहीं आज हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर जिले के कुछ इलाकों में सुबह-शाम के समय हल्का कोहरा छाने की संभावना है।

गुरुद्वारा श्री हेमकुंड साहिब गोविंद घाट से सात किमी की दूरी तक दो से तीन फीट बर्फ से ढका हुआ है। गुरुद्वारा श्री हेमकुंड साहिब प्रबंधन ट्रस्ट की ओर से बताया गया कि हेमकुंड साहिब इस वक्त पूरी तरह बर्फ से ढका है।

गुरुद्वारा श्री हेमकुंड साहिब मैनेजमेंट ट्रस्ट के सेवादार घांघरिया तक निरीक्षण कर के आए। गोविंद घाट से सात किलोमिटर दूरी तक दो से तीन फीट बर्फ है बिछी है। इस वर्ष अभी तक की यह सबसे अधिक बर्फ़बारी है, जिससे बहुत राहत मिली है।

हेमकुंड साहिब मैनेजमेंट की ओर से कहा गया कि समय पर बर्फ बारी होना घटते ग्लेशियर के लिए अति आवश्यक होता है। उम्मीद करते हैं कि यदि इस वर्ष और बर्फ भी अभी पड़ जाती है तो यात्रा की तैयारी के लिए रास्ता खोलने के समय भारतीय सेना को खुला मौसम मिलेगा और यात्रा भी समय से शुरू की जा सकेगी। अभी यात्रा खोलने की तिथि सरकार एवं ट्रस्ट ने निश्चित नहीं की है। वहीं उत्तराखंड में आज से अगले चार दिन तक मौसम साफ रहेगा। हालांकि, कुछ मैदानी इलाकों में सुबह-शाम हल्का कोहरा छाने और पर्वतीय इलाकों में पाला पड़ने के आसार हैं। मौसम विज्ञान केंद्र की ओर से जारी पूर्वानुमान के अनुसार आठ से 11 फरवरी तक पूरे प्रदेश में मौसम शुष्क रहेगा।

पहले नीतीश खिसके, फिर ममता ने दिखाए तेवर. अब केजरीवाल नाराज! आप ने इन 3 लोकसभा सीटों पर उतारे उम्मीदवार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारियों के बीच आम आदमी पार्टी ने बृहस्पतिवार को असम के लिए तीन उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। साथ ही उम्मीद जताई कि आईएनडीआईए उन्हें इन निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ने की अनुमति देगा। इन तीन उम्मीदवारों की घोषणा पार्टी मुख्यालय में प्रेस वार्ता के दौरान वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सदस्य संदीप पाठक ने तीन उम्मीदवारों के नामों की घोषणा की है, इनमें डिब्रूगढ़ से मनोज धनोहर, गुवाहाटी से भावेन चौधरी और सोनितपुर से ऋषि राज का नाम शामिल है। अभी तक नतीजा नहीं निकला संदीप पाठक ने इस बात पर अफसोस जताया कि चुनाव के लिए कम समय बचा है और इस बात पर जोर भी दिया कि समय समाप्त होने के साथ चुनाव लड़ना मुश्किल हो जाएगा। उन्होंने कहा कि सभी चीजों में तेजी लाई जानी चाहिए। महीनों से बातचीत चल रही है, लेकिन अभी तक कोई नतीजा नहीं निकला है। हम मोदी सरकार के खिलाफ लड़ाई में आईएनडीआईए के साथ हैं। गठबंधन पर सभी फैसले तुरंत लिए जाने चाहिए।

आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद ने कहा कि हम एक परिपक्व और समझदार गठबंधन के भागीदार हैं और हमें पूरा विश्वास है कि आईएनडीआईए इसे स्वीकार करेगा। चुनाव जीतना सबसे महत्वपूर्ण है। हम इन तीन सीटों के लिए तुरंत तैयारी शुरू कर रहे हैं। बीजेपी के साथ गए नीतीश कुमार खास बात है कि लोकसभा चुनाव से पहले नीतीश कुमार ने आईएनडीआईए का साथ छोड़कर बिहार में बीजेपी के साथ सरकार बना ली है। वहीं, बंगाल में ममता बनर्जी ने भी तेवर दिखाते हुए अकेले लोकसभा चुनाव लड़ने की घोषणा की थी। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की पार्टी टीएमसी भी इंडी गठबंधन का हिस्सा है, लेकिन उसने भी लोकसभा चुनाव में एकला चलो रे के संकेत दे दिए हैं।

कब तक बातचीत करते रहेंगे- संदीप पाठक सीट बंटवारे को लेकर जहां कांग्रेस और टीएमसी में तनातनी जारी थी कि ममता बनर्जी ने 42 सीटों पर अकेले लोकसभा चुनाव लड़ने का एलान कर दिया। अब असम में आम आदमी पार्टी ने लोकसभा चुनाव के लिए तीन उम्मीदवारों का ऐलान कर दिया है। साथ ही पार्टी के राज्यसभा सांसद ने कहा कि कब तक बातचीत करते रहें हैं। बातचीत ही करते रहेंगे तो काम कब करेंगे।

गोकुलपुरी मेट्रो स्टेशन का एक हिस्सा ढहने से व्यक्ति की मौत

नई दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली में पिंक लाइन पर गोकुलपुरी मेट्रो स्टेशन का एक हिस्सा बृहस्पतिवार को ढह गया जिससे 53 वर्षीय एक व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) ने मृतक के परिजनों के लिए 25 लाख रुपये की अनुग्रह राशि की घोषणा की है। इस घटना में स्टेशन के प्लेटफॉर्म की दीवार (पूर्वी तरफ) का एक हिस्सा सड़क पर गिर गया और इस दौरान व्यक्ति अपने स्कूटर पर सवार था। पुलिस ने मृतक की पहचान पास के करावल नगर इलाके की शहीद भगत सिंह कॉलोनी के रहने वाले विनोद कुमार के रूप में की है। डीएमआरसी ने आधिकारिक बयान में बताया कि गंभीर रूप से घायलों के लिए पांच लाख रुपये और मामूली रूप से घायलों को एक लाख रुपये की सहायता राशि दी जाएगी। इस दुर्घटना के बाद दो अधिकारियों को भी निलंबित कर दिया गया है।

गोकुलपुरी मेट्रो स्टेशन की बाउंड्री वॉल गिरने से एक की मौत, 4 घायल मौजपुर से शिव विहार के बीच मेट्रो सेवा बाधित

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

गोकुलपुरी मेट्रो स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर बनी चारदीवारी का एक हिस्सा गिरने से बृहस्पतिवार सुबह पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। इसके साथ ही पिंक लाइन की सेवाएं भी प्रभावित हुई हैं। इस घटना में एक शख्स की मौत हो गई और चार लोग घायल हो गए हैं। मृतक की पहचान विनोद (53) निवासी करावल नगर के रूप में हुई है। वहीं घायलों की पहचान अजित कुमार, मोनू कुमार, संदीप और मोहम्मद ताजिर के रूप में हुई है।

यह सभी क्रमशः बलराम नगर लोनी गाजियाबाद, गोकुलपुरी, गोकुलपुरी और लक्ष्मी गार्डन इंदिरापुरी लोनी गाजियाबाद के रहने वाले हैं।

गोकुलपुरी मेट्रो स्टेशन बंद

घटना के बाद गोकुलपुरी मेट्रो स्टेशन भी बंद कर दिया गया है। इसका मतलब ये है कि गोकुलपुरी मेट्रो स्टेशन से ट्रेनें गुजर तो रहीं हैं लेकिन इस स्टेशन से एंट्री और एक्जिट बंद है।

जानकारी के अनुसार आज सुबह 11 बजे मेट्रो स्टेशन के प्लेटफॉर्म को सुरक्षित रखने के लिए जो बाउंड्री वॉल बनी थी उसी का एक बड़ा हिस्सा (पूर्वी दिशा में स्थित) जाकर मेन रोड पर गिर गया। रास्ते में गुजर रहे तीन-चार लोग आए जद में इसकी हादसे की जद में नीचे से गुजर रहे तीन से चार लोग आ गए, जिससे वह घायल हो गए। एक शख्स दीवार के मलबे के नीचे फंस गया जिससे उससे बुरी तरह से चोटें आईं हैं। हालांकि अन्य लोगों को मामूली चोटें लगी हैं। घटना की सूचना मिलते ही पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे और वहां मौजूद कुछ लोगों की सहायता से मलबे में फंसे शख्स को बाहर निकाला। जब घटना हुई तो वह स्कूटी से गुजर रहा था। उसने आनन-फानन जीटीबी अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस घायल शख्स की पहचान की कोशिश कर रही है पुलिस घायल शख्स की पहचान की भी कोशिश कर रही है। घटना को लेकर अधिक जानकारी का इंतजार है। रास्ते से जेसीबी और क्रेन की मदद से मलबा हटा लिया गया है। मौके पर स्थानीय पुलिस और मेट्रो स्टाफ मौजूद हैं। इस मामले में उचित धाराओं में केस दर्ज करने की बात पुलिस कर रही है और जांच भी जारी है।

दिल्ली-नोएडा बॉर्डर पर किसानों का प्रदर्शन, इन रास्तों पर जाने से बचें; ट्रैफिक पुलिस की आई एडवाइजरी

- साथ ही नोएडा में दलित प्रेरणा स्थल पर पुलिस ने बैरिकेड लगाकर किसानों को दिल्ली जाने से रोका है।

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

किसानों के प्रदर्शन के चलते नोएडा और दिल्ली में कई मार्गों पर यातायात प्रभावित है। सड़कों पर लंबे जाम के चलते लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। किसानों के प्रदर्शन के बीच गौतमबुद्ध नगर पुलिस की ओर से ट्रैफिक एडवाइजरी जारी की गई है। नोएडाग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे पर न जाने की सलाह एडवाइजरी में कहा गया कि नोएडाग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे के पास स्थित सभी स्कूली बसें अपने गंतव्य को (चिल्ला बॉर्डर, महामाया फ्लाईओवर मार्ग) जाने के लिए नोएडाग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे का प्रयोग न करें। इसके अलावा दिल्ली जाने हेतु हाजीपुर अंडरपास, सेक्टर93 अंडरपास का प्रयोग कर नोएडा शहर के आंतरिक मार्ग के इस्तेमाल की सलाह दी गई है।

चिल्ला बॉर्डर और उठऊके रास्ते दिल्ली जाने पर रोक बता दें कि किसानों के धरने के कारण एक्सप्रेस-वे से डीएनडी और चिल्ला बार्डर के रास्ते दिल्ली जाने वाले सभी मार्ग बंद है। साथ ही नोएडा में दलित प्रेरणा स्थल पर पुलिस ने बैरिकेड लगाकर किसानों को दिल्ली जाने से रोका है। नोएडा के सेक्टर 24 एनटीपीसी पर धरने पर बैठे किसानों को पुलिस ने हिरासत में लिया है। नोएडा में धरने पर बैठे किसान दिल्ली जाने के लिए निकले थे। किसानों के प्रदर्शन को देखते हुए अर्धसैनिक बलों की तैनाती के अलावा दिल्ली-हरियाणा और दिल्ली-उत्तर प्रदेश सीमा पर बैरिकेड लगाए गए हैं। इसके साथ ही नोएडा और ग्रेटर नोएडा में किसानों के विरोध प्रदर्शन से पहले, गौतम बुद्ध नगर पुलिस ने बुधवार से सीआरपीसी धारा 144 लागू कर दी है।

मंगोलपुरी के कतरन मार्केट में लगी भीषण आग, फायर की 4 गाड़ियों ने आग पर पाया काबू

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

बाहरी दिल्ली के मंगोलपुरी इलाके में गुरुवार तड़के उस वक्त हड़कंप मच गया, जब मंगोलपुरी कतरन मार्केट में अचानक आग लग गई. इसके बाद सूचना मिलने पर पहुंची दमकल की गाड़ियों की मदद से दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पाने के लिए राहत एवं बचाव कार्य शुरू कर दिया. मिली जानकारी के अनुसार, आग लगने की सूचना गुरुवार तड़के करीब 3 बजकर 24 मिनट पर दी गई थी. दमकल विभाग को मंगोलपुरी कतरन मार्केट में आग लगने की सूचना जैसे ही मिली, चार अग्निशमन वाहनों को तुरंत ही मौके पर भेजा गया. आग खुली जगह पर लगी थी और पास ही मे ही डीटीसी बस टर्मिनल सहित पेट्रोल पंप भी है. आग ज्यादा न फैले, इस प्रयास के चलते आग पर काबू पाने में दमकलकर्मियों को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी. करीब दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया. गनीमत रही कि जिस वक्त ये हादसा हुआ, उस वक्त वहां कोई मौजूद नहीं था. इसलिए किसी के हताहत होने की सूचना नहीं मिली है. फिलहाल आग पर पूरी तरह से काबू पा लिया गया है. आग किन कारणों से लगी, अभी इसका पता नहीं चल सका है इसलिए घटनास्थल पर जांच शुरू कर दी गई है. जांच के बाद ही आग लगने का कारण सामने आ पाएगा. इससे पहले पुलिस के मालखाने में भी आग लगने की घटना सामने आई थी.

बवाना औद्योगिक क्षेत्र की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी लगाए

नई दिल्ली। बवाना औद्योगिक क्षेत्र में चोरी के मामलों पर अंकुश लगाने और आपराधिक घटनाओं को कम करने के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। बवाना इन्फ्रा प्राइवेट लिमिटेड ने औद्योगिक क्षेत्र के सभी 32 प्रवेश और निकास बिंदुओं पर नाइट विजन कैमरे लगवाए हैं, जो क्षेत्र में आने और जाने वाली सभी गतिविधियों को रिकॉर्ड करेंगे। यह जानकारी बवाना इन्फ्रा के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर पुलकित अग्रवाल ने दी है। उन्होंने बताया कि दिल्ली पुलिस के सहयोग से बवाना पुलिस स्टेशन सेक्टर एक में एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। यहां से एलईडी स्क्रीन के जरिए सेक्टर एक से सेक्टर चार तक की सभी गतिविधियों पर नजर रखी जाएगी। सेक्टर पांच के लिए कंट्रोल रूम सेक्टर 5 पुलिस स्टेशन में बनाया गया है। उन्होंने बताया कि औद्योगिक क्षेत्र में सीसीटीवी कैमरे लगाने का सुझाव एसोसिएशन और कई फैक्टरी मालिकों की तरफ से लंबे समय से लंबित था। औद्योगिक क्षेत्र की सुरक्षा और फैक्टरी इकाइयों के व्यापक हित को देखते हुए इस पर अमल किया गया। पुलकित अग्रवाल ने कहा कि बवाना इन्फ्रा अपने औद्योगिक क्षेत्र को स्वच्छ, हरित, प्रदूषण मुक्त और सुरक्षित बनाने के लिए प्रतिबद्ध है और क्षेत्र को बेहतर बनाने में के लिए व इंडस्ट्रियल एरिया के हित में कोई भी कदम उठाने से पीछे नहीं हटेंगे।

दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों का विकास बजट घटाकर महापौर फंड बढ़ाना गरीबों के साथ विश्वाघात : कांग्रेस

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली नगर निगम में सदन के पूर्व नेता व कांग्रेस के निगम प्रभारी जितेन्द्र कुमार कोचर ने कहा है कि आम आदमी पार्टी की मेयर शैली ओबेरॉय का नगर निगम में लोकतांत्रिक अधिकारों का दुरुपयोग करके अपने मनमुताबिक समितियों के फंड में कटौती करना और मेयर फंड को 1500 करोड़ रुपये करना गलत है. निगम में जनता से मिले जनाधार का अपमान करके स्थायी समिति और वार्ड समितियों का गठन करके कार्यान्वित किए जाने वाले कार्यों को मेयर के विवेकाधिकार में लाना दिल्ली के लिए चिंताजनक है. उन्होंने कहा कि दिल्ली की अनाधिकृत कालोनियों और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास का बजट घटाकर महापौर द्वारा अपना विवेकाधिकार फंड बढ़ाना, गरीबों के साथ विश्वाघात करने जैसा है. चुनी हुई सरकार में लोकतांत्रिक और संवैधानिक मूल्यों को नजरअंदाज करके अपने मतानुसार चलाना, शहर और उसके निवासियों के विकास के लिए नकारात्मक साबित होगा. दिल्ली नगर निगम का अनाधिकृत कालोनियों, एजुकेशन, इंजीनियरिंग, हेल्थ, डेम्स कमेटियों, लैंड स्केपिंग के लिए आंवटित बजट ऊंट के मुंह में जीरा समान है. इतना ही नहीं, दिल्ली नगर निगम ग्रामीण क्षेत्रों की पूरी तरह अनदेखी कर रहा है और वहां विकास के लिए निगम की कोई योजना नहीं है. उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी को दिल्ली नगर निगम की सत्ता में आए एक साल से अधिक समय हो चुका है, लेकिन वे कर्मचारियों को प्रतिमाह वेतन देने की समस्या को सुलझाने में पूरी तरह विफल रहे हैं. देशभर के निगम की सत्ता के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ कि सत्ता दल स्थायी समिति और वार्ड समितियों का गठन न कर पाया हो. इतने लंबे समय तक स्थायी समिति और वार्ड समिति का गठन न करने से जनहित के कार्य बाधित हो रहे हैं. वहीं, कांग्रेस प्रवक्ता अनुज आत्रेय ने कहा कि, एमसीडी ने दिल्ली के ग्रामीण इलाकों की पूरी तरह से उपेक्षा की है और बुनियादी विकास कार्य भी नहीं किए हैं. साथ ही गरीब ग्रामीणों पर बोझ डाल रही है. साथ ही दिल्ली के विभिन्न इलाकों में सफाई व्यवस्था बदहाल है. आप शासित दिल्ली नगर निगम हो या भाजपा, दोनों ही गरीबों की समस्या का समाधान करने की जहमत नहीं उठाई है.

मंगोलपुरी के कतरन मार्केट में लगी भीषण आग, फायर की 4 गाड़ियों ने आग पर पाया काबू

नई दिल्ली। बाहरी दिल्ली के मंगोलपुरी इलाके में गुरुवार तड़के उस वक्त हड़कंप मच गया, जब मंगोलपुरी कतरन मार्केट में अचानक आग लग गई. इसके बाद सूचना मिलने पर पहुंची दमकल की गाड़ियों की मदद से दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पाने के लिए राहत एवं बचाव कार्य शुरू कर दिया. मिली जानकारी के अनुसार, आग लगने की सूचना गुरुवार तड़के करीब 3 बजकर 24 मिनट पर दी गई थी.

दमकल विभाग को मंगोलपुरी कतरन मार्केट में आग लगने की सूचना जैसे ही मिली, चार अग्निशमन वाहनों को तुरंत ही मौके पर भेजा गया. आग खुली जगह पर लगी थी और पास ही मे ही डीटीसी बस टर्मिनल सहित पेट्रोल पंप भी है. आग ज्यादा न फैले, इस प्रयास के चलते आग पर काबू पाने में दमकलकर्मियों को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी. करीब दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया.

गनीमत रही कि जिस वक्त ये हादसा हुआ, उस वक्त वहां कोई मौजूद नहीं था. इसलिए किसी के हताहत होने की सूचना नहीं मिली है. फिलहाल आग पर पूरी तरह से काबू पा लिया गया है. आग किन कारणों से लगी, अभी इसका पता नहीं चल सका है इसलिए घटनास्थल पर जांच शुरू कर दी गई है. जांच के बाद ही आग लगने का कारण सामने आ पाएगा. इससे पहले पुलिस के मालखाने में भी आग लगने की घटना सामने आई थी.

गोकुलपुरी मेट्रो हादसा: मृतक के परिजनों को 25 लाख रुपये का मुआवजा देगी डीएमआरसी

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के गोकुलपुरी इलाके में स्थित मेट्रो स्टेशन की दीवार गिरने से एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि 5 लोग बुरी तरह से जख्मी हैं. सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है. हादसे के बाद डीएमआरसी ने मृतक के परिजनों को 25 लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की. साथ ही घटना में मामूली चोट लगने वाले लोगों को एक लाख रुपये और गंभीर रूप से घायल लोगों को 5 लाख रुपये देने का एलान किया.

डीएमआरसी के प्रधान कार्यकारी निदेशक अनुज दयाल ने बताया कि 8 जनवरी की सुबह 11:04 बजे मेट्रो की पिंक लाइन पर स्थित गोकुलपुरी मेट्रो स्टेशन अप प्लेटफॉर्म की दीवार गिरने से 1 व्यक्ति की मौत हो गई. जबकि हादसे में घायल अन्य 5 लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है. डीएमआरसी के अधिकारी अस्पताल में हैं और घायलों को हरसंभव सहायता सुनिश्चित कर रहे हैं.

अनुज दयाल ने बताया कि यातायात संचालन सुनिश्चित करने के लिए घटना के एक घंटे के भीतर सड़क से मलबा हटा दिया गया. डीएमआरसी के दो अधिकारियों, एक प्रबंधक और सिविल विभाग के एक कनिष्ठ अभियंता को जांच लंबित रहने तक तत्काल निलंबित कर दिया गया है. सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों स्थिति का प्रत्यक्ष आकलन करने के लिए साइट पर मौजूद रहे. घटना के संबंध में सभी विवरण मेट्रो रेल सुरक्षा आयुक्त (सीएमआरएस) के साथ साझा किए गए हैं. यात्रियों की सुरक्षा के एहतियात के तौर पर, मौजपुर से शिव विहार तक के छोटे हिस्से पर ट्रेन सेवाओं को गोकुलपुरी स्टेशन पर अप प्लेटफॉर्म की ओर गिरे हुए हिस्से की देखभाल के लिए सिंगल लाइन पर चलाया जा रहा है. हालांकि, पिंक लाइन के बाकी हिस्सों पर ट्रेन सेवाएं सामान्य रूप से चल रही है. भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए अनुज दयाल में कहा कि डीएमआरसी इस घटना के लिए जिम्मेदार परिस्थितियों की जांच करेगा.

कोल ब्लॉक आवंटन मामले में पूर्व कोयला सचिव समेत दो के खिलाफ आरोप तय करने का आदेश

नई दिल्ली। कोल ब्लॉक आवंटन मामले में अदालत ने कान्स्टिस्टील लिमिटेड, पूर्व कोयला सचिव एचसी गुप्ता और पूर्व संयुक्त सचिव केएस क्रोफा के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत आरोप तय करने का आदेश दिया है। राउज एवेन्यू कोर्ट ने कहा कि झारखंड राज्य में स्थित कोल ब्लाक हुटार और हुरिलोंग के आवंटन से संबंधित कोयला ब्लाक आवंटन मामले में पांच मार्च को आरोपितों के खिलाफ आरोप तय किए जाएंगे। विशेष न्यायाधीश संजय बंसल ने कहा कि कंपनी के खिलाफ गंभीर अपराध का आरोप लगाया गया है। इसके अलावा, एचसी गुप्ता और केएस क्रोफा के खिलाफ पीसी एक्ट के तहत ठोस अपराध का आरोप बनता है। अदालत ने कहा कि साजिशें गुप्त रूप से रची जाती हैं। घटनाओं का कालक्रम स्पष्ट रूप से दशार्ता है कि आरोपितों के कृत्यों में सह-संबंध और सुसंगतता थी और इस प्रकार एक साजिश की उपस्थिति का संकेत मिलता है। निजी व्यक्तियों को अनुचित लाभ पहुंचाया अदालत ने कहा कि भारत सरकार के कोयला मंत्रालय से धोखाधड़ी कर कोल ब्लॉक आवंटन के लिए पांच अगस्त 2008 का प्रस्ताव पत्र प्राप्त कर लिया गया।

दिल्ली भाजपा ने एमसीडी बजट पास करने के तरीके पर उठाए सवाल, एलजी से करेगी शिकायत

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी शासित दिल्ली नगर निगम का पहला बजट हंगामे के बीच गुरुवार को पास कर दिया गया. मेयर डॉ. शैली ओबेरॉय ने बजट को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि पहली बार निगम में ऐसा बजट पेश किया गया है, जिसका फायदा दिल्ली के लोगों के साथ निगम के कर्मचारियों को होगा. वहीं, निगम में नेता विपक्ष राजा इकबाल सिंह ने इस बजट को फेल बताया. उन्होंने कहा कि बजट में दिल्ली की जनता और कर्मचारियों के लिए कुछ नहीं है. इसके अलावा राजा इकबाल सिंह ने बजट पास करने के तरीके पर भी सवाल उठाया है. उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी अलोकतांत्रिक तरीके से सरकार चला रही है. एमसीडी एक्ट का उलंघन किया जा रहा है. नेता विपक्ष इसकी शिकायत दिल्ली के उपराजपाल वीके सक्सेना से करेंगे. जानकारी के अनुसार, बीजेपी का प्रतिनिधिमंडल आज शाम तकरीबन 5 बजे उपराजपाल से मुलाकात करेंगे. राजा इकबाल सिंह ने कहा कि उपराजपाल के समक्ष इस बात को रखा जाएगा की किस तरीके से स्थायी समिति और दूसरे हेड के बजट को मेयर फंड में ऐड किया गया है. हालांकि, विपक्ष के आरोप को मेयर शैली ओबराय ने बेबुनियाद बताया है, उनका कहना है कि सभी नियमों और कोरम को पूरा कर बजट पास किया गया है.

मेयर ने बजट को बताया ऐतिहासिकः मेयर शैली ओबराय ने बताया कि 16 हजार करोड़ का बजट पास किया गया है. जिसमें सड़कों के सुधार और मेंटेनेंस के लिए 1000 करोड़ का बजट है. गार्बेज मैनेजमेंट के लिए 400 करोड़ का फैट रखा गया है. मेयर हेड के लिए 500 करोड़ का बजट रखा गया है. गौशाला की व्यवस्था के लिए 15 करोड़ का बजट है. इसके अलावा ऐप 311, डोर 2 डोर सर्विस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मैकेनिकल स्वीपिंग, स्ट्रीट वेंडिंग सर्वे, पार्किंग, स्कूल व अस्पताल के लिए बजट की व्यवस्था की गई है.

हंगामे के बीच दिल्ली नगर निगम का बजट पास

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी शासित दिल्ली नगर निगम का पहला बजट पास हो गया है. निगम के सदन की बैठक में भारी हंगामे के बीच गुरुवार को वर्ष 2023-24 के संशोधित बजट अनुमान व वर्ष 2024-25 के बजट अनुमान को पास कर दिया गया. निगम के नेता सदन मुकेश गोयल ने पेश बजट में कमिश्नर के ज्यादातर प्रस्तावों पर मोहर लगाई. मेयर डॉ. शैली ओबेरॉय ने बजट को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि निगम में पहली बार ऐसा बजट पेश किया है जिसका फायदा दिल्ली के लोगों के साथ नगर निगम के कर्मचारियों को भी होगा. शैली ओबराय ने कहा कि 16 हजार करोड़ का बजट पास किया गया है. निगम के कमिश्नर ने जो इनकम और खर्च बताया था उसके अनुसार बजट पास किया गया है, उसमें कोई भी बदलाव नहीं किया गया है. मेयर ने कहा कि सड़कों के सुधार और मेंटेनेंस के लिए 1000 करोड़ का बजट रखा गया है. गार्बेज मैनेजमेंट के लिए 400 करोड़ रुपये का फैट रखा गया है. मेयर हेड के लिए 500 करोड़ का बजट रखा गया है. गौशाला की व्यवस्था के लिए 15 करोड़ का बजट रखा गया है. इसके अलावा ऐप 311, डोर 2 डोर सर्विस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मैकेनिकल स्वीपिंग, स्ट्रीट वेंडिंग सर्वे, पार्किंग, स्कूल व अस्पताल के लिए बजट की व्यवस्था की गई है. मेयर ने कहा कि ऐसा बजट रखा गया है जो पिछले 15 साल में भारतीय जनता पार्टी नहीं कर पाई है. बता दें कि निगम का बजट पेश करने से पहले दिल्ली नगर निगम मुख्यालय के सिविक सेंटर में मेयर कार्यालय के पास बने मंदिर में मेयर शैली ओबेरॉय और नेता सदन मुकेश गोयल ने पूजा की.

अदालती सूचना

न्यायालय श्रीमान सिविल जज (सी.डि.) महोदय, गौतमबुद्धनगर।
उत्तराधिकार वाद सं.–459 सन 2023

श्रीमति तनूजा गुप्ता पत्नी स्व. महेश गुप्ता उम्र लगभग 57 वर्ष, निवासी फ्लैट संख्या एन–602 टॉवर–11 एन.आरआई.सिटी जी.एच–01 चौक सेक्टर–ओमेगा–2, ग्रेटर नोएडा जिला गौतमबुद्धनगर।

......प्रार्थी / याची

बनाम

3. मोहित गुप्ता पुत्र स्व. महेश गुप्ता आयु 32 वर्ष निवासी फ्लैट संख्या–एन–602, टॉवर–11, एन.आर आई. सिटी, जी.एच.–01, परि चौक, सेक्टर–ओमेगा–2 ग्रेटर नोएडा जिला गौतमबुद्धनगर।
4. पल्लवी गुप्ता पुत्र स्व. महेश गुप्ता, आयु 27 वर्ष निवासी फ्लैट संख्या–एन–602, टॉवर–11, एन.आर. आई.सिटी, जी.एच.–01, परि चौक, सेक्टर–ओमेगा–2 ग्रेटर नोएडा जिला गौतमबुद्धनगर।

......विपक्षी

हरगाह याची के उक्त बाद अन्तर्गत धारा 372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम दायर किया गया है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख **16.02.2024** समय 10.00 बजे दिन के असालतन या मार्फत वकील के जो मुकदमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि जो जबाव ऐसे सवालात दे सके हाजिर हो और जबाव दस्तावेज पेश करें जिन और आपको लाजिम है कि उसी रोज अपने जुमला दस्तावेज पेश करें जिन पर आप बताईद अपनी जबाबदेही के इस्तमाल करना चाहते हो। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आप मसमूअ और फैसला होगा। वक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 02.02.2024 ई. जारी किया गया।

आदेशानुसार / मुंसरिम
सिविल जज (सी.डि.),गौतमबुद्धनगर

अदालती सूचना

न्यायालय श्रीमान सिविल जज (सी.डि.) महोदय, गौतमबुद्धनगर।
उत्तराधिकार वाद सं.–28 सन 2024

अतुलिन्द्र नाथ चतुर्वेदी पुत्र त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी उम्र 60 निवासी ए–4, सैक्टर–17 नोएडा, परगना व तहसील दादरी, जिला गौतमबुद्धनगर।

...... याची

बनाम

1.अवनिन्द्र नाथ चतुर्वेदी पुत्र त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी उम्र 66 वर्ष, 2.अतिन्द्र नाथ चतुर्वेदी, पुत्र त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी उम्र 70 3. कु. अनुराधा चतुर्वेदी पुत्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी उम्र 61 वर्ष समस्त निवासीगण ए–4 सैक्टर–17 नौएडा, परगना व तहसील दादरी, जिला गौतमबुद्धनगर।

......विपक्षीगण

हरगाह याची ने आपके नाम एक नालिश बाबत अन्तर्गत धारा 372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम 1925 के तहत उत्तराधिकार प्रमाण पत्र जारी कराने हेतु उक्त वाद दायर किया है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख **01.03.2024** समय 10.00 बजे दिन के असालतन या मार्फत वकील के जो मुकदमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि जो जबाव ऐसे सवालात दे सके हाजिर हो और जबाव दस्तावेज पेश करें जिन और आपको लाजिम है कि उसी रोज अपने जुमला दस्तावेज पेश करें जिन पर आप बताईद अपनी जबाबदेही के इस्तमाल करना चाहते हो। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आप मसमूअ और फैसला होगा। वक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 05.02.2024 ई. जारी किया गया।

आदेशानुसार / मुंसरिम
सिविल जज (सी.डि.),
गौतमबुद्धनगर

उत्तर रेलवे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

निविदा आमंत्रण सूचना

कार्य का नाम और इसकी स्थिति	**30-Elect-38-T-2023-24-E3** (पहाड़गंज) एवं ईडीपीएम केंद्र डीआरएम कार्यालय में ओटिस लिफ्ट का तीन वर्षों के लिए व्यापक वार्षिक रखरखाव अनुबंध (सीएएमसी)।
निविदा की अनुमानित लागत	रू० 37.58 लाख
कार्यालय का पता	वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियता/जी, स्टेट एंट्री रोड़ नई दिल्ली
बयाना राशि	रू० 75200.00
निविदा निवेदन की दिनांक व समय	05.03.2024, 12.00 Hrs
निविदा खोलने की दिनांक व समय	05.03.2024, 12.00 Hrs
वेबसाइट व नोटिस बोर्ड	**www.ireps.gov.in/** वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियन्ता/जी, नई दिल्ली

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ 400/24

उत्तर रेलवे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

निविदा सूचना– ई – टेंडरिग द्वारा निविदा आमंत्रण (ई–प्रोक्योरमेंट प्रणाली)

क्र. सं.	निविदा सूचना संख्या	कार्य का नाम व स्थान	कार्य की अनुमानित लागत	धरोहर राशि	कार्य पूर्ण करने की अवधि	निविदा जमा करने व खुलने का समय
1	32-W-BR-27-REGIRDER-MB Dt.03.02.24	सहायक अधि. अभि. पुल लाइन/मुरादाबाद के क्षेत्राधिकार में बालामऊ–सीतापुर खंड के पुल संख्या 27 के एक स्पेन (18x18.3 मीटर) की री–गर्डरिंग का कार्य।	Rs. 5369308.48/-	Rs. 107400/-	6 (छह) महीने	दिनांक 27.02.2024 को 15.00 बजे तक तथा इसी दिनांक में निविदा खुलने का समय 15:00 बजे के पश्चात।

नोट: उपरोक्त निविदा प्रपत्र वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है जहां से विवरण निविदा व्याख्या को देख व् डाउनलोड किया जा सकता है।

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ 406/24

दिल्ली-एनसीआर में तेजी से बदल रहे मौसम के तेवर, धूप निकलने के बावजूद सर्द हवाएं बढ़ा रही ठिठुरन

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली में बृहस्पतिवार की सुबह ठिठुरन भरी ठंड तो बनी रही, लेकिन कोहरा नहीं दिखा। सुबह का तापमान थोड़ा बढ़कर भी सामान्य से एक डिग्री नीचे दर्ज किया गया एयरपोर्ट पर दृश्यता का स्तर सामान्य रहा।

न्यूनतम तापमान 8.2 डिग्री दर्ज

मौसम विभाग ने दिन में धूप खिलने और आसमान साफ रहने का पूर्वानुमान जारी किया है। बृहस्पतिवार सुबह दिल्ली का न्यूनतम तापमान 8.2 डिग्री दर्ज हुआ। बुधवार को यह 6.9 डिग्री रहा था। हवाओं के असर से आईजीआई एयरपोर्ट पर सुबह आठ बजे दृश्यता का स्तर चार हजार मीटर रिकार्ड किया गया। बदलते मौसम ने उलझन में डाला, सर्द हवा ठिठुरन बढ़ा रही तो धूप से मिली राहत; क्टऊ ने बताया कैसा रहेगा मौसम

हवा की गुणवत्ता में हुआ सुधार

मौसम विभाग का अनुमान है कि आज दिन में आसमान साफ रहेगा। धूप भी खिली रहेगी। अधिकतम तापमान 21 डिग्री रह सकता है। उधर तेज हवाओं के असर से बृहस्पतिवार को भी दिल्ली वासियों को प्रदूषित हवा से मिली राहत बनी रही। सुबह 9 बजे दिल्ली का एक्यूआई 162 दर्ज किया गया जो ह्यमध्यमह्ल श्रेणी में आता है।

गाजियाबाद : सुबह धूप खिली, शाम को छाए बादल

लगातार दूसरे दिन बुधवार को सुबह सवेरे से धूप खिली रही। जिससे लोगों को सर्दी से राहत रही। शाम को बादल घिर आए और बूंदाबांदी भी हुई। मौसम विभाग का अनुमान है कि अगले दो धूप रहेगी, लेकिन आसमान में हल्के बादल मंडराते रहेंगे।

दो दिन लगातार बूंदाबांदी एवं वर्षा होने के बाद रविवार को आसमान में बादल मंडराते रहे थे। जिससे सर्दी ज्यादा महसूस हुई थी। मंगलवार के बाद बुधवार को भी दूसरे दिन लगातार सुबह सवेरे से ही धूप खिली तो लोगों को सर्दी से राहत मिली। पार्कों में एवं घरों की छत पर लोग धूप सेकते दिखे। शाम को फिर से मौसम बदल गया। बादल घिर आए और हल्की बूंदाबांदी भी हुई। न्यूनतम तापमान नौ डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हवा अधिकतम 12 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चली। वातावरण में आर्द्रता 59 प्रतिशत दर्ज की गई।

आसमान में मंडराते रहेंगे हल्के बादल मौसम विभाग का अनुमान है कि अगले दो दिन धूप खिली रह सकती है, लेकिन आसमान में हल्के बादल मंडराते रहेंगे। तापमान में एक दो डिग्री सेल्सियस बढोतरी आ सकती है। बृहस्पतिवार को न्यूनतम तापमान आठ डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 19 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। वातावरण में आर्द्रता 54 प्रतिशत रहेगी और हवा अधिकतम 12 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चल सकती है।

राष्ट्रीय दैनिक
प्रात: किरण

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com

नई दिल्ली, शुक्रवार,09 फरवरी, 2023

देश के संघीय ढांचे को बचाने के लिए जंतर-मंतर पर आयोजित धरने में शामिल हुए केजरीवाल

देश का संघीय ढांचा हमारे संविधान और लोकतंत्र का आधार है, इसे बचाने की लड़ाई हम सब की लड़ाई है: अरविंद केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

देश के संघीय ढांचे को बचाने के लिए केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन द्वारा दिल्ली के जंतर-मंतर पर आयोजित धरने में दिल्ली सीएम अरविंद केजरीवाल और पंजाब सीएम भगवंत मान शामिल हुए। इस दौरान सीएम केजरीवाल ने कहा कि देश का संघीय ढांचा हमारे संविधान और लोकतंत्र का आधार है, केंद्र में बैठी भाजपा इसे खत्म करना चाहती है। देश के संघीय ढांचे और लोकतंत्र को बचाने की यह लड़ाई हम सबकी है। उन्होंने कहा कि देश के आधे राज्यों मे विपक्ष की सरकारें हैं, जिन्हें केंद्र सरकार काम नहीं करने दे रही है। केंद्र इन राज्यों का जायज फंड नहीं दे रहा है, राज्यपालों- उपराज्यपालों के जरिए हर काम में टांग अड़ा रही और जांच एजेंसियों को भेज कर किसी को भी जेल में डाल दे रही है। इन्होंने पीएमएलए के तहत हेमंत सोरेन को जेल में डाल दिया है, जबकि अभी न जांच शुरू हुई है और न आरोप साबित हुआ है। इस तरह तो ये मुझे या किसी को भी जेल में डाल देंगे और निर्दोष साबित होने से पहले वो बाहर नहीं आ सकेगा। इसलिए देश की जनता तय करे कि लोगों को मुफ्त सुविधाएं देने वाला भ्रष्टाचारी है या सबकुछ महंगा करने वाला भ्रष्टाचारी है।

केंद्र में बैठी भाजपा ने विपक्ष की सरकारों के खिलाफ युद्ध छेड़ा हुआ है- अरविंद केजरीवाल आप के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि जंतर-मंतर वह जगह है, जहां देश की जनता सरकारों के उत्पीड़न से तंग आकर धरने-प्रदर्शन करने आती है। केंद्र सरकार के ज्यादती के खिलाफ आज यहां केरल के मुख्यमंत्री को सारा काम छोड़कर जंतर-मंतर पर धरना करने आना पड़ा है। देश को यह दिन भी देखना था। आज देश के लगभग आधे राज्यों में विपक्ष की सरकारें हैं और आधे राज्यों के अंदर उन लोगों की सरकारें हैं। विपक्ष की सरकारें देश के करीब 70 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं। अर्थात आधे देश का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस वक्त ऐसा लगता है कि केंद्र सरकार ने विपक्ष की सरकारों के खिलाफ युद्ध छेड़ा हुआ है। हम लोगों के साथ हिन्दुस्तान-पाकिस्तान कर रखा है।

केंद्र सरकार विपक्ष दलों की सरकारों को प्रतड़ित करने के लिए सारे हथकंडे अपना रही है- अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हम केंद्र सरकार से पूछना चाहते हैं कि क्या आप 70 करोड़ लोगों को अपना नहीं मानते हैं, क्या आप केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, पंजाब, दिल्ली, पश्चिम बंगाल के लोगों को अपना नहीं मानते हैं, क्या ये सारे लोग पराए हैं, क्या ये भारत के नागरिक नहीं हैं। इन राज्यों के लोगों ने विपक्ष को चुनकर अपनी सरकार बनाई है। संविधान के अंदर इन सरकारों के अधिकारों और शक्तियों के बारे में स्पष्ट लिखा है, लेकिन केंद्र सरकार विपक्ष की सरकारों को अपना काम ही नहीं करने दे रही है। केंद्र सरकार विपक्ष की सारी सरकारों को प्रतड़ित करने के लिए सारे हथकंडे अपना रही है। सीएम ने कहा कि मोटे तौर पर केंद्र सरकार तीन तरह से विपक्ष की सरकारों को तंग कर रही है। पहला, देश के जिन राज्यों मे विपक्ष की सरकारें हैं, उन राज्यों को उसका जायज फंड नहीं दे रही है। केंद्र से ये फंड लेने का सभी राज्यों को हक है। दूसरा, केंद्र सरकार राज्यपाल और उपराज्यपाल के जरिए विपक्षी दलों की सरकारों के काम में रोज टांग अड़ाती है। तीसरा, एजेंसियों को भेज कर किसी को भी पकड़कर जेल में डाले जा रहे हैं। केंद्र सरकार से हम भीख नहीं मांग रहे हैं, बल्कि अपने राज्य की जनता का हक मांग रहे हैं- अरविंद केजरीवाल ने केंद्र से राज्यों को जायज फंड न मिलने पर कहा कि रोज हम सभी इस बात को झेल रहे हैं कि केंद्र सरकार से जो जायज फंड हमारे राज्य के बनते हैं, वो फंड हमें नहीं दिए जा रहे हैं। हमारे राज्य को फंड नहीं दिए जाएंगे तो काम कैसे चलेंगे, केरल, तमिलनाडु, दिल्ली, पंजाब की सरकारें कैसे चलेगी? हम यहां केंद्र सरकार से भीख मांगने नहीं आए हैं, अपने घर-अपने परिवार के लिए पैसे मांगने नहीं आए हैं। हम सभी लोग अपने राज्य की जनता के लिए पैसे मांगने आए हैं। पंजाब के सीएम अपने तीन करोड़ लोगों के लिए फंड मांगने आए हैं, मैं अपने दिल्ली के दो करोड़ लोगों का हक मांगने के लिए आया हूं। संविधान में लिखा है कि कितना पैसा किस सरकार को मिलेगा? केरल, तमिलनाडु, पंजाब, दिल्ली, पश्चिम बंगाल के लोगों को जो संवैधानिक हक है, केंद्र सरकार उसे कैसे छीन सकती है, उन राज्यों के लोगों का काम कैसे रोक सकते हैं? अगर केंद्र सरकार राज्यों को उनका जायज फंड नहीं देगी, तो हम सड़कें कैसे बनाएंगे, बिजली कैसे देंगे, लोगों को विकास कैसे करेंगे? दिल्लीवाले हर साल दो लाख करोड़ टैक्स देते हैं और बदले में केंद्र मात्र 325 करोड़ रुपए देती है- अरविंद केजरीवाल ने कहा कि केंद्र सरकार ने केरल के 8400 करोड़ रुपए रोक रखा है। पंजाब के 8 हजार करोड़ से अधिक का फंड रोका है। कुछ दिन पहले पंजाब सरकार सुप्रीम कोर्ट गई कि केंद्र सरकार हमारे हक का ग्रामीण विकास निधि (आरडीएफ) का 5500 करोड़ रुपए जारी नहीं कर रही है। केरल भी कोर्ट गया हुआ है। सुप्रीम कोर्ट में अगले हफ्ते सुनवाई होनी है। अब केंद्र सरकार से फोन आया है कि आइए बैठ कर बात करते हैं। क्या हम छोटी-छोटी बातों के लिए सुप्रीम कोर्ट जाएंगे? सुप्रीम कोर्ट के पास और भी बहुत से काम हैं। सुप्रीम कोर्ट जनता के काम से भरा हुआ है। यह क्या बदतमिजी है। केंद्र सरकार अपना काम करे और हमें अपना काम करने दे। क्या अब हमें अपने हक का फंड लेने के लिए जंतर-मंतर पर आना पड़ेगा? सीएम ने कहा कि दिल्ली के लोग हर साल लगभग 2 लाख करोड़ रुपए इनकम टैक्स देते हैं और इसके बदले में दिल्ली के लोगों को मात्र 325 करोड़ रुपए मिलते हैं। इतना तो अंग्रेजों ने भी नहीं लूटा होगा, जितना ये लोग लूट रहे हैं। यह तो अब हद हो गई है।

सीमा शुल्क विभाग का अधिकारी बनकर चार लाख रुपये से अधिक की ठगी, मामला दर्ज

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

गौतमबुद्ध नगर में छलेरा गांव के निवासी एक व्यक्ति से साइबर अपराधियों ने चार लाख 34 हजार रुपये ठग लिये। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। थाना सेक्टर 39 के प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि सेक्टर-41 में रहने वाले प्रबल गुप्ता ने बुधवार रात थाने में अपने साथ ठगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। पीड़ित के अनुसार उनका सोशल मीडिया के माध्यम से विदेश में रहने वाली मारिया नामक एक महिला से संपर्क हुआ। गुप्ता ने बताया कि मारिया ने कहा था कि वह उनसे मिलने के लिए भारत आ रही है। इसी बीच एक व्यक्ति का उनके पास फोन आया। फोन पर उस व्यक्ति ने खुद को सीमा शुल्क विभाग का अधिकारी बताते हुए गुप्ता से कहा कि मारिया को हवाई अड्डे पर पकड़ लिया गया है क्योंकि उनके पास विदेशी मुद्रा और सोने के आभूषण हैं। फर्जी अधिकारी ने कहा कि अगर उसे छुड़ाना है तो आपको सीमा शुल्क के रूप में 4,34,000 रुपये तुरंत जमा करने होंगे। पीड़ित फर्जी अधिकारी की बातों में आ गया तथा उसने उसके बताए गए खाते में रकम जमा कर दी। बाद मे उन्हें पता चला कि वह साइबर ठगी के शिकार हुए हैं। एक अन्य घटनाक्रम के तहत नोएडा के ही थाना सेक्टर-39 में रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि अज्ञात साइबर ठग ने ज्यादा मुनाफा कमाने का लालच देकर तीन लाख 30 हजार रुपये ठग लिये। थाना सेक्टर 39 के प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि सेक्टर 44 के छलेरा के एफ- ब्लॉक में रहने वाले सर्वेश कुमार सिंह ने बीती रात को थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई कि कुछ दिन पहले उसे सोशल मीडिया के माध्यम से एक संदेश आया। संदेश देने वाले ने उससे कहा कि अगर वह उसके साथ टेलीग्राम ऐप से जुड़ता है तो कुछ पैसे निवेश करने पर उसे ज्यादा मुनाफा मिलेगा। पीड़ित साइबर ठग की बात पर विश्वास करके टेलीग्राम ऐप से जुड़ गया। आरोपियों ने शुरूआती दौर में उसे कुछ फायदा दिया, लेकिन बाद में उससे तीन लाख 30 हजार रुपये ठग लिये। पुलिस मामला दर्ज करके ठगी की इन दोनों घटनाओं की जांच कर रही है।

मानसिक तनाव के चलते युवती ने खाया जहर, हालत गंभीर

नोएडा(उप्र)। गौतमबुद्ध नगर के नोएडा में 22 वर्षीय युवती ने मानसिक तनाव के चलते कथित तौर पर जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। थाना फेस-3 क्षेत्र के सेक्टर-70 की निवासी युवती की गंभीर हालत को देखते हुए उसे नोएडा के जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। थाना फेस- 3 के प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि सेक्टर-70 निवासी वंशिका पुत्री एसके सिंह ने मानसिक तनाव के चलते बुधवार को जहरीला पदार्थ खा लिया। उन्होंने बताया कि उसे गंभीर हालत में नोएडा के सेक्टर 39 स्थित जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। थाना प्रभारी ने बताया कि अस्पताल की सूचना पर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

किसान विरोध: नोएडा पुलिस ने दिल्ली से जुड़ी सीमाओं पर सुरक्षा बढ़ाई

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

गौतमबुद्ध नगर के किसानों के संसद तक प्रस्तावित मार्च को देखते हुए नोएडा पुलिस ने बृहस्पतिवार को दिल्ली से लगी अपनी सीमाओं पर सुरक्षा बढ़ा दी। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों के अनुसार, किसानों के प्रस्तावित मार्च की वजह से कुछ जगहों पर यातायात के मार्ग में परिवर्तन किया गया है, जबकि किसानों से वार्ता कर प्रस्तावित मार्च को रोकने का प्रयास किया जा रहा है। किसानों के दिल्ली मार्च की घोषणा के बाद नोएडा पुलिस दिल्ली से जुड़ी विभिन्न सीमाओं पर सख्ती से जांच कर रही है जिसकी वजह से नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे और डीएनडी सहित विभिन्न मार्गों पर वाहनों की आवाजाही धीमी हो गई है। पुलिस के एक अधिकारी ने कहा, किसान आंदोलन के मद्देनजर दिल्ली से जुड़ी सभी सीमाओं, किसान चौक और अन्य स्थानों पर बैरियर लगाए जा गए हैं। प्रत्येक वाहन की जांच की जा रही है जिसके कारण यातायात की गति धीमी हो गई है। उन्होंने कहा कि यातायात को नियंत्रित करने के लिए वरिष्ठ अधिकारी और अन्य कर्मी विभिन्न स्थानों पर मौजूद हैं। भारतीय किसान परिषद (बीकेपी) के नेतृत्व में किसानों का बृहस्पतिवार दोपहर साढ़े 12 बजे नोएडा के महामाया फ्लाईओवर पर एकत्र होना प्रस्तावित है। बीकेपी नेता सुखबीर यादव खलीफा ने कहा, महामाया फ्लाईओवर से किसान अपनी लंबे समय से लंबित मांगों को लेकर दबाव बनाने के लिए दिल्ली स्थित संसद की ओर मार्च करेंगे। नोएडा और ग्रेटर नोएडा में किसानों के विरोध प्रदर्शन के मद्देनजर गौतमबुद्ध नगर पुलिस पहले से ही बुधवार और बृहस्पतिवार के लिए भारतीय दंड संहिता की धारा 144 के तहत निषेधाज्ञा लागू कर चुकी है। पुलिस ने एक यातायात परामर्श जारी करके ट्रैक्टर सवार किसानों के आंदोलन के मद्देनजर यात्रियों को नोएडा और दिल्ली के कई यातायात मार्गों में बदलाव के प्रति आगाह किया है। नोएडा और ग्रेटर नोएडा के किसान दिसंबर, 2023 से स्थानीय विकास प्राधिकरणों द्वारा अधिग्रहीत अपनी भूमि के बदले अधिक मुआवजे और विकसित भूखंड देने की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

समीर वानखेड़े की शिकायत पर अदालत ने दिल्ली पुलिस से कार्रवाई रिपोर्ट मांगी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी समीर वानखेड़े की नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के उप महानिदेशक ज्ञानेश्वर सिंह के खिलाफ दायर प्राथमिकी दर्ज करने की मांग वाली शिकायत पर अदालत ने दिल्ली पुलिस से कार्रवाई रिपोर्ट मांगी है। पटियाला हाउस कोर्ट के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश देवेंदर कुमार जांगला ने जुलाई 2023 की वानखेड़े की शिकायत के संबंध में कार्रवाई रिपोर्ट दाखिल करने के लिए दक्षिण पश्चिम जिले के पुलिस उपायुक्त को नोटिस जारी किया। अदालत ने मामले को 27 फरवरी को आगे की सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया है। अधिकारी ज्ञानेश्वर सिंह पर लगे ये आरोप वानखेड़े ने अपनी शिकायत में आईपीएस अधिकारी ज्ञानेश्वर सिंह पर कार्डेलिया ड्रग्स भंडाफोड़ मामले से संबंधित जांच के दौरान अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति अधिनियम के तहत दंडनीय उत्पीड़न और अत्याचार का आरोप लगाया है, जिसमें बॉलीवुड एक्टर शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान को गिरफ्तार किया गया था। शिकायत मूल रूप से मुंबई पुलिस के पास दर्ज शिकायत में यह भी आरोप है कि अनुसूचित जाति का सदस्य होने के कारण वानखेड़े को सिंह ने अपमानित किया और धमकी दी कि वह यह सुनिश्चित करेंगे कि वानखेड़े को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़े। अपने आवेदन में वानखेड़े ने कहा कि शिकायत मूल रूप से मुंबई पुलिस के पास दर्ज की गई थी, जिसने बाद में उन्हें सूचित किया कि उनकी शिकायत आगे की कार्रवाई के लिए दिल्ली पुलिस को स्थानांतरित कर दी गई थी।

दिल्लीवालों के लिए जरूरी खबर, यमुना में बढ़ी अमोनिया का मात्रा; पानी की सप्लाई बाधित

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

यमुना में अमोनिया का स्तर बढ़ने से वजीराबाद जल शोधन संयंत्र (डब्ल्यूटीपी) से जुड़े दिल्ली के कई क्षेत्र में जल आपूर्ति प्रभावित हो रही है। दिसंबर मध्य से ही वजीराबाद जलाशय में अमोनिया का स्तर बढ़ने की समस्या हो रही है। कुछ दिनों तक स्थिति ठीक रहने के बाद फिर से समस्या शुरू हो गई है। इस कारण वजीराबाद डब्ल्यूटीपी से उसकी क्षमता की तुलना में मात्र 50 प्रतिशत पानी मिल रहा है। 3 पीपीएम तक पहुंच रहा यमुना में अमोनिया का स्तर अधिकारियों का कहना है कि पिछले तीन दिनों से वजीराबाद में यमुना में अमोनिया का स्तर 1.7 पीपीएम (पाट्र्स प्रति मिलियन) से 3 पीपीएम तक पहुंच रहा है। छह फरवरी की रात यह इससे भी ऊपर पहुंच गया। अमोनिया का स्तर 1 पीपीएम से अधिक पहुंचने के बाद परेशानी शुरू हो जाती है। आने वाले दिनों में बढ़ सकती है समस्या...

अधिकारियों का कहना है कि हरियाणा से आने वाले डीडी-6 व डीडी-8 नाले की दीवारें क्षतिग्रस्त होने से गंदा पानी यमुना में गिर रहा है जिससे वजीराबाद में अमोनिया का स्तर बढ़ रहा है। प्लांट में पानी उत्पादन क्षमता आधा होने से मंगलवार से कई इलाकों में पानी की किल्लत है। आने वाले दिनों में यह समस्या और बढ़ भी सकती है। पिछले तीन दिनों से नई दिल्ली नगर पालिका परिषद, मध्य व उत्तरी दिल्ली और दक्षिणी दिल्ली के कई क्षेत्र में है, लेकिन दिल्ली जल बोर्ड द्वारा इसकी कोई सार्वजनिक सूचना नहीं दी है। इससे पहले भी अमोनिया का स्तर बढ़ने से होने वाली परेशानी को लेकर जल बोर्ड द्वारा लोगों को सूचित नहीं किया गया। जल बोर्ड के अधिकारियों के अनुसार वजीराबाद डब्ल्यूटीपी की क्षमता करीब 136 एमजीडी (मिलियन गैलन प्रति दिन) की है। इसकी तुलना में मात्र 50 प्रतिशत पानी उपलब्ध हो रहा है।

अदालत ने दिव्यांग व्यक्तियों को सुविधाएं देने के मामले में रैपिडो से जवाब मांगा

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने दिव्यांग व्यक्तियों को रैपिडो सेवाओं में आने वाली बाधाओं को लेकर कंपनी से प्रतिक्रिया मांगी है। अदालत को बताया गया कि यात्रा सुविधा देने वाली कंपनी ने समस्याओं को अभी तक हल नहीं किया है। न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद ने इस पहलू पर जवाब मांगा है। अदालत उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसमें ऐप-आधारित कैब एग्रीगेटर्स को दिव्यांग लोगों के लिए अनुकूल और सुलभ बनाने के निर्देश देने की मांग की गई थी। इसने पहले नवंबर 2023 में पारित एक आदेश द्वारा केंद्र सरकार को इस मामले में नोटिस जारी किया था। दिव्यांग अधिकार कार्यकर्ता अमर जैन और दृष्टिबाधित बैंकर दीप्तो घोष चौधरी द्वारा दायर याचिका में कहा कि हम रैपिडो मोबाइल राइड एप्लिकेशन पर भरोसा करते हैं, लेकिन ऐप दिव्यांगों की पहुंच संबंधी जरूरतों को पूरा करने में विफल रहता है। कठिनाई केवल रैपिडो ऐप तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अन्य कैब एग्रीगेटर्स के पास भी विकलांग व्यक्तियों को समायोजित करने के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। याचिका में बताया गया कि दिव्यांगता के बारे में पता चलने पर रैपिडो ड्राइवर ने सवारी देने से मना कर दिया। इस तरह के अनुभव दिव्यांग व्यक्ति की गरिमा को कमजोर करते हैं। मामले की अगली सुनवाई 2 अप्रैल को होगी।

कारोबारी से फोन झपटकर भाग रहे बदमाशों को दबोचा

नई दिल्ली। मुखर्जी नगर में रविवार रात एक कारोबारी से फोन झपटकर भाग रहे बदमाशों को पुलिस ने गिरफ्तार किया। आरोपियों की पहचान बाड़ा हिन्दुराव निवासी अमन खान और फरदीन के रूप में हुई है। घटना रविवार रात करीब 11 बजे की है। पुलिसकर्मी गश्त पर थे तभी एक युवक को बाइक सवारों का पीछे करते देखा। इसके बाद पुलिस ने भी उनका पीछा किया। हड़बड़ाहट में आरोपियों की बाइक फिसल गई और वहां मौजूद लोगों की मदद से पुलिस ने दोनों को दबोच लिया। वजीराबाद निवासी गौरव अरोड़ा ने बताया कि वह कपड़ों का कारोबार करता है। रात को घर जा रहा था। इसी दौरान बाइक सवार आए और उसका मोबाइल फोन छीनकर भागने लगे।

हत्या का आरोपी 10 साल बाद एटा से गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने 31 जनवरी को हत्या के मामले में दस साल से फरार चल रहे एक आरोपी को यूपी के एटा से गिरफ्तार किया। बुलंदशहर निवासी वेद प्रकाश उर्फ टोरी उर्फ टिंकू पुलिस से बचने के लिए एटा के डूसन थर्मल पावर प्लांट में मजदूरी कर रहा था। स्पेशल सेल के डीसीपी मनोज सी ने गुरुवार को बताया कि आरोपी ने वर्ष 2012 में ट्रक चालक के साथ मिलकर तिमारपुर में एक युवक की हत्या कर दी थी। मामले में दोनों को गिरफ्तार भी कर लिया गया था। 2014 में जमानत लेने के बाद वह फरार हो गया। तभी से पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। आरोपी पर हत्या, हत्या के प्रयास और लूटपाट के 12 से ज्यादा मामलों में दर्ज हैं। उसकी निशानदेही पर एक पिस्टल, चार कारतूस और चोरी की एक स्कूटी भी बरामद की गई है।

मस्जिद गिरा कर गुरुद्वारा रकाबगंज का हुआ था निर्माण

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

गुरुद्वारा रकाबगंज के निर्माण को लेकर दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (डीएसजीएमसी) के पूर्व अध्यक्ष व भाजपा नेता मनजिंदर सिंह सिरसा के बयान पर विवाद शुरू हो गया है। उन्होंने पिछले दिनों एक कार्यक्रम में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) द्वारा प्रकाशित पुस्तक का हवाला देते हुए कहा था कि सिख योद्धा बाबा बघेल सिंह ने 1783 में मस्जिद ध्वस्त कर गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब का निर्माण किया था।

उनके इस बयान का शिरोमणि अकाली दल (शिअद बादल) के प्रदेश अध्यक्ष परमजीत सिंह सरना व अन्य सिख नेताओं ने विरोध किया है। उन्होंने सिरसा पर सिख इतिहास को गलत तरह से प्रस्तुत करने का आरोप लगाते हुए श्री अकाल तख्त के जत्थेदार कार्रवाई करने की मांग की है। सिरसा का किया समर्थन डीएसजीएमसी के अध्यक्ष हरमीत सिंह कालका ने सिरसा के बयान का समर्थन करते हुए श्री अकाल तख्त से सरना के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है। सिरसा ने कार्यक्रम में कहा था कि गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब वही स्थान है, जहां गुरु तेग बहादुर जी के धड़ का अंतिम संस्कार हुआ था।

मुगलों ने गुरघर को हटाकर बनाई मस्जिद गुरु गोविंद सिंह वर्ष 1707 में दिल्ली आकर इस स्थान पर गुरुघर बनवाया था। मुगल शासक द्वारा उस गुरुद्वारा को हटाकर मस्जिद बना दी गई थी। वर्ष 1783 में दिल्ली फतेह के बाद बाबा बघेल सिंह ने मुगल शासक सुल्तान शाह आलम को कहा कि गुरु तेग बहादुर जी के स्थान पर गुरुद्वारा बनेगा। उन्होंने मस्जिद ध्वस्त कर गुरुद्वारा का निर्माण किया था।

सरना का कहना है कि सिरसा सिख इतिहास की गलत व्याख्या कर रहे हैं। इससे सिख संगत में रोष है। शिअद बादल के नेता जीके ने कहा कि सिरसा को कुछ बोलने से पहले तथ्य की पड़ताल करनी चाहिए। पहले भी श्री अकाल तख्त से फटकार लग चुकी है। क्या है रकाबगंज गुरुद्वारा की कहानी उन्होंने गुरु तेग बहादुर जी का जहां बलिदान हुआ था, वहां शीशगंज गुरुद्वारा है। जहां धड़ का संस्कार हुआ था वहां पर गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब है। गुरु गोविंद सिंह 1707 में यहां आकर इन दोनों स्थानों की निशानदेही की थी। गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब वाले स्थान को लेकर 1783 में विवाद हुआ था और उस समय खोदाई की गई तो वहां अस्थियां निकली थी उसके बाद वहां गुरुद्वारा बनाने का निर्णय हुआ।

बाबा बघेल सिंह, बाबा जस्सा सिंह आहलुवालिया और बाबा जस्सा सिंह रामगढ़िया ने वहां गुरुद्वारा बनवाया, लेकिन कोई मस्जिद नहीं गिराई गई गई थी। गुरुद्वारा के पास एनडीएमसी कार्यालय को आज भी रकाबगंज मस्जिद कहा जाता है।

वहीं, कालका का कहना है कि सिखों की सर्वोच्च संस्था एसजीपीसी द्वारा 2018 में प्रकाशित पुस्तक शहीदी जीवन (गुरबख्श सिंह लिखित) के पेज नंबर 32 पर स्पष्ट लिखा है कि बाबा बघेल सिंह ने मस्जिद ध्वस्त कर गुरुद्वारा साहिब स्थापित किया था। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता आरपी सिंह ने भी कहा कि सिरसा ने स्वयं से नहीं बल्कि एसजीपीसी द्वारा प्रकाशित पुस्तक के आधार पर बयान दिया है। यदि सरना व जीके को इसमें कुछ गलत लगता है तो उन्हें एसजीपीसी से पुस्तक में दिए गए तथ्य को लेकर प्रश्न करना चाहिए।

आम आदमी पार्टी ने असम की तीन लोकसभा सीटों पर की उम्मीदवारों के नाम की घोषणा

- हमने असम में तीन लोकसभा सीटों पर प्रत्याशियों की घोषणा की है, उम्मीद है इंडिया गठबंधन इसे स्वीकार करेगा: डॉ. संदीप पाठक
- आम आदमी पार्टी पूरी ईमानदारी और ताकत के साथ इंडिया गठबंधन का हिस्सा बनी रहेगी: डॉ. संदीप पाठक

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

लोकसभा चुनाव को लेकर आम आदमी पार्टी ने असम की तीन लोकसभा सीटों पर उम्मीदवारों के नाम की घोषणा कर दी है। आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद और संगठन महामंत्री डॉक्टर संदीप पाठक ने गुरुवार को पार्टी मुख्यालय में मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि आज हम असम में तीन लोकसभा सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा कर रहे हैं। डिब्रूगढ़ लोकसभा सीट से मनोज धनोवर, गुवाहाटी लोकसभा सीट से भाबेन चौधरी सोनितपुर लोकसभा सीट से ऋषिराज आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार होंगे। इन तीन लोकसभा सीटों पर हम जल्द से जल्द चुनाव प्रचार शुरू कर देंगे। हम उम्मीद करते हैं कि इंडिया गठबंधन इसको स्वीकार करते हुए अपना समर्थन देगा और यह तीन लोकसभा सीट आम आदमी पार्टी को दे दी जाएंगी। हम फाइटर लोग हैं और हमें चुनाव लड़ना है। हमें लड़ने के लिए नहीं जीतने के लिए चुनाव के मैदान में जाना है। गठबंधन करने का उद्देश्य ही चुनाव जीतना है, इसीलिए सब कुछ समयबद्ध तरीके से होना चाहिए।

डॉ. संदीप पाठक ने आगे कहा कि सीट शेयरिंग को लेकर लंबे समय से बातचीत चल रही है। हमें जल्द से जल्द इस बातचीत को निष्कर्ष तक ले जाना पड़ेगा। आम आदमी पार्टी पूरी ईमानदारी और ताकत के साथ इंडिया गठबंधन का हिस्सा बनी रहेगी। आम आदमी पार्टी गठबंधन का धर्म निभाएगी। लोकसभा चुनाव की तारीख लगभग तय हो चुकी हैं। लोकसभा चुनाव में कुछ महीने बाकी रह गए हैं, इतने कम समय में हमें चुनाव की तैयारी भी करनी है और चुनाव भी लड़ना है। हमने चुनाव जीतने के लिए गठबंधन किया है और चुनाव जीतने के लिए उम्मीदवारों के नाम की घोषणा करनी पड़ेगी। अन्य राज्यों में सीट शेयरिंग को लेकर हमारी बातचीत चल रही है। मुझे उम्मीद है और मैं अनुरोध भी करता हूं कि इस बातचीत को जल्द से जल्द पूरा किया जाएगा। अगर हम सिर्फ बातचीत ही करते रहेंगे तो फिर चुनाव कब लड़ेंगे।

डॉ. संदीप पाठक ने आगे कहा कि दिल्ली में सीट शेयरिंग को लेकर हमारी बातचीत चल रही है। हम इंडिया गठबंधन के एक जिम्मेदार और समझदार पार्टनर हैं। पंजाब के लिए आम आदमी पार्टी और कांग्रेस की राज्य इकाइयों ने सहमति बनाई थी कि दोनों पार्टियां राज्य में अलग-अलग चुनाव लड़ेंगी। पंजाब में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस अलग-अलग लोकसभा चुनाव लड़ेंगी और वहां कोई गठबंधन नहीं होगा। जिस तरीके से लोकसभा चुनाव की समय सीमा तय हो चुकी है उसी तरीके से सीट शेयरिंग को लेकर भी समय सीमा तय होनी चाहिए। जल्द से जल्द इंडिया गठबंधन के घटक दलों के साथ सीट शेयरिंग की बातचीत पूरी होनी चाहिए। जितनी जल्दी सीट शेयरिंग को लेकर फैसला लिया जाएगा उतनी जल्दी ही चुनाव की तैयारी शुरू की जा सकेंगी। इंडिया गठबंधन पूरी मजबूती के साथ चुनाव लड़ेगा।

दिल्ली से क्यों खत्म नहीं हो रहे कूड़े के पहाड़

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के प्रवेश द्वारों पर कूड़े के पहाड़ भद्दे लगते हैं। शहर के प्रति देश की राजधानी के प्रति एक नकारात्मक अवधारणा को जन्म देते हैं। स्वच्छता जिस शहर की पहचान होनी चाहिए वहां कूड़े का पहाड़ द्वारों पर दिखते हैं।

कूड़े का पहाड़ जिम्मेदार निकाय और राजनेताओं की अव्यवस्था का ही दुष्परिणाम है। इसे हटाने, कम करने की कवायदें खूब चलीं लेकिन हाल वही रहा, दो फीट कम किया और जितना घटाया उतना ही वहां लाकर डाल दिया गया। क्यों नहीं हो रहा कूड़े का निस्तारण? सारी मेहनत ढेर होती नजर आती है। इन्हें खत्म करने का कोई ठोस स्थायी उपाय दिसंबर 2024 तक के लक्ष्य के बावजूद भी नजर नहीं आता। दिल्ली की लैंडफिल साइटों पर बने कूड़े के पहाड़ों को खत्म करने में इच्छाशक्ति में क्यों कमी है?

इसमें कहां है बाधा? और कौन है इसके लिए जिम्मेदार? साथ ही दिल्ली व एनसीआर की लैंडफिल साइटों पर कूड़ा आखिर पहुंच ही क्यों रहा है, शहरों से निकलने वाले पूरे कूड़े का उचित निस्तारण क्यों नहीं किया जा पा रहा है? यह कैसे संभव बनाया जाए कि लैंडफिल साइटों तक कूड़ा पहुंचना ही बंद हो जाए। इसी की पड़ताल करना हमारा आज का मुद्दा है :

-क्या आप मानते हैं कि जिस गति से कार्य चल रहा है, इस वर्ष दिसंबर माह तक दिल्ली के कूड़े के पहाड़ खत्म हो जाएंगे? क्या एनसीआर में कूड़े का शत प्रतिशत निस्तारण न हो पाने के लिए अधिकारियों की जवाबदेही तय की जानी चाहिए? महापौर दें आदेश तो हो सकता है स्थायी समिति का गठन

दिल्ली नगर निगम एक्ट में सभी की शक्तियों का उल्लेख अनुच्छेद 44 किया हुआ है। इसमें महापौर, स्थायी समिति, निगमायुक्त का उल्लेख है। सभी क्या कार्य कर सकते हैं कैसे कर सकते हैं इसका विवरण निगम एक्ट के साथ ही संचालन के नियमों में है।

जब 2023 में दिल्ली नगर निगम का गठन हुआ तो महापौर व उप महापौर के चुनाव के कुछ समय बाद ही वार्ड कमेटियों का चुनाव होना चाहिए था। दिल्ली नगर निगम ने स्थायी समिति के लिए सदन से निर्वाचित होने वाले सदस्यों का निर्वाचन पूरा कर लिया है। अब अगर, वार्ड कमेटियों का चुनाव हो जाए तो प्रत्येक वार्ड कमेटी से एक-एक सदस्य का निर्वाचन हो जाएगा। सदन से छह और वार्ड कमेटियों से 12 सदस्य चुने गए लोग अपने में से किसी एक सदस्य को डिप्टी चेयरमैन तो किसी एक सदस्य को चेयरमैन निर्वाचित कर सकते हैं। इसकी प्रक्रिया भी सरल है। जब महापौर और उप महापौर के साथ ही सदन से स्थायी समिति के लिए चुने जाने वाले छह सदस्यों का निर्वाचन हो गया है तो उसके बाद नियम है कि निगमायुक्त वार्ड कमेटियों के चुनाव के लिए तारीख तय करें और महापौर इन वार्ड कमेटियों में से किसी एक सदस्य को पीठासीन अधिकारी नियुक्त करें। नहीं हुए वार्ड कमेटियों के चुनाव इसके बाद यह चुनाव संपन्न हो सकते हैं। पर, इस पर कार्य नहीं किया गया तो वार्ड कमेटियों के चुनाव नहीं हुए। देश की किसी भी अदालत ने दिल्ली की वार्ड कमेटियों से लेकर स्थायी समिति के गठन पर रोक नहीं लगाई है। सुप्रीम कोर्ट में मनोनीत पार्षदों की नियुक्ति का मामला चल रहा है जिसमें अदालत ने इस मामले का निर्णय सुरक्षित रख रखा है। वहां भी कोर्ट ने स्थायी समिति के गठन पर रोक नहीं लगाई है। बावजूद इसके लिए दिल्ली में स्थायी समिति का गठन नहीं हो सका। अब रही बात कि स्थायी समिति का गठन नहीं होगा तो इससे क्या क्या कार्य प्रभावित होंगे। इससे बहुत से कार्य सीधे तौर पर प्रभावित होते हैं।

संक्षिप्त खबरें

हथियार के साथ एक नाबालिग गिरफ्तार

सहरसा जिला के सौरबाजार थाना क्षेत्र के समदा ग्राम में एक विधि विवादित किशोर की श्रेणी में आने वाले 17 वर्षीय युवक को 01 लोडेड देशी कट्टा के साथ निरुद्ध किया गया। कांड दर्ज कर विधि सम्मत कार्रवाई की जा रही है।

आग लगने से घर जलकर राख दो मवेशी गंभीर रूप से जख्मी

सोनवर्षा राज/सहरसा। प्रखंड के सोनवर्षा अंचल क्षेत्र के सहसौल पंचायत अन्तर्गत वार्ड नंबर 6 कुवंरगंज टोला में बुधवार की दोपहर अज्ञात कारणों से अचानक आग लगने से एक मवेशी का घर जहाँ जलकर राख हो गया।वहीं दो मवेशी बुरी तरह से झुलस गई।घटना के बाबत मिली जानकारी अनुसार कुवंरगंज टोला निवासी प्रमोद सादा के बने मवेशी घर में बुधवार दोपहर अज्ञात कारणों से अचानक आग लग गई जिसमें घर जल गया।वहीं घर में बंधे दो मवेशी बुरी तरह झुलस गए।जबकि ग्रामीणों की मदद से आग पर किसी तरह काबू पाया गया।नहीं तो एक बहुत बड़ी घटना घट सकती थी।घटना के बाद पिडित परिवार के सामने विकट समस्या उत्पन्न हो गई है। पिडित के जीविकोपार्जन का मुख्य स्रोत पशु पालन ही था।

सरस्वती पूजा करने वाले को लेना होगा लाइसेंस

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत सरस्वती पूजा करने वाले को पूजा का लाइसेंस लेना होगा। जिसके लिए 10 फरवरी तक विहित प्रपत्र भरकर पूजा लाइसेंस के लिए आवेदन किया जाएगा। साथ ही पूजा करने वाले को निर्देशित किया गया है कि वे रात्रि के 10 बजे से सुबह 6 बजे तक ध्वनि विस्तारक यंत्र का उपयोग न करें। साथ ही मंदिर, मस्जिद, अस्पताल, विद्यालय के समीप लाउडस्पीकर नहीं बजाएंगे। विसर्जन जूलुस के लिए रुट चार्ट और समय निर्धारित रखे। जूलुस में कोई भी व्यक्ति नशा में नही रहेंगे। नियम का पालन करते हुए पूजा व विसर्जन करेंगे। नियम का पालन नही करनेवाले पर कार्यवाई की जाएगी।

स्वच्छता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छता कर्मी करेंगे अनिश्चित कालीन हड़ताल

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा जिले के जज हट सवेला पंचायत के मनरेगा भवन में स्वच्छता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छता कर्मी संघ का बैठक आयोजित किया गया। जिसके अध्यक्षता जिला अध्यक्ष यासिर हामीद ने की। जिसमें मधेपुरा जिले के सभी प्रखंड के स्वच्छता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छता कर्मी मौजूद रहे वहीं बैठक में गोप गुट के संयुक्त सचिव सत्येन्द्र कुमार एवं गोप गुट के अध्यक्ष विनोद कुमार विमल मौजूद रहे।

बैठक में जिला अध्यक्ष यासिर हामीद द्वारा कार्यक्रम की जानकारी सभी उपस्थित पर्यवेक्षक व स्वच्छता कर्मी के संयुक्त रूप से विस्तार से कार्यक्रम में हो रही कठिनाइयों का उल्लेख किया गया। जिसमें मुख्य मुद्दा स्वच्छता पर्यवेक्षक व स्वच्छता कर्मी के मानदेय भुगतान की गारंटी सुनिश्चित करना, कचरा प्रबंधन के अंतर्गत वसूली करने वाला यूजर चार्ज की जवाबदेही से मुक्त करने, सरकार इस चार्ज को राजस्व वसूली सहित अन्य पंचायत के कर्मी को नियुक्त कर्मियों से करना सुनिश्चित करने, मानदेय का न्यूनतम मजदूरी (दैनिक) से कम ना किया जाए एवं सेवा काल 60 साल के लिए किया जाए। इन सभी को लेकर स्वच्छता पर्यवेक्षक व स्वच्छता कर्मी के समर्थन में 16 फरवरी से संभावित धरना प्रदर्शन व अनिश्चितकालीन हड़ताल का निर्णय लिया गया साथ-साथ सफल बनाने का निर्णय लिया गया।

बैठक के अंत में महासंघ गोप गुट अध्यक्ष व सचिव की उपस्थिति में अतिथियों द्वारा पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया गया। उनके द्वारा कहा गया कि संघर्ष करें हम आपकी आवाज राज्य स्तर तक पहुंचाएंगे वहीं बैठक में विषयक संबंध में आग्रह किया गया है कि संघ के सदस्यों की संख्या अपने अधिकारों एवं हक के लिए महासंघ के वसूलों स्वीकारते हुए मार्गदर्शन के में संघर्ष के लिए तत्पर हैं।

मौके पर स्वच्छता पर्यवेक्षक अभिषेक कुमार, राहुल कुमार, रणधीर रमण, विनोद शाह, संजय कुमार, मोहम्मद सिराज, दिलीप कुमार राम, सुमन कुमार, बमबम कुमार ठाकुर, आकाश कुमार, मोहम्मद गुलफान आलम, निरंजन कुमार, सद्दाम आलम, बमबम कुमार, मोहम्मद नफीस, रामजीवन कुमार, मोहम्मद सद्दाम हुसैन, राहुल कुमार यादव, संजय कुमार टू, पिंटू कुमार, रोशन कुमार, पारस कुमार, अजय कुमार, रंजन शाह, राजेश कुमार, गुरुदेव मुखिया, दिवाकर झा, जवाहर कुमार, दिलीप कुमार, मोहम्मद फिरोज आलम, शंकर कुमार पोद्दार, संजय कुमार, गोल्डन कुमार श, कुंदन कुमार, मंटू कुमार मंडल, रुकेश कुमार, राजेश कुमार मौजूद रहे।

कोडिन युक्त कॉफ सिरप के साथ एक गिरफ्तार भेजा गया जेल

प्रात: किरण, संवाददाता

सलखुआ/सहरसा। पुलिस को गुप्त सूचना प्राप्त हुई की सलखुआ थाना क्षेत्र के राजेश कुमार, पिता-दिनेश यादव ग्राम-मांठा, थाना-सलखुआ, जिला-सहरसा के द्वारा अपने घर कोडिन युक्त कॉफ सिरप रखकर कय विकय किया जा रहा है। उक्त सूचना के सत्यापन एवं कार्रवाई हेतु सलखुआ पुलिस के द्वारा पुलिस वाहन से सशस्त्र बल के साथ ग्राम मांठा स्थित राजेश कुमार के घर कर घेराबंदी किया गया। घेराबंदी करने के उपरांत 01 व्यक्ति उक्त घर से प्लास्टि का थैला लेकर भागने लगा जिसे पुलिस बल के सहायोग से पकड़ा गया। पकड़ाये व्यक्ति के पास से प्लास्टिक के थैला में 19 पीस कोडिन युक्त कफ सिरप पाया गया तथा उक्त व्यक्ति का नाम पता पूछने पर राजेश कुमार, पिता-दिनेश यादव ग्राम मांठा, थाना-सुलखुआ, जिला-सहरसा बतलाया गया। अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

"आराधना" सरस्वती पूजा को लेकर सभी जगह शुरू की जा रही है तैयारियां

प्रात: किरण, संवाददाता

सहरसा। जिले में सभी जगह सरस्वती पूजा को लेकर तैयारियां शुरू की जा रही है। प्रत्येक वर्ष सरस्वती पूजा माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाई जाती है। इस दिन विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा-आराधना की जाती है। देश भर में स्कूल, कॉलेजों, शैक्षणिक संस्थानों में सरस्वती जी की पूजा लोग विधि-विधान से करते हैं. वसंत पंचमी के दिन ही मां सरस्वती की जयंती पड़ती है, इसलिए भी इसे सरस्वती पूजा कहते हैं. तो चलिए जानते हैं इस वर्ष कब मनाई जाएगी सरस्वती पूजा, क्या है शुभ मुहूर्त और पूजा विधि सरस्वती पूजा इस साल 14 फरवरी को मनाई जाएगी। इस दिन विद्या और ज्ञान की देवी मां सरस्वती की पूजा लोग विधि अनुसार करते हैं। हिंदू धर्म में वसंत पंचमी का विशेष महत्व है. इस दिन ज्ञान और विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा की जाती है. मान्यता है कि वसंत पंचमी के दिन ही देवी मां सरस्वती का जन्म हुआ था, इसलिए यह शुभ दिन उन्हें समर्पित है. सरस्वती पूजा हर साल माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचंमी तिथि को बहुत ही धूमधाम से मनाई जाती है. सभी स्कूल, कॉलेजों में मां सरस्वती की पूजा-उपासना पूरे विधि-विधान से होती है. वसंत पंचमी के दिन ही मां सरस्वती की जयंती पड़ती है। इसलिए भी इसे सरस्वती पूजा से जाना जाता है. जान लेते हैं इस साल कब की जाएगी फरवरी के महीने में विद्या की देवी माता सरस्वती की पूजा, क्या है शुभ मुहूर्त और पूजा विधि सरस्वती पूजा करनी चाहिए। इस वर्ष माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि 13 तारीख को शुरू हो होगी। जिसका समय दिन के दो बजकर 41 मिनट है. यह 14 फरवरी को लगभग 12 बजकर 10 मिनट के करीब समाप्त हो जाएगा। सरस्वती पूजा 2024 का शुभ मुहूर्त पंडित कहते हैं कि 14 फरवरी के दिन सरस्वती पूजा करने का शुभ मुहूर्त सुबह 10 बजकर 30 मिनट से लेकर दोपहर 1 बजकर 30 मिनट तक रहेगा। इस दौरान आप मां सरस्वती की पूजा-पाठ विधि अनुसार करेंगे तो आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा। सरस्वती पूजा की विधि वसंत पंचमी के शुभ मौके पर पीले वस्त्र धारण करना चाहिए। उस दिन सुबह उठकर स्नान करें. पीला वस्त्र पहनें यदि इस रंग का कपड़ा नहीं है तो आप सफेद रंग का वस्त्र भी पहन सकते हैं,अपने पूजा स्थल की साफ-सफाई करें, वहां चौकी रखें और पीले रंग का वस्त्र बिछाएं, देवी सरस्वती को पीले रंग का वस्त्र पहनाकर, उस चौकी पर स्थापित करेंगे। उनके समक्ष सरस्वती पूजा करने का संकल्प लें, पीले रंग का फूल अर्पित करें,माला पहनाएं. अब अक्षत, पीले रंग की रोली, चंदन आदि चढ़ाएं. धूप, दीप, अगरबत्ती जलाएं. पीले रंग की मिठाई से भोग जाएंगे। अब सरस्वती वंदना और मंत्रों का उच्चारण करते हुए मां सरस्वती जी की पूजा करें. अंत में हवन करें, इस दौरान ह्यमूर्ति कार भी तरह तरह के अंदाज में पेंट करने की बात समझ रहे है ओम श्री सरस्वत्यै नमः: स्वहाह्व मंत्र का जाप करें और फिर आरती करें, हाथ जोड़कर सरस्वती जी से प्रार्थना करें कि वो आपको ज्ञान, बुद्धि 6 निर्णय ले सके।

महादलित बस्ती के बच्चे अभी भी शिक्षा से कोशो दूर

प्रात: किरण, संवाददाता

सौर बाजार/सहरसा। ऐसा भी एक गांव है जहां के बच्चे शिक्षा से अभी भी कोसो दूर है। गांव में बच्चे को पढ़ने के लिए सरकारी स्कूल नहीं है। जिसके कारण वहां के अधिकतर बच्चे निरक्षर होते जा रहे हैं। शिक्षा के बिना कई नौनिहालों का जीवन बर्बाद होने के कगार पर है। बात करते हैं जिले के सौरबाजार प्रखंड के कढ़ैया पंचायत के वार्ड नम्बर 12 जीवनियां टोला महादलित बस्ती की जहां शिक्षा की घोर अभाव है। बता दें कि सरकारी स्कूल है भी तो गांव के बगल सुहथ और कचरा गांव में लेकिन नामांकन के बाबजूद भी दूरी के कारण जीवनियां टोल के बच्चे उस स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं जाते हैं। वहीं बच्चे के अभिभावकों ने कहा कि कुछ बच्चों का नमांकन बगल के स्कूल में भी है लेकिन दूरी के कारण और स्कूल में गुणवत्ता पूर्ण खाना नहीं मिलने के कारण बच्चे स्कूल जाने से कतराते हैं। इसलिए वहां के स्थानीय लोगों ने सरकार से नौनिहालों को पढ़ने के लिए गांव में ही स्कूल की मांग की है। बताते चलें कि अधिकारियों के द्वारा विभिन्न स्कूलों में शिक्षा संवाद का भी आयोजन किया गया ताकि शिक्षा से संबंधित अन्य समस्याएं भी दूर हो सके लेकिन इस महत्वपूर्ण समस्या से वहां के अधिकारी भी अंजान बने रहे।

आगमानंद महाराज ने कहा कि माता की कृपा तीन विधियों से प्राप्त किया जा सकता है

प्रात: किरण, संवाददाता

पतरघट/सहरसा। जम्हरा काली स्थान में आयोजित दो दिवसीय काली कथा एवं रामकथा का बुधवार को भक्तिमय माहौल में प्रारंभ हुआ। श्री रामचंद्राचार्य परमहंस स्वामी आगमानंद जी महाराज द्वारा पहले सत्र में उन्होंने मां काली की विशेष पूजा की। तथा दूसरे सत्र का शुभारंभ आचार्य ब्रजमोहन सिंह लाल बाबा ने किया। उन्होंने कहा कि स्वामी आगमानंद जी से यहां के लोग लगातार उनसे दीक्षा ले रहे हैं। मां काली की कथा के दौरान स्वामी आगमानंद जी महाराज ने कहा कि माता की कृपा तीन विधियों से प्राप्त किया जा सकता है। जिनमें पूजा अर्चना, आराधना और साधना प्रमुख हैं। जिसके द्वारा वे फल-फूल-जल जो कुछ भी अर्पित करते हैं। उन्हें माता का आशीर्वाद मिलता है। आराधना में जप और पाठ किया जाता है। साधना विधि में किसी गुरु की कृपा प्राप्त कर उनकी संगत में भक्तों को माता का आशीर्वाद प्राप्त होता है। भक्तों को माता की पूजा में भय नहीं रखना चाहिए। लेकिन सतर्कता जरूर रखी जानी चाहिए। मां काली बहुत ही जल्द अपनी कृपा भक्तों पर बरसातीं हैं। भक्त आसानी से उन्हें प्रसन्न कर सकते हैं। बस उन्हें मन में आस्था, विश्वास और समर्पण रखने की आवश्यकता है। उक्त दो दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम की सफलता में स्थानीय ग्रामीण जुटे थें।

विद्यालय में चारदिवारी होने से पठन पाठन एवं विधि-व्यवस्था में सुधार होगी

प्रात: किरण, संवाददाता

पतरघट/सहरसा। प्रखंड क्षेत्र के मध्य विद्यालय ठाढ़ी प्रांगण की चहारदिवारी का गुरुवार को बीडीओ रचना भारती एवं मुखिया रीना देवी ने शिलान्यास किया। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत 12,64902 की लागत से बनने वाली चहारदीवारी का बीडीओ रचना भारतीय एवं मुखिया रीना देवी ने शिलान्यास किया। बीडीओ ने कहा कि उक्त चहारदीवारी निर्माण कार्य समय पूर्ण हो जाने से विद्यालय में पठन पाठन एवं विधि-व्यवस्था में सुधार होगी। वहीं मनरेगा पीओ मुकेश कुमार ने कहा चहारदीवारी निर्माण कार्य की गुणवत्ता उनके प्राथमिकी में है। चहारदीवारी निर्माण कार्य मनरेगा कर्मियों के देखरेख में होगी। वही ग्रामीणों का कहना है कि चार दिवारी नहीं रहने के कारण से यहां पर पठन-पाठन में कठिनाई उत्पन्न होते रहते हैं। मौके पर पीटीए सत्यनारायण कुमार, पीआरएस अखिलेश प्रसाद, आवास सहायक बबलू कुमार, मुखिया प्रतिनिधि मंटू यादव, अरविंद यादव, दिनेश यादव, संतोष यादव, रामचन्द्र यादव, बबलू, संजय ,कार्तिक, बिट्टू ,मुरारी ,शत्रुघ्न, हरेराम, सहित ग्रामीण मौजूद थें।

कोडिनयुक्त कफ सीरप के साथ एक तस्कर गिरफ्तार,भेजा गया जेल

प्रात: किरण, संवाददाता

आलमनगर, मधेपुरा आलमनगर थाना पुलिस द्वारा 71 बोतल कोडिनयुक्त कफ सीरप के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया गया। इस बाबत आलमनगर थाना अध्यक्ष अखिलेश कुमार ने बताया कि सुचना मिली कि आलमनगर नगर पंचायत के शंकरी टोला में अवेध कफ सीरप बेचा जा रहा है। सुचना मिलते ही गश्ती पर गये पुलिस पदाधिकारी कृष्ण कुमार सिंह को छापामारी करने का निर्देश दिया गया।छापामारी दल ने शंकर मंडल पिता महेन्द्र मंडल के जाँच पड़ताल की गई जहाँ दो जगह से 71 बोतल कोडिनयुक्त कफ सीरप बरामद किया गया एवं शंकर मंडल को गिरफ्तार किया गया। जिस पर प्राथमिकी दर्ज कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

रॉडिक कंसल्टेंट्स द्वारा महिला सशक्तीकरण की तरफ प्रभावी कदम

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई, बिहार, रॉडिक कंसल्टेंट्स ने जमुई, बिहार में महिला सशक्तिकरण और कौशल विकास गतिविधि को प्रायोजित करके सामुदायिक कल्याण की दिशा में एक मजबूत पहल की है। एक कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में, कंपनी बिहार के सबसे पिछड़े जिलों में से एक जमुई में महिलाओं के प्रशिक्षण के लिए विभिन्न केंद्र स्थापित करने में वित्तीय सहायता कर रही है, जहां वंचित समुदायों की महिलाओं को सिलाई और कढ़ाई में मुफ्त प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम जमुई के सोनो में एक पंजीकृत गैर सरकारी संगठन लोक सेवक संस्थान द्वारा संचालित किए जाते हैं। यह कार्यक्रम 20-30 आयु वर्ग की आदिवासी महिलाओं को सिलाई और कढ़ाई कौशल प्रदान करने पर केंद्रित है। यह प्रशिक्षण पहल एक सतत कार्यक्रम है जिसका उद्घाटन नवंबर माह में किया गया था। अपने दूसरे चरण में फ्ङउक्र्ळ की वित्तीय मदद ने तीन शिक्षण केंद्र खोलने में सहायता की है, जल्द ही चौथा केंद्र खोलने की योजना बनाई जा रही है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामांकित महिलाओं की कुल संख्या 90 की प्रभावशाली संख्या तक पहुंच गई है, जो स्थानीय समुदाय के व्यापक उत्साह और भागीदारी को दशार्ती है। कौशल विकास पर रॉडिक का जोर देश के महिला विकास और महिलाओं के लिए स्वरोजगार मिशन और सामुदायिक विकास के साथ संरेखित है, जो देश के पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाले उपेक्षित लोगों के लिए आर्थिक विकास और विकास के समान अवसर पैदा करता है। जमुई में लोक सेवक संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण सत्रों को प्रायोजित करके, कंपनी का लक्ष्य इन क्षेत्रों में हाशिए पर रहने वाली महिलाओं की स्थिति का उत्थान करना है। विविध पृष्ठभूमि की महिलाओं ने सिलाई और कढ़ाई कौशल हासिल करने में उल्लेखनीय प्रगति प्रदर्शित की। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कौशल विकास और सामुदायिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में कॉर्पोरेट पहल के सकारात्मक प्रभाव को रेखांकित करता है। अपनी सामुदायिक विकास पहलों के अलावा, एक इंजीनियरिंग और डिजिटल नवाचार सलाहकार के रूप में रोडिक ने बिहार के दूरदराज के इलाकों में स्वास्थ्य देखभाल डिजिटलीकरण में भी महत्वपूर्ण प्रगति की है, जहां स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच राज्य के लिए एक चुनौती रही है। इसके अलावा, कंपनी ने विभिन्न अन्य गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं के विकास की दिशा में पहल की है।

राशन कार्ड के लंबित आवेदनों की समय से जांच कर प्रक्रिया करें पूरी:उप विकास आयुक्त

प्रात: किरण, संवाददाता

- प्रवासी श्रमिकों का बनेगा राशन कार्ड
- उपविकास आयुक्त ने की समीक्षात्मक बैठक

मधेपुरा राज्य खाद्य निगम, सहकारिता,मध्याह्न भोजन व आपूर्ति योजना की समीक्षा बैठक डीआरडीए परिसर स्थित झल्लू बाबू सभागार में गुरुवार को उप विकास आयुक्त अवधेश कुमार आनंद की अध्यक्षता में हुई।

समीक्षा बैठक में उप विकास आयुक्त ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली विक्रेता की नई नियुक्ति हेतु स्थापना उप समाहर्त्ता को प्रेषित कि गई कोटिवार तैयार आदर्श आरक्षण रोस्टर को विभागीय नियमानुसार जांचकर,सत्यापन करते हुए जिलाधिकारी से अनुमोदन प्राप्त कर जिला आपूर्ति कार्यालय को वापस करने को कहा।

प्रवासी श्रमिकों का बनेगा राशन कार्ड : समीक्षा के क्रम में डीडीसी ने कहा कि महानगरों में काम करने वाले श्रमिक जिनका राशन कार्ड नहीं बना हुआ है। ऐसे सभी प्रवासी श्रमिकों का राशन कार्ड बनाया जाना है। ऐसे श्रमिकों का सत्यापन कर उनसे आवेदन प्राप्त कर नियमानुसार उन प्रवासी श्रमिक का राशन कार्ड निर्गत किया जाए।

कार्ड बनने के बाद लाभूकों को उचित मात्रा में ससमय गुणवतापूर्ण खाद्यान्न मुहैया कराया जाए।

पीडीएस दुकानों का नियमित हो निरीक्षण : उपविकास आयुक्त ने कहा कि खाद्यान्न वितरण प्रतिशत में प्रगति लाने के साथ ही लंबित राशन कार्ड आवेदनों को समय सीमा में निष्पादित किया जाए। वहीं लंबित आधार सीडिंग कार्यों का विभाग द्वारा निर्धारित समय सीमा के अन्दर पूर्ण करें। इसके अलावे असक्रिय राशन कार्ड के विरूद्व नियमानुसार कार्रवाई करें। नियमित रूप से पीडीएस दूकान का निरीक्षण करने का निर्देश संबंधित पदाधिकारियों को दिया गया।

धान क्रय के लक्ष्य को करें पूरा : बिहारीगज, मुरलीगंज व आलमनगर टीपीडीएस गोदाम का पहुंचपथ अविलंब पूर्ण कराने, खाद्यान्न का ससमय उठाव एवं वितरण करने हेतु जिला प्रबंधक को निर्देश डीडीसी ने बैठक में दिया।

उन्होंने कहा कि धान अधिप्राप्ति (वर्ष-2023-24), निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप पूर्ण करने, सीएमआर की अधिप्राप्ति ससमय करने, सहकारी समितियों में गोदाम निमार्ण को अविलंब पूर्ण कराने, मुख्यमंत्री हरित कृषि सयंत्र योजना का भौतिक सत्यापन करने, के संबंध में समीक्षा कर जिला सहकारिता पदाधिकारी को आवश्यक निदेश दिया गया। पीएम पोषण योजना की समीक्षा कर जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, मध्याह्न भोजन को आवश्यक निर्देश दिया गया।

बैठक में जिला आपूर्ति पदाधिकारी शंकर शरण, अनुमंडल पदाधिकारी उदाकिशुनगंज एसजेड हसन, अनुमंडल पदाधिकारी धीरज कुमार सिन्हा, जिला प्रबंधक राज्य खाद्य निगम सुनील कुमार, जिला सहकारिता पदाधिकारी प्रशांत कुमार सहित अन्य मौजूद थे।

छह वर्षिय नातिन के साथ चचेरे नाना ने किया दुष्कर्म

प्रात: किरण, संवाददाता

सोनवर्षा राज/सहरसा। प्रखंड क्षेत्र के बसनहीं थाना क्षेत्र स्थित सहशौल पंचायत के गरेड़ी टोला में रिश्ते के नाना द्वारा अपनी छह वर्षिय नातिन के साथ दुष्कर्म करने का जघन्य मामला सामने आया हैं ।दुष्कर्म के दौरान बच्ची को लहुलहान देख दुष्कर्मी उसे छोड़ गांव से फरार हो गया ।घटना की जानकारी मिलते ही पिड़ीत बच्ची के वृद्ध नाना द्वारा उसका ईलाज एक नीजी क्लिनिक में करवाया गया हैं ।घटना के बाबत मिली जानकारी अनुसार गरेडी.टोला निवासी राजेन्द्र मंडल की छह वर्षिय नातिन सोमवार की शाम अपने दरवाजे पर खेल रही थी ।इस दौरान उसके नाना सहशौल बाजार तथा नानी व मां पास के अपने मकई के खेत में कमौनी करने गई हुई थी ।दरवाजे पर अकेले खेल रही बच्ची को देख बगल के चचेरे नाना 55 वर्षिय मनोज पाल ने उसे पैसे देकर अपने सुने घर में ले जाकर दुष्कर्म करने लगा ।इस दौरान बच्ची को दर्द से छटपटाते और लहुलहान होते देख वो बच्ची को छोड़कर खेत में कमौनी कर रही उसकी मां के पास जाकर कहा कि तुम्हारी बेटी को कूछ हो गया है ।पिड़ित बच्ची की मां अपनी बेटी को लहुलहान देखी तब उसने अपने वृद्ध पिता को बुलाकर बच्ची को लेकर सोनवषार्राज स्थित एक नीजी क्लिनिक में भर्ती करवाया ।जहां बच्ची का इलाज किया गया ।मंगलवार सारे दिन मामले की ग्रामीणों द्वारा पंचायत के माध्यम से सलटाने का प्रयास किया गया ।लेकिन आरोपी के गांव से भाग जाने की वजह से बात नहीं बनी ।पीड़ित बच्ची के नाना ने बताया की उसके सभी पूत्र व बच्ची के पिता परदेश में है जो गूरूवार को घर पहूंचेगे तब वो सब थाना जाएगें। इस संबंध में जानकारी के लिए बसनहीं थाना अध्यक्ष से संपर्क करने का प्रयास किया तो थाना अध्यक्ष का मोबाइल ऑफ आया ।

भैंस को पीट पीट कर हत्या करने वाले एक अपराधी गिरफ्तार, भेजा जेल

पतरघट/सहरसा। रात्री में अज्ञात अपराधकर्मियों द्वारा भैंस चोरी करने के क्रम में भैंस को अज्ञात अपराधकर्मियों द्वारा पीट-पीट कर एवं गला दबाकर हत्या कर देने के आरोप में ग्राम- भद्दी निवासी नागेंद्र सिंह के द्वारा एक काण्ड प्रतिवेदन कराया गया था। जिसपर सौरबाजार पतरघट ओपी में मामला दर्ज की गई । वही इस काण्ड के सफल उद्भेदन एवं के साथ गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधीक्षक सहरसा के निर्देशन में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर सहरसा के नेतृत्व में पतरखर ओ०पी पुलिस एवं तकनीकी शाखा सहरसा के साथ एक रक्‍ळ टीम का गठन किया गया । जिसके बाद इस काण्ड का सफल उद्नेछन करते हुए एक प्राथमिकी अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया ।जिसमे गिरफ्त में आए पुरुषोत्तम कुमार है जिसके पास से दो मोबाइल बरामद किया ।

श्रीश्याम प्रभु की 11वीं महाज्योति महोत्सव पर निकाली गई निशान यात्रा

प्रात: किरण, संवाददाता

मुरलीगंज,मधेपुरा शहर के श्रीश्याम परिवार की ओर से गुरूवार को श्रीश्याम प्रभु की 11वीं महाज्योति एवं भजन जागरण कार्यक्रम को लेकर भव्य निशान यात्रा निकाली गई। शहर के गोलबाजार स्थित बलभद्र भवन परिसर में विधि विधान के साथ पूजन के बाद भव्य विशाल निशान यात्रा निकाली गई। निशान यात्रा में श्रद्धालुओ की भीड़ उमड़ी रही। आयोजन स्थल से निशान यात्रा निकलकर गोलबाजार, हाट बाजार, मिडिल चौक, दुर्गा स्थान चौक, महावीर चौक होते हुए कार्यक्रम स्थल पर पहुंच कर समापन हुआ। गाजे बाजे ढ़ोल नगारे भक्तिभजन के साथ श्रीश्याम परिवार के सदस्यों निशान यात्रा में भाग लिया।

जदयू-बीजेपी सरकार के राज में कानून व्यवस्था का निकला दिवाला : राकेश कुमार ठाकुर

समस्तीपुर, प्रात: किरण संवाददाता

जिले के शिवाजीनगर प्रखंड के रहटोली निवासी व राजद शिक्षक प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष शत्रुध्न यादव के पुत्र विजेन्द्र यादव को अपराधियों द्वारा गोली मार कर जख्मी करने की घटना की राजद ने तीव्र निंदा की है। राजद जिला प्रवक्ता राकेश कुमार ठाकुर ने राज्य की कानून व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। राजद प्रवक्ता ने कहा कि जदयू-बीजेपी सरकार के राज में कानून व्यवस्था का दिवाला निकल चुका है। बदमाश सरेआम कानून की धज्जियां उड़ा रहे हैं। कहा कि जब से पुनः जदयू का भाजपा से गठबंधन हुआ है तब से अपराध की घटनाएं चरम पर है और सरकार इसे रोक नहीं पा रही है। बढ़ते हुए अपराध की घटनाओं से पूरा बिहार आहत है और बिहार की छवि पर भी प्रतिकूल असर पड़ा है।

सम्पादकीय

क्वाड अब प्राथमिकता नहीं

2018 में चीन के साथ शुरू हुए शीत युद्ध के क्रम में संभवतः अमेरिका को क्वाड की जरूरत महसूस हुई, तो इस समूह को खूब महत्त्व मिला। लेकिन अब बनी परिस्थितियों में यह समूह उसके लिए उतना अहम नहीं रह गया है। अमेरिका की इंडो-पैसिफिक रणनीति के तहत बनाया गया समूह- क्वाड्रैंगुलर सिक्युरिटी डॉयलॉग (क्वाड) अमेरिका की प्राथमिकता में नीचे चला गया है। इस बात का संकेत तो तभी मिल गया, जब पिछले महीने क्वाड शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए नई दिल्ली आने से अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने इनकार कर दिया। इस कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह योजना कामयाब नहीं हो सकी कि क्वाड में शामिल अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के नेता 25 जनवरी को क्वाड शिखर सम्मेलन में भाग लेने के बाद 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस परेड में साझा मुख्य अतिथि होंगे। अब नई दिल्ली स्थित अमेरिकी राजदूत एरिक गारसेटी स्पष्ट किया है कि क्वाड का संचालक की कुर्सी पर भारत विराजमान है और अमेरिका उसकी बगल की सीट पर बैठा है, जिसके पास सिर्फ भटकाव सुधार का हैंडल है। इसका अर्थ यह संदेश है कि क्वाड को क्या भूमिका देनी है, यह भारत खुद तय करे। उन्होंने जो कहा कि उसका अर्थ यह भी है कि फिलहाल क्वाड दिशाहीन है। गारसेटी ने यह साफ कर दिया कि राष्ट्रपति जो बाइडेन अगले नवंबर में होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के पहले भारत नहीं आ पाएंगे। उसी परिचर्चा में भारत के तत्कालीन विदेश सचिव श्याम शरण ने यह राज खोला कि जब 2007 में तत्कालीन जापानी प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने पहली बार क्वाड का प्रस्ताव रखा था, तब अमेरिका ने भारत को संदेश भेजा था कि वह इस योजना को ज्यादा प्रोत्साहित ना करे। वजह थी कि तब अमेरिका ऐसा कदम उठाने से बचना चाहता था जो चीन को नागवार गुजरे। 2018 में चीन के साथ शुरू हुए शीत युद्ध के क्रम में संभवतः अमेरिका को क्वाड की जरूरत महसूस हुई, तो इस समूह को खूब महत्त्व मिला। लेकिन अब बनी परिस्थितियों में अमेरिका चीन के साथ युद्ध से बचने की नीति पर चल रहा है। व्यापारिक क्षेत्र में संबंध विच्छेद के बजाय संबंध में जोखिम घटाने की नीति पहले ही अपनाई जा चुकी है। तो लाजिमी है कि क्वाड भी उसकी प्राथमिकता में नीचे चला गया है। अब यह बाकी तीन देशों को सोचना है कि क्वाड सचमुच कितना उनके अपने हित में है?

एक देश, एक संहिता क्यों?

समान नागरिक संहिता न तो सही है और न ही पूरी तरह गलत है। इसे लागू करने की भी जल्दी नहीं है, क्योंकि न तो संवैधानिक बाध्यता है और न ही तुरंत आवश्यकता है। गोवा भाजपा-शासित राज्य है, वहां नागरिक संहिता कानून के तौर पर लागू है। उत्तराखंड विधानसभा में नागरिक संहिता का बिल पेश किया जा चुका है। वह पारित भी हो जाएगा। गुजरात और असम ने भी ऐसी ही जुबान बोलनी शुरू कर दी है। ये सभी भाजपाई राज्य हैं। ऐसा नहीं है कि विवाह, तलाक और उत्तराधिकार संबंधी लैंगिक अन्याय को किसी ने संबोधित नहीं किया। केरल का उदाहरण सामने है, जहां 1975 में हिंदू विवाह कानून में संशोधन कर उत्तराधिकार अधिकारों में महिला को समानता दी गई। दक्षिणी राज्यों और महाराष्ट्र ने भी उसका अनुसरण किया और कानून में सुधार किया। लैंगिक अपराध और दोष अब भी होंगे। ऐसा भी नहीं है कि लिव इन रिलेशनशिप की आड़ में ऐयाशी और टाइम पास संबंधों पर लगाम कसने के लिए समान नागरिक संहिता ही एकमात्र विकल्प है। उसके लिए अलग बिल पारित कर कानून बनाया जा सकता है। लिव इन के लिए बाकायदा पंजीकरण या माता-पिता की सहमति आदि के जो प्रावधान उत्तराखंड बिल में किए गए हैं, वे तत्संबंधी कानून में भी किए जा सकते हैं। वैसे भी लिव इन को नियंत्रित करने और विनियमित करने का काम नागरिक संहिता का नहीं है। यह नैतिक-पुलिस का ही उदाहरण है। बिल के मुताबिक, यदि लिव इन के पंजीकरण में विलंब होता है, तो आपको जेल में डाला जा सकता है और जुमार्ना भी ठोंका जा सकता है। लिव इन संबंधी प्रावधान मध्यकालीन सामाजिक संहिता के हिस्से लगते हैं। बहरहाल ऐसा भी नहीं है कि समान नागरिक संहिता से भारतीय जीवन पर पश्चिमी संस्कृति के अंधड़ के प्रभाव नहीं पड़ेंगे अथवा उनसे मुक्त हुआ जा सकेगा। हम तो संविधान और लोकतंत्र के लिए पश्चिम के ही मुखापेक्षी रहे हैं। सांस्कृतिक निशान कैसे मिट सकते हैं? सिर्फ बहुविवाह, हलाला, विवाह-तलाक के समान अधिकार और उत्तराधिकार के लिए, एक राज्य के स्तर पर, नागरिक संहिता की कोई तार्किकता नहीं है। बेशक संविधान के अनुच्छेद 44 में समान नागरिक संहिता को रखा गया है और सरकार से अपेक्षा की गई है कि वह अपने नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता लागू करेगी। दरअसल जब संविधान बनाया जा रहा था और आज की सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक परिस्थितियों में बड़े गहरे फासले हैं। संविधान में भी 100 से अधिक संशोधन किए जा चुके हैं। सर्वोच्च अदालत ने भी नागरिक संहिता लागू करने की पैरवी की है। उसके कथन का नए सिरे से अध्ययन और मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यदि देश में एक ही नागरिक संहिता की जरूरत है, तो केंद्र की मोदी सरकार नए जनादेश के बाद उस पर कार्रवाई शुरू करे। चुनावों से पहले राज्य-दर-राज्य में इसे लागू करना ह्यअन्याय की राजनीतिह्ल है, क्योंकि एक बहुत बड़ा भारतीय वर्ग इसके खिलाफ है। वे सडकों पर उतरेंगे, आंदोलन करेंगे, अराजकता और कानूनहीनता फैलेगी। क्या आम चुनाव से पहले ऐसा माहौल बनाना भी राजनीतिक रणनीति है? दरअसल समान नागरिक संहिता 1951 में ह्यजनसंघह्ल के गठन से ही प्रमुख बुनियादी एजेंडे का हिस्सा रही है। भाजपा ने भी उसे धारण किया और चुनाव घोषणा-पत्रों में भी उसे शामिल रखा। अब भाजपा देश के 17-18 राज्यों में सत्तारूढ़ है, केंद्र में भी बीते 10 साल से उसकी सरकार है, लिहाजा वह एजेंडा पूरा किया जा रहा है। एजेंडे में से अनुच्छेद 370 पूरा किया जा चुका है। बांग्लादेशी घुसपैठियों को देश से भगाने का एजेंडा फिलहाल हाशिए पर है। अयोध्या राम मंदिर बन रहा है। अब समान नागरिक संहिता की बारी है। यदि इरादा सामाजिक परिवर्तन और समरूपता का है, तो नागरिक संहिता ह्यराष्ट्रीयह्ल होनी चाहिए। राज्य स्तर पर प्रयासों से क्रांतिकारी बदलाव संभव नहीं।

जोखिम को समझना जरूरी

दीर्घकाल में अमेरिका की वित्तीय स्थिति और कमजोर होगी। यह बात फेडरल रिजर्व के प्रमुख ने स्वीकार की है। स्पष्टतः अमेरिकी संकट का पूरी दूनिया की वित्तीय व्यवस्था की मुसीबत डाल देगा। इस जोखिम से बचने की तैयारी अभी से की जानी चाहिए। अमेरिका के केंद्रीय बैंक-फेडरल रिजर्व के प्रमुख जेरोम पॉवेल ने एक ऐसी बात कही है, जिससे विश्व अर्थव्यवस्था के लिए उभर रहे खतरे का संकेत मिलता है। एक इंटरव्यू में पॉवेल ने कहा- मैं ये बात कहूंगा कि अमेरिका जिस वित्तीय राह पर है, वह दीर्घकालिक नजरिए से टिकाऊ नहीं है। इसका सीधा अर्थ यह है कि अमेरिका सरकार पर कर्ज अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर की तुलना में अधिक से तेजी से बढ़ रहा है। यह उस बात की स्वीकारोक्ति है, जिसकी चर्चा अनेक विशेषज्ञ काफी समय से कर रहे हैं। अमेरिका सरकार पर कुल कर्ज 34 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा हो चुका है, जबकि अमेरिका की जीडीपी 24-25 ट्रिलियन डॉलर ही है। इस कर्ज में से 8.9 ट्रिलियन डॉलर अगले वर्ष चुकाने होंगे। इस बीच 2024 में अमेरिका राजकोषीय घाटा 1.4 ट्रिलियन डॉलर रहने का अनुमान लगाया गया है। मतलब यह कि अमेरिका सरकार को खर्च चलाने और अपनी ऋण देनदारियां निभाने के लिए एक साल में दस ट्रिलियन डॉलर का और कर्ज लेना होगा। मतलब साल भर बाद कर्ज का बोझ और बढ़ा हुआ होगा। इस बीच देश में ब्याज दरें घटाने की मांग जोर पकड़ती जा रही है। फेडरल रिजर्व ने संकेत दिया है कि इस साल चार कटौतियां की जा सकती हैं। उस हाल में अमेरिकी बॉन्ड्स पर कम ब्याज मिलेगा, जिससे उनमें निवेशकों की दिलचस्पी घट सकती है। इस संभावना के मद्देनजर अभी ही विश्व बाजार में सोने की कीमत लगभग 2200 डॉलर प्रति औंस के ऊंचे स्तर पर पहुंच गई है। यानी लोग स्वर्ण में पैसा लगाना अधिक लाभदायक मान रहे हैं। आशंका है कि इन कारणों से अमेरिकी सरकार को अपने बॉन्ड्स पर बाजार दर से अधिक ब्याज देना पड़ सकता है। इससे दीर्घकाल में उसकी वित्तीय स्थिति और कमजोर होगी। यही बात अब पॉवेल ने स्वीकार की है। चिंता की बात यह है कि अमेरिकी वित्तीय बाजार से विश्व अर्थव्यवस्था गहराई से जुड़ी हुई है। उसका संकट का नतीजा पूरी दूनिया की वित्तीय व्यवस्था की मुसीबत के रूप में सामने आएगा। इसलिए भारत सहित तमाम देशों को उससे बचने की तैयारी अभी से शुरू कर देनी चाहिए।

दिल्ली में दो सरकारों की लड़ाई

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का दावा है कि उनकी सरकार कुल बजट का 14 फीसदी के करीब हिस्सा स्वास्थ्य पर खर्च करती है, जबकि भारत सरकार का खर्च दो फीसदी के करीब है। दिल्ली सरकार का दावा है कि उसने दिल्ली की स्वास्थ्य सेवाओं में बड़ा सुधार कर दिया है। दूसरी ओर उप राज्यपाल ने तीन फरवरी को मुख्यमंत्री को चिट्ठी लिख कर मीडिया रिपोर्ट के हवाले दिल्ली के अस्पतालों की दयनीय स्थिति के बारे में सवाल पूछे हैं। दिलचस्प बात यह है कि केजरीवाल ने अस्पतालों की दयनीय स्थिति के आरोपों को खारिज नहीं किया है, बल्कि कहा है कि दिल्ली के वित्त व स्वास्थ्य सचिवों के कारण ऐसा है। उनका कहना है कि अगर इन दो सचिवों को हटा दिया जाए तो स्थिति सुधार जाएगी। सोचें, क्या सही है? विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सुविधाओं का दावा या सचिवों की वजह से अस्पतालों की दयनीय दशा ?हकीकत यह है कि दिल्ली के अस्पताल बद से बदतर हो गए हैं। केजरीवाल भले जो भी दावा करें लेकिन दिल्ली के लोग भी इलाज के लिए दिल्ली के अस्पतालों को प्राथमिकता नहीं देते हैं। वे केंद्र सरकार के अस्पतालों जैसे एम्स, सफदरजंग, राम मनोहर लोहिया, लेडी हार्डिंग जैसे अस्पतालों में जाना चाहते हैं। दिल्ली के अस्पताल उनकी मजबूरी हैं।

अजीत द्विवेदी-
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

दिल्ली में सरकार की अनोखी व्यवस्था है। राजधानी दिल्ली में दो सरकारें हैं। एक दिल्ली के लोगों की चुनी हुई सरकार, जो विधानसभा के प्रति जिम्मेदार है और जिसके मुखिया अरविंद केजरीवाल हैं तो दूसरी केंद्र की सरकार, जो संसद के प्रति जिम्मेदार है और दिल्ली में जिसके मुखिया उप राज्यपाल विनय कुमार सक्सेना हैं। केंद्र ने एक कानून बनाया है, जिसका नाम जीएनसीटीडी एक्ट यानी गवर्नमेंट ऑफ नेशनल टेरेटरी दिल्ली एक्ट है और इसके मुताबिक उप राज्यपाल ही असली सरकार हैं। केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी राज्य में विपक्ष में है और राज्य में सत्तारूढ़ दल केंद्र में विपक्ष में है। इससे दिल्ली की प्रशासनिक व्यवस्था और भी अनोखी हो गई है। जो सरकार में है वह विपक्ष में भी है और जो विपक्ष में है वह सरकार में भी है। इसलिए दोनों अपने को दिल्ली का मालिक मानते हैं और दिल्ली की सत्ता के लिए लड़ते रहते हैं। दोनों के बारे में एक और अनोखी बात यह है कि दोनों प्रचार की राजनीति और लड़ाई में माहिर हैं। इसका नतीजा यह है कि दिल्ली में सब कुछ ठप्प पड़ा हुआ है। दोनों पार्टियों के झगड़े से दिल्ली और समूचे एनसीआर के लोगों को किस तरह की मुश्किलें हैं, इसका एक नमूना दो फरवरी को देखने को मिला, जिस दिन दोनों पार्टियों ने अलग अलग मुद्दों पर प्रदर्शन किया था। आम आदमी पार्टी ने आरोप लगाया है कि भाजपा ने चंडीगढ़ के मेयर के चुनाव में जनादेश चुरा लिया। उसने 20 वोट होने के बावजूद आप और कांग्रेस के आठ वोट अवैध कर दिए और अपने 16 वोट के आधार पर मेयर का चुनाव जीत गई। इसे लेकर आप ने दिल्ली में प्रदर्शन किया तो दूसरी ओर भाजपा ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया और कहा कि वे गिरफ्तारी के डर से शराब घोटाले में पूछताछ के लिए ईडी के सामने पेश नहीं हो रहे हैं। इस प्रदर्शन में शामिल होने के लिए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान भी पहुंचे थे और आप ने पंजाब, हरियाणा हर जगह से लोग बुलाए थे। दूसरी ओर भाजपा ने भी दिल्ली के साथ साथ पूरे एनसीआर से लोगों को जुटाया। नतीजा यह हुआ है कि दिल्ली की कई सीमाओं पर बैरिकेडिंग हुई और दिल्ली के अंदर कई सड़कें बंद रहीं। कामकाजी दिन में पूरे दिन सड़कों पर भीषण जाम लगा रहा और लोग संघर्ष करते रहे। दोनों की लड़ाई का यह एक छोटा नमूना है। अभी एक नया मामला दिल्ली के अस्पतालों का सामने आया है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का दावा है कि उनकी सरकार कुल बजट का 14 फीसदी के करीब हिस्सा स्वास्थ्य पर खर्च करती है, जबकि भारत सरकार का खर्च दो फीसदी के करीब है। दिल्ली सरकार का दावा है कि उसने दिल्ली की स्वास्थ्य सेवाओं में बड़ा सुधार कर दिया है। दूसरी ओर उप राज्यपाल ने तीन फरवरी को मुख्यमंत्री को चिट्ठी लिख कर मीडिया रिपोर्ट के हवाले दिल्ली के अस्पतालों की दयनीय स्थिति के बारे में सवाल पूछे हैं। दिलचस्प बात यह है कि केजरीवाल ने अस्पतालों की दयनीय स्थिति के आरोपों को खारिज नहीं किया है, बल्कि कहा है कि दिल्ली के वित्त व स्वास्थ्य सचिवों के कारण ऐसा है। उनका कहना है कि अगर इन दो सचिवों को हटा दिया जाए तो स्थिति सुधार जाएगी। सोचें, क्या सही है? विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सुविधाओं का दावा या सचिवों की वजह से अस्पतालों की दयनीय दशा?हकीकत यह है कि दिल्ली के अस्पताल बद से बदतर हो गए हैं। केजरीवाल भले जो भी दावा करें लेकिन दिल्ली के लोग भी इलाज के लिए दिल्ली के अस्पतालों को प्राथमिकता नहीं देते हैं। वे केंद्र सरकार के अस्पतालों जैसे एम्स, सफदरजंग, राम मनोहर लोहिया, लेडी हार्डिंग जैसे अस्पतालों में जाना चाहते हैं। दिल्ली के अस्पताल उनकी मजबूरी हैं। विश्वस्तरीय अस्पताल बनाने के दावे की हकीकत यह है कि ज्यादातर अस्पतालों में मरीजों के जांच की सुविधा नहीं है और आए दिन खबर आ रही है कि मरीज भटकते रहे और अस्पताल ने भर्ती नहीं किया, जिससे मरीज की जान चली गई। दो जनवरी को दिल्ली पुलिस एक घायल को लेकर भटकती रही थी। दिल्ली के तीन अस्पतालों- जग प्रवेश चंद, जीटीबी और एलएनजेपी में इलाज की बुनियादी सुविधाएं नहीं मिलीं और आठ घंटे भटकने के बाद घायल को राम मनोहर लोहिया ले जाया गया, जहां उसने दम तोड़ दिया। यह एक प्रतिनिधि घटना है। ऐसी घटनाएं आए दिन हो रही हैं। ऊपर से आरोप है कि दिल्ली सरकार की मुफ्त जांच योजना के तहत भारी घोटाला हुआ है। मोहल्ला क्लीनिक से लेकर दिल्ली सरकार के अस्पतालों में डॉक्टरों की हाजिरी अपने आप बनती रही, फर्जी मरीजों का इलाज चलता रहा और उनकी फर्जी जांच निजी लैब्स में होती रही। सैकड़ों करोड़ रुपए के इस घोटाले की जांच के आदेश दिए गए हैं। दिल्ली सरकार ने सड़क दुर्घटना में घायलों को अस्पताल पहुंचाने की फरिश्ते योजना शुरू की थी वह बंद है क्योंकि सरकार का दावा है कि उप राज्यपाल ने राशि की मंजूरी रोक रखी है। चाहे दिल्ली सरकार की अकर्मण्यता की वजह से स्वास्थ्य सेवाएं बिगड़ी हों या सचिवों के कारण और उप राज्यपाल के फंड रोकने के कारण बिगड़ी हों लेकिन हकीकत यह है कि दिल्ली के लोगों को विश्वस्तरीय तो छोड़िए सामान्य स्वास्थ्य सुविधाएं भी नहीं मिल रही हैं। स्वास्थ्य के अलावा दिल्ली सरकार का दूसरा दावा विश्वस्तरीय शिक्षा व्यवस्था का है। इसकी अलग कहानी है। दिल्ली विश्वविद्यालय के 12 कॉलेज ऐसे हैं, जिनको फंड दिल्ली सरकार देती है। शिक्षा के लिए कथित तौर पर प्रतिबद्ध दिल्ली सरकार ने इन कॉलेजों का फंड रोक दिया है। दिल्ली सरकार चाहती है कि उसे इन कॉलेजों के प्रशासन का पूरा अधिकार मिले या इन कॉलेजों को दिल्ली विश्वविद्यालय से निकाल कर राज्य सरकार के विश्वविद्यालय के अधीन कर दिया जाए तो राज्य सरकार फंड देगी।

हरदा हादसा: अब जो होगा, वह भी लोगों को पता है

वहां के कलेक्टर के आदेश का तत्कालीन (अब इंदौर) संभागायुक्त माल सिंह भायडिया द्वारा भी शत-प्रतिशत पालन के निर्देश दिए गए होते तो फैक्ट्री बंद रहती, ऐसा नहीं हुआ तो दोषी प्रशासनिक अधिकारी भी हैं, क्योंकि राजनीतिक संरक्षण बिना इतनी ढील देना संभव ही नहीं !मप्र में पटाखों, बारुद से विस्फोट की यह पहली घटना नहीं है। मुरैना, राऊ में पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट में हुई मौतें, पेटलावद में 7 दर्जन से अधिक निदोर्षों के चीथड़ों की पोटलियों वाले लोमहर्षक दृश्य और जांच समिति की घोषणा लोग भूले नहीं हैं। इससे पहले बालाघाट में 29 और दमोह 7 लोगों की मौत भी ऐसे ही विस्फोट में हो चुकी है। इन सारे विस्फोट के बाद अब यदि लोगों को यह लगने लगे कि 18 वर्ष के बाद बस सीएम बदले हैं... लापरवाही का ढर्रा वैसा ही चल रहा है तो ताज्जुब नहीं होना चाहिए! अब जो होगा, वह भी लोगों को पता है... गुना बस हादसे के बाद जिस तरह बसों की चैकिंग का अभियान चला था, वैसे ही इंदौर, भोपाल, दमोह, बालाघाट, हरदा आदि शहरों में पटाखा निमार्ताओं, दुकानदारों के खिलाफ सख्ती पखवाड़ाइ चलाकर लापरवाही की आग पर फोम डाल दिया जाएगा।

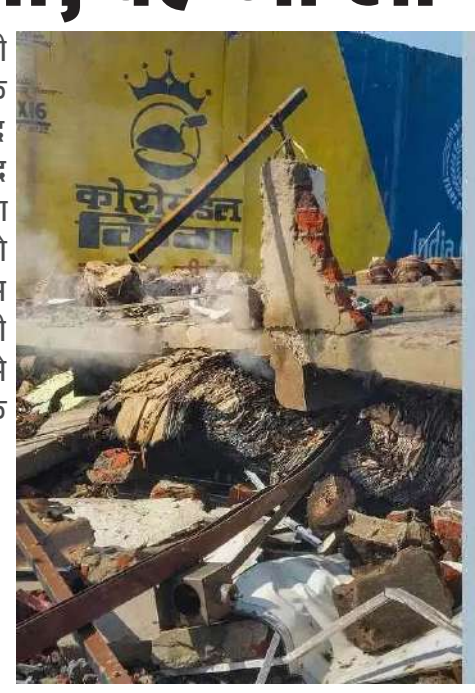

कीर्ति राणा-
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

मध्यप्रदेश के हरदा में अवैध तरीके से चल रही पटाखा फैक्ट्री में लगी आग से हुई तबाही में यह प्रश्न गौण हो गया है कि कितने लोग असमय मौत का शिकार हुए? हरदा ही नहीं, देश के लोगों को यह पूछने का हक है कि सालों से यह फैक्ट्री वो भी बीच रहवासी क्षेत्र में चल कैसे रही थी? जांच समिति बना ही दी है, जब किसी मामले में सरकार ऐसी समिति गठन में तत्परता दिखाए तो आमजन याद करने लगता है कि जनहानि वाले मामलों को लेकर पहले जो जांच समितियां गठित की गईं, उनकी फाइलों ने फैसले उगले भी या नहीं! गुना बस हादसे में कलेक्टर, एसपी पर गाज गिरी थी। आज मुख्यमंत्री हरदा जा ही रहे हैं... ऐसा ही कुछ निर्णय लेकर अपनी सरकार पर लगे दाग धोने की तत्परता दिखा सकते हैं !हरदा की आग में जिन निदोर्षों की बलि चढ़ गई, उनके परिवारों को न तो फैक्ट्री मालिक राजेश अग्रवाल और दिनेश की गिरफ्तारी से संतोष मिलेगा और न ही मुआवजे की राशि उनके आंसू पोंछ पाएगी। इसी फैक्ट्री में पहले भी हुए विस्फोट में दो लोगों की जान जा चुकी है। वहां के कलेक्टर के आदेश का तत्कालीन (अब इंदौर) संभागायुक्त माल सिंह भायडिया द्वारा भी शत-प्रतिशत पालन के निर्देश दिए गए होते तो फैक्ट्री बंद रहती, ऐसा नहीं हुआ तो दोषी प्रशासनिक अधिकारी भी हैं, क्योंकि राजनीतिक संरक्षण बिना इतनी ढील देना संभव ही नहीं !मप्र में पटाखों, बारुद से विस्फोट की यह पहली घटना नहीं है। मुरैना, राऊ में पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट में हुई मौतें, पेटलावद में 7 दर्जन से अधिक निदोर्षों के चीथड़ों की पोटलियों वाले लोमहर्षक दृश्य और जांच समिति की घोषणा लोग भूले नहीं हैं। इससे पहले बालाघाट में 29 और दमोह 7 लोगों की मौत भी ऐसे ही विस्फोट में हो चुकी है। इन सारे विस्फोट के बाद अब यदि लोगों को यह लगने लगे कि 18 वर्ष के बाद बस सीएम बदले हैं... लापरवाही का ढर्रा वैसा ही चल रहा है तो ताज्जुब नहीं होना चाहिए! अब जो होगा, वह भी लोगों को पता है... गुना बस हादसे के बाद जिस तरह बसों की चैकिंग का अभियान चला था, वैसे ही इंदौर, भोपाल, दमोह, बालाघाट, हरदा आदि शहरों में पटाखा निमार्ताओं, दुकानदारों के खिलाफ सख्ती पखवाड़ाइ चलाकर लापरवाही की आग पर फोम डाल दिया जाएगा। कलेक्टर, एसपी और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों पर कार्रवाई तो होनी ही चाहिए, लेकिन दंडित किए जाने से पहले इन अधिकारियों से बंद कमरे में ही सही... सरकार पुचकार के यह भी तो पूछ ले कि हरदा के पूर्व विधायक कमल पटेल हों या बैतूल के सांसद दुगार्दास उईके... इन जनप्रतिनिधियों या इनके पों ने वर्षों से संचालित हो रही अवैध पटाखा फैक्ट्री के सरगनाओं को संरक्षण क्यों दे रखा था?ढाई एकड़ में फैली फैक्ट्री के अलावा आसपास के पचास घरों में कुटीर उद्योग के रूप में हो रहे पटाखों के निर्माण से जिला प्रशासन क्यों मुंह फेरे रहा? पटाखा फैक्ट्री मालिकों के घरों पर बुलडोजर चलाए जाने की सख्ती तो सरकार दिखाएगी ही, लेकिन इन्हें संरक्षण पूर्व मुख्यमंत्री के प्रिय जनप्रतिनिधियों के साथ ही इस सरकार में ठसक दिखाने वाले हरदा-बैतूल के जनप्रतिनिधियों से भी मिलता रहा है। सख्त फैसले लेकर खुद को पिछली सरकार से बेहतर दिखाने की कोशिश में लगे डॉ. मोहन यादव को पटाखा फैक्ट्री के संचालकों को संरक्षण देने वाले नेताओं-अधिकारियों के घरों पर भी बुलडोजर चलाने का साहस दिखाना चाहिए। हरदा पटाखा फैक्ट्री को 2022 में कलेक्टर ऋषि गर्ग ने सील करने के आदेश जारी किए थे। सरकार को तत्कालीन संभागायुक्त मालसिंह भायडिया से भी पूछना चाहिए कि ऐसी क्या मजबूरी रही कि इस आदेश के विरुद्ध स्टे क्यों दिया?विस्फोट पीड़ित लोगों के आंसू बयां कर रहे हैं कि शिकायत करते रहने के बाद भी अधिकारियों ने कार्रवाई नहीं की। ऐसी क्या मजबूरी थी कि ट्रकों से बारुद आता रहा और पुलिस प्रशासन मुस्तैदी दिखाने दिखाने के बजाय मैत्री-भाव दशार्ता रहा और जिला प्रशासन की आंखों पर भी पोलिटिकल प्रेशर की पट्टी बंधी रही। हरदा हादसे का कारण बने प्रशासनिक अधिकारियों पर भी सरकार ऐसी कार्रवाई करे कि बाकी जिलों के अधिकारियों को भी समझ आ जाए कि बदले हुए निजाम में अब ढील-पोल नहीं चलेगी।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में विकास की एक नई सुबह

जी. किशन रेड्डी-
(लेखक, भारत सरकार के केन्द्रीय उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री हैं)

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के राज्यों के अनूठे एवं खूबसूरत पहाड़ों व घाटियों में बदलाव की बयार बह रही है।दस वर्षों के अथक प्रयासों के बाद, यहां शांति और विकास का एक नया युग शुरू हुआ है। जब माननीय प्रधानमंत्री ने इन आठ राज्यों को भारत की अष्टलक्ष्मी, विकास और समृद्धि का अग्रदूत कहा, तो पहली बार इनकी अंतर्निहित क्षमताओं को स्वीकार किया गया।इस क्षेत्र मेंतेज गति से स्थापित होती सड़क, रेल और हवाई कनेक्टिविटी के जरिए इतिहास रचा जा रहा है। जहां तक गुणवत्ता का प्रश्न है, तो ये अवसंरचनाएं शेष भारत में उपलब्ध विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे जैसी ही हैं। यहां का युवा अब बंद, चक्का जाम और हड़ताल से परेशान नहीं हैं, बल्कि अब उनके सपने पहले से कहीं ज्यादा सच हो रहे हैं। व्यापार को आसान बनाया गया है और पर्यटकोंके लिए आकर्षण के नए केन्द्रबनाए गए हैं।यह सब बेहतर कनेक्टिविटी के कारण संभव हुआ है। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, अपने आप में, अभूतपूर्व राजनीतिक इच्छाशक्ति, प्रेरणादायक समर्पण और प्रत्येक भारतीय के लिए बेहद प्रिय एक लक्ष्य के सामूहिक स्वामित्व की गाथा है और वह लक्ष्य है-भारत के ईशान कोण में प्रगति व विकास की एक नई सुबह की शुरूआत! जैसा कि माननीय गृह मंत्री ने हाल ही में संपन्न एनईसी की 71वीं पूर्ण बैठक के दौरान सही ही कहा है कि पिछला दशक उत्तर-पूर्वी भारत के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय रहा है। इस परिवर्तनकारी दृष्टिकोण ने न केवल इस क्षेत्र में संघर्ष-केंद्रित-प्रशासन के पारंपरिक मॉडल की अवधारणा को तोड़कर शासन के विकास-उन्मुख मॉडल को खड़ा किया है, बल्कि एक मजबूत एवं अपेक्षाकृतअधिक एकजुट भारत को बढ़ावा देते हुए सांस्कृतिक और सामाजिक एकीकरण के बीज बोए हैं। हाल ही में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में पहली अंतर्राष्ट्रीय रेलवे कनेक्टिविटी, अगरतला-अखौरा रेल लिंक को हरी झंडी दिखाना, इस बात का गौरवपूर्ण उदाहरण है कि कैसे एक समय उपेक्षित रहा भारत का यह सुदूरवर्ती इलाका अबअंतर्राष्ट्रीय व्यापार और पर्यटन मानचित्र पर उभर आया है। जीवंत संस्कृतियों और प्रचुर संसाधनों से लैस भारत का उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, एक ऐसा इलाका है जिसने काफी लंबे समय तक राजनीतिक उदासीनता का दंशझेला है। वास्तविक प्रतिबद्धता की कमी को छुपाने के लिए अक्सर हिंसा और अस्थिरता को एक सुविधाजनक ओट के रूप में इस्तेमाल किया जाता था और सिद्धांत एवं व्यवहार के बीच की बड़ी खाई बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देती थी। हालांकि, पिछले दशक में प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में किए गए निरंतर प्रयासों से इस क्षेत्र के अधिकांश हिस्सों में शांति और सुरक्षा का वातावरणबना है। सरकार भौगोलिक और सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियों का डटकर सामना करते हुए विकास एवं समृद्धि के राजमार्ग तैयार कर रही है। अरुणाचल के किबिथू को देश के अंतिम गांव के बजायभारत के पहले गांव और राष्ट्रव्यापी वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के लॉन्च पैड के रूप में पुनर्कल्पित करना उत्तर-पूर्वी क्षेत्रएवं इसके सुदूरवर्तीइलाकों के विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। वर्ष 2014 के बाद से 50 से अधिक मंत्रालयों द्वारा क्षेत्रीय विकास में पांच लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश के साथ, यह क्षेत्र विकास के अवसरों का लाभ उठाने के लिए पूरी तरह तैयार है। वर्ष 2014 से, यहां एक वित्तीय क्रांति जारी है, जिसके तहत 54 केन्द्रीय मंत्रालयों द्वारा व्यय में 233 प्रतिशत की भारी वृद्धि (2014 में 24,819 करोड़ रुपये से बढ़कर 2023 में 82,690 करोड़ रुपये) या डोनर मंत्रालय के लिए बजट आवंटन में 152 प्रतिशत की वृद्धि (2014 में 2,332 करोड़ रुपये से बढ़कर 2023 में 5,892 करोड़ रुपये)की गई है। यह तथ्य एक ऐसे ठोस वित्तीय परिदृश्य की ओर इंगित करता है, जो परिवर्तनकारी एजेंडे को बढ़ावा देता है। हालिया पीएम-डिवाइन योजना, जिसमें विभिन्न राज्यों की जरूरतों के लिए 6,600 करोड़ रुपये की सहायता का वादा किया गया है, इस प्रतिबद्धता का प्रमाण है। पिछले दशक में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में हासिल की गई प्रगति ने इस क्षेत्र को भारत के एक सुदूरवर्तीइलाके से बदलकर विकास के नए इंजन के रूप में स्थापित कर दिया है। कनेक्टिविटी के क्षेत्र में आई क्रांति ने ऐसे रास्ते खोले हैं जिनपर पहले कभी ध्यान भी नहीं दियागया था। आज हम इस क्षेत्र के पर्यटन, अर्थव्यवस्था, कृषि-आधारित उद्योग, सेवा क्षेत्र की संभावनाओंएवं युवा श्रमशक्ति, प्राकृतिक व जैविक खेती, नवीकरणीय ऊर्जा और दशकों तक अछूते रहे कई अन्य क्षेत्रों का दोहन करके इस क्षेत्र के आर्थिक विकास के विभिन्न मोर्चों पर एक साथ काम कर रहे हैं। हमने इस क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है तथा अभी कई और उपलब्धियां हासिल करनी हैं। श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमने आधी लड़ाई जीत ली है। निम्नलिखित पंक्तियां भारत के पूर्वोत्तर में एक नई सुबह के प्रति हमारी दृष्टिकोण और दृढ़ संकल्प को दशार्ती हैं: एक नई सुबह को गले लगाते हुए, एक यात्रा को इतना उज्ज्वल बनाते हुए, उत्तर-पूर्व की यात्रा, एक चमकता हुआ प्रकाशस्तंभ ऊंची उड़ान भरने को उत्साहित, महत्वाकांक्षाओंसे प्रेरित, उत्तर-पूर्वविकास की एक ऐसी गाथा है, जो सुनाईजानी है।

संक्षिप्त खबरें

नगर का विकास पहली प्राथमिकता: प्रवीण अग्रवाल

अमरोहा। भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने के बाद नगर पालिका कार्यालय पहुंचे पालिकाध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल का सभासदों एवं समर्थकों ने स्वागत किया। गौरतलब है कि बुधवार को उन्होंने लखनऊ में डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी की मौजूदगी में पार्टी की सदस्यता ली थी। पालिकाध्यक्ष ने बताया कि नगर का विकास ही उनकी पहली प्राथमिकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की नीतियों से प्रभावित होकर भाजपा की सदस्यता लेने की बात भी कही। इस दौरान अतुल बंसल, राजू बादशाह, दुलीचंद गिहार, गुरुबचन सिंह, मधुसूदन गोयल, विजय शर्मा, मोहित अग्रवाल, विनय घरोटिया, देवेश तंवर, अमित अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

ज्ञानवापी मामला : मुस्लिम पक्ष के प्रार्थना पत्र पर 15 फरवरी को होगी सुनवाई

वाराणसी की जिला अदालत ने ज्ञानवापी परिसर स्थित व्याणस जी के तहखाने में पूजा-पाठ स्थनगित कराने के मुस्लिम पक्ष के प्रार्थना पत्र पर सुनवाई के लिए 15 फरवरी की तारीख तय की है। हिन्दू पक्ष के अधिवक्ता मदन मोहन यादव ने बृहस्प तिवार को बताया कि मुस्लिम पक्ष व्यारस जी के तहखाने में जिला अदालत के हाल के आदेश पर दोबारा शुरू की गयी पूजा-पाठ को 15 दिन के लिये रोककर सुनवाई करने का आग्रह किया था। इस पर आज हिंदू पक्ष ने जिला जज अनिल कुमार (पंचम) की अदालत में आपत्ति दर्ज कराते हुए कहा कि जब उच्चं न्याजयालय में 12 फरवरी को इसी मुद्दे पर सुनवाई होनी है तब निचली अदालत में इस मामले में सुनवाई करने का कोई औचित्य नहीं है। इस पर जिला जज ने मामले की सुनवाई के लिए 15 फरवरी की तारीख नियत कर दी।

इंस्टाग्राम पर विधि छात्रा को दुष्कर्म की धमकी

विधि छात्रा से इंस्टाग्राम पर अश्लीलता करते हुए दुष्कर्म की धमकी देने का मामला सामने आया है। थाना कौशांबी में दर्ज कराई रिपोर्ट में पीड़िता ने बताया कि वह पुणे स्थित लॉ स्कूल में पढ़ रही है और फिलहाल छुट्टी पर घर आई हुई है। पिछले दिनों उन्हें इंस्टाग्राम पर अनजान आईडी से अश्लील फोटो भेजे गए, जिनमें चेहरा उनका लगा था। फोटो भेजकर वायरल करने की धमकी दी। ये फोटो महंगी बिकती हैं। डर की वजह से पीड़िता ने एकॉउंट की प्राइवेसी सेटिंग चेंज कर दीं तों इस बात को लकर भी गाली-गलौज की। आरोपी ने दुष्कर्म की धमकी देते हुए कहा कि वह जानता है कि वह कहां पढ़ती है। कैंपस में देख लूंगा। पीड़िता को अगले सप्ताह कॉलेज लौटना है, जिस कारण वह काफी डरी हुई है। एसीपी इंदिरापुरम स्वतंत्र कुमार सिंह ने बताया कि मैसेज भेजने वाले को ट्रेस करने का प्रयास कर रहे हैं।

अवैध आरओ प्लांट पर छापेमारी

लघु सिंचाई विभाग की टीम ने अवैध रूप से चल रहे चार आरओ प्लांट पर छापे मारे। इस दौरान संचालक बिना एनओसी लिए भूजल का दोहन करते मिले। विभाग ने सभी को नोटिस जारी किया है। जिले में अलग अलग स्थान पर सैकड़ों प्लांट अवैध रूप से चल रहे हैं। गिरते भूजल स्तर के कारण प्रशासन ने महानगर की सीमा में भूजल दोहन से संबंधित गतिविधियों पर रोक लगाई है। इसे देखते हुए लघु विभाग की टीम ने जिले में अलग-अलग स्थानों पर कार्रवाई की। बीते दिनों लोनी और मुरादनगर क्षेत्र में छापे मारे। इस दौरान टीम को प्लांट में जल की शुद्धता मापन करने वाले यंत्रों में खामी मिली। साथ ही, पानी की शुद्धता संदिग्ध बताई जा रही है। सभी आरओ संचालकों को नोटिस भेजा गया। लघु सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता हरिओम सिंह का कहना है कि शिकायत मिलने पर विभाग की टीम ने कार्रवाई की गई है। आने वाले दिनों में भी अभियान जारी रहेगा।

जिलाबदर बदमाश ने युवक को पीटा

संजयपुरी कॉलोनी निवासी युवक को मामूली विवाद में जिला बदर बदमाश साथी के साथ मिलकर बंधक बनाया और मारपीट की। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। संजयपुरी कॉलोनी में रहने वाले राजकुमार ने बताया कि भाई राहुल का धर्मपुरी कॉलोनी निवासी जिलाबदर बदमाश निखिल से विवाद चल रहा है। आरोप है कि आरोपी राहुल को जबरन खेत पर ले गए और मारपीट की। एसीपी ज्ञानप्रकाश राय ने बताया कि निखिल और आशु पर रिपोर्ट दर्ज कर ली है। अक्तूबर में निखिल को जिला बदर किया गया था, लेकिन वह क्षेत्र में वारदात कर रहा था। पुलिस ने बदमाश निखिल को गिरफ्तार कर चालान कर दिया है।

प्राण-प्रतिष्ठा पर सपा नेता स्वा्मी प्रसाद मौर्य के बयान को लेकर तल्खद प्रतिक्रिया

लखनऊ, एजेंसी

श्रीरामचरित मानस और सनातन धर्म के प्रति विवादित टिप्प णियों को लेकर अक्स र सुर्खियों में रहने वाले समाजवादी पार्टी (सपा) नेता स्वातमी प्रसाद मौर्य अब रामलला की प्राण-प्रतिष्ठार पर सवाल उठाकर एक बार फिर चर्चा में हैं। उत्त्र प्रदेश के उप मुख्यामंत्रियों केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक ने इस बयान के लिये सपा नेता की कड़ी आलोचना की है, वहीं सपा के अंदर भी मौर्य के प्रति विरोध के स्व र उभरने लगे हैं। सपा के विधान परिषद सदस्यै स्वाीमी प्रसाद मौर्य ने बुधवार को राज्यसपाल के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान रामलला की प्राण-प्रतिष्ठाा के औचित्य पर सवाल उठाते हुए कहा कि जब रामलला अयोध्या में हजारों साल से पूजे जा रहे हैं तो गत 22 जनवरी को अरबों-खरबों रुपए खर्च करके दोबारा प्राण प्रतिष्ठा करने की क्याह जरूरत थी। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने बृहस्पनतिवार को विधान भवन परिसर में संवाददाताओं से बातचीत में मौर्य के बयानों के लिये सपा अध्यवक्ष अखिलेश यादव को जिम्मेमदार ठहराया। केशव ने कहा, ह्वसमाजवादी पार्टी 2024 में समाप्तवादी पार्टी बनने वाली है। वह कैसे बनेगी और क्यों बनेगी, उसका कारण सपा बहादुर श्री अखिलेश यादव जी हैं, क्योंकि इस पार्टी में कोई भी अगर कुछ बोलता है तो बिना सपा मुखिया के आदेश के नहीं बोल सकता, इसलिए किसी भी प्रकार के बयान के लिए मैं श्री अखिलेश यादव जी को जिम्मेदार मानता हूं। उन्होंने कहा, अगर किसी के बयान से वह (अखिलेश) सहमत नहीं है तो उनके खिलाफ कार्रवाई करें और अगर कार्रवाई नहीं करते हैं तो जो भी जहरीले बयान आ रहे हैं उनके लिए केवल और केवल समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ही जिम्मेदार हैं। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने इस मामले पर कहा, ह्वस्वामी प्रसाद मौर्य इस तरह के जो वक्तव्य दे रहे हैं वह बहुत ही दुखद है। आज पूरी दुनिया रामलला के भव्य मंदिर के लोकार्पण पर उत्सव मना रही है। ऐसे अवसर पर इस तरह की बयानबाजी करने पर ईश्वर उन्हें कभी माफ नहीं करेगा। देश और प्रदेश की जनता समय आने पर उन्हें सबक जरूर सिखाएगी। स्वा्मी प्रसाद मौर्य के बयानों का खुद उनकी ही पार्टी में विरोध शुरू हो गया है। विधानसभा में समाजवादी पार्टी के मुख्य सचेतक मनोज पांडे ने संवाददाताओं से बातचीत में मौर्य की बेहद तल्खे अल्फाज में निंदा की। उन्होंदने कहा, ह्वस्वामी प्रसाद क्या-क्या बोल रहे हैं, इस पर मैं कोई बयान नहीं देना चाहता हूं। जिस व्यक्ति का खुद का मानसिक संतुलन ठीक ना हो, वह ऐसे ही बयान देता रहता है। पार्टी ने कई बार उनसे ऐसा न करने को कहा लेकिन विक्षिप्त आदमी को जब निदेर्शों को नहीं सुनना है तो उसके लिए कोई कुछ नहीं कर सकता। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने मौर्य के बयान के बारे में पूछे जाने पर संवाददाताओं से कहा, धर्म पर प्रपंच नहीं होना चाहिए, अमल होना चाहिए। भाजपा के इस आरोप पर कि स्वापमी प्रसाद मौर्य सपा अध्यबक्ष अखिलेश यादव के कहने पर ऐसे बयान दे रहे हैं, उन्होंने कहा कि भाजपा तो हमेशा झूठ बोलती है। कांग्रेस विधानमंडल दल की नेता आराधना मिश्रा ने मौर्य के बयान पर कहा कि किसी को भी किसी की धार्मिक आस्था को आहत करने का कोई अधिकार नहीं है। मौर्य का बयान उनकी व्यक्तिगत राय हो सकती है। स्वाकमी प्रसाद मौर्य ने बुधवार को विधान परिषद में राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर में हुई प्राण प्रतिष्ठा का जिक्र करते हुए कहा था, ह्यअभिभाषण में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर बड़ी वाहवाही लूटी गई है। ऐसा लगता है जैसे भाजपा की सरकार के पहले रामलला थे ही नहीं। एक ओर कहा जाता है कि देश के करोड़ों लोगों के भगवान श्री राम हैं, वहीं भारतीय जनता पार्टी उन लोगों की भावनाओं को आहत कर ऐसा ड्रामा कर रही है कि जैसे लगता है कि राम को हम (भाजपा) लाए हैं। उन्होंने कहा, ह्वजबकि यह जग विदित है कि हजारों साल से राम की वहां (अयोध्यां) पर पूजा होती चली आ रही है तो उसमें प्राण प्रतिष्ठा का प्रश्न कहां उठता है। जब रामलला वहां हजारों साल से पूजे जा रहे हैं तो अरबों-खरबों रुपए खर्च करके दोबारा प्राण प्रतिष्ठा करने का औचित्य क्या था। मैं इस पर सवाल उठाता हूं। जो रामलला पहले से ही छावनी में थे उन्हें ले जाकर मंदिर में स्थापित करना चाहिए था। प्राण प्रतिष्ठा कहां से आ गई। मौर्य ने कहा, प्राण प्रतिष्ठा तो भारतीय जनता पार्टी का कार्यक्रम था। कार्यक्रम की आयोजक भी भारतीय जनता पार्टी, मुख्य अतिथि भी भारतीय जनता पार्टी, व्यवस्था करने वाले विश्व हिंदू परिषद और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। इन तीन के अलावा और कौन था, वह कोई सांस्कृतिक या सरकारी कार्यक्रम नहीं था। वह भारतीय जनता पार्टी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद का कार्यक्रम था।

उर्स के सिलसिले में शहर में कई स्थानों पर महफिल आयोजित

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा।हजरत शरफुद्दीन शाह विलायत रहमतुल्लाह अलैह के उर्स के सिलसिले में शहर में कई स्थानों पर महफिल आयोजित की गई। अकीदतमंदों ने जहां लंगर वितिरत किया तो वहीं कव्वालों ने शाह की शान में कलाम पेश कर महफिल में नूरानियत का रंग भर दिया। शहर के मोहल्ला काली पगड़ी में मुश्ताक अहमद के आवास पर सजी महफिल की शुरूआत हाफिज शमीम अमरोहवी ने तिलावते कलामे पाक के बाद नाते नबी और मनकबत पढ़कर की। दरगाह मियां मौज के सज्जादानशीन सैय्यद हादी अजीम मियां जाफरी ने महफिल में मौजूद लोगों से बुजुर्गों की तालीम के मुताबिक जिंदगी गुजारने का दर्स दिया। मौजूदा वक्त में बच्चों को दीनी और दुनियावी तालीम दिलाना बड़ी जरूरत बताया। कहा कि तालीम के बिना किसी भी कौम की तरक्की मुमकिन नहीं है। महफिल में नियाज और नजर के बीच कव्वालों ने सूफियाना कलाम पेश किया, जिसे सुनकर अकीदमंद झूमने पर मजबूर हो गए। आखिर में मुल्क में अमन-चैन और कौम की सलामती की दुआ के साथ महफिल का समापन हुआ। इस दौरान दरगाह रजबपुर के सज्जादानशीन ख्वाजा अनवर फरीदी, रहबर रजा रिजवी, सलीम अहमद, सूफी मोईन उद्दीन, खलीफा माजिद, खुर्शीद आलम, हाजी खुर्शीद अनवर, हसन जिया एडवोकेट, दाऊद रजा रिजवी, नदीम अहमद, सुल्तान अंसारी आदि रहे

शिक्षक अपनी जिम्मेदारी का बाखूबी निर्वहन करें: देवेन्द्र सिंह खड़गवंशी

प्रात: किरण संवाददाता

हसनपुर। समग्र शिक्षा के तहत गंगेश्वरी ब्लाक क्षेत्र के प्रधानाध्यापकों, विद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्षों, ग्राम प्रधानों एवं स्थानीय निकाय के सदस्यों का ब्लॉक स्तरीय एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम गुरुवार को गांव गंगवार में आयोजित किया गया। बेसिक शिक्षा एवं कायाकल्प से संबंधित बिंदुओं पर जानकारी दी गई।मुख्य अतिथि भाजपा नेता एवं बीडीसी देवेंद्र सिंह खड़गवंशी ने शिक्षकों से सरकार की मंशानुरूप शिक्षण कार्य करने का आह्वान किया। अपील करते हुए कहा कि वह अपनी जिम्मेदारी का पालन पूर्ण ईमानदारी के साथ करें। अच्छे समाज के निर्माण में अध्यापकों का बहुमूल्य योगदान है। परिषदीय विद्यालयों से पढ़े हुए छात्र-छात्राएं आज भी बड़े अधिकारी बन रहे हैं, जो कि काबिले तारीफ है। विशिष्ट अतिथि ब्लाक प्रमुख गंगेश्वरी राजेंद्र सिंह खड़गवंशी ने कहा कि कायाकल्प के तहत सभी अध्यापक अपने ग्राम प्रधानों से समन्वय स्थापित कर विद्यालयों में सभी 19 पैरामीटर पूर्ण करा लें। डायट प्रवक्ता श्रेयस यादव ने बेसिक शिक्षा के स्तर में सुधार लाने के लिए निपुण कार्यक्रम को महत्वपूर्ण बताया। बीडीओ आरती गुप्ता,प्राथमिक शिक्षक संघ जिलाध्यक्ष यशपाल सिंह, ब्लाक अध्यक्ष रामवीर सिंह, शाखा प्रबंधक विनीत कुमार, प्रमोद कुमार व वीरपाल सिंह ने भी संबोधन किया। इस दौरान मधु सिंह, विनात कुमार, महेश ठाकुर, प्रमोद नागर, वीरपाल सिंह, राकेश कुमार शर्मा,वैभव गुप्ता, भुवनेश वर्मा, संदीप कुमार, महताबुद्दीन, मोनिका,रूफिया अजीज, शालू तंवर, रीना गौड़, विजय लक्ष्मी, सविता सिंह आदि रहे।

बीए के छात्र की गोली मारकर हत्या, मामा-भांजे समेत तीन गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

रजबपुर। किसान को फंसाने के लिए बछरायूं थानाक्षेत्र के गांव सैदपुर के रहने वाले बीए के छात्र सनी (19) की गोली मारकर हत्या कर दी गई। किसान पर हत्या करने का झूठा षड्यंत्र रचकर पुलिस को गुमराह करने की कोशिश की गई। पड़ताल के दौरान हकीकत सामने आई तो लोगों के होश उड़ गए। मामले में पुलिस ने मामा-भांजे समेत तीन के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया। तीनों को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है। मृतक सनी गांव में रहने वाले किसान सत्यवीर सिंह के बेटे थे। उनके परिवार में पत्न ी पूनम के अलावा दो बेटी और एक बेटा था। परिवार में इकलौता सनी बीए की पढ़ाई कर रहा था।आरोप है कि बुधवार की रात बछरायूं थानाक्षेत्र के चौहड़पुर बागड़ का रहने वाला अभिराज चौधरी उर्फ अंकु, लमबिया गांव निवासी ऋषभ और रजबपुर थानाक्षेत्र के जलालपुर खुर्द निवासी नितिन घर सत्यवीर सिंह के पहुंचे और जोया में दावत होने की बात कहते हुए उनके बेटे सनी को बुला लाए। ऋषभ और नितिन मामा-भांजे हैं। रात में करीब नौ बजे ही अभिराज चौधरी उर्फ अंकु, ऋषभ और सनी, नितिन के घर की छत पर बैठकर शराब पी रहे थे। तभी किसी बात को लेकर आपस में कहासुनी हो गई। आरोप है कि ऋषभ, अभिराज चौधरी उर्फ अंकु और नितिन ने सनी को पकड़ लिया और गोली मारकर हत्या कर दी।माथे पर गोली लगते ही सनी की जान चली गई। इसके बाद तीनों आरोपी सनी को अस्पताल लेकर पहुंचे। तीनों आरोपियों ने जलालपुर खुर्द के रहने वाले किसान सौरभ पर गोली मारकर हत्या करने का आरोप लगाया। सूचना मिलते ही रजबपुर एसओ अलका चौधरी फोर्स के साथ मौके पर पहुंच गईं।एसपी कुंवर अनुपम सिंह, एएसपी राजीव कुमार सिंह, सीओ सिटी अरुण कुमार सिंह ने घटनास्थल पर मुआयना किया। सीओ ने बताया कि जलालपुर खुर्द गांव के रहने वाले नितिन का गांव के रहने वाले सौरभ के साथ विवाद चल रहा है। उसे फंसाने के लिए नितिन ने अपने भांजे ऋषभ के साथ मिलकर सौरभ ही हत्या करने का षड्यंत्र रचा था। मृतक सनी और अभिराज चौधरी उर्फ अंकु दोनों आरोपी ऋषभ के दोस्त हैं। ऋषभ के कहने पर ही उसके दोनों नितिन के घर आए थे। मामले में मृतक सनी के पिता सत्यवीर सिंह की तहरीर पर आरोपी अभिराज चौधरी उर्फ अंकु, ऋषभ और नितिन के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर तीनों को गिरफ्तार कर लिया। बाद में तीनों को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है।

भाजपा राजनीतिक दलों को तोड़ना जानती है : अखिलेश

वाराणसी, एजेंसी

समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यिक्ष अखिलेश यादव ने अपने गठबंधन के सहयोगी राष्ट्री य लोकदल (रालोद) के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ जाने की अटकलों के बीच बृहस्तिवार को कहा कि भाजपा दलों को केवल तोड़ना जानती है और उसे पता है कि कब किसको ह्यखरीदनाह्ण है। यादव ने वाराणसी में संवाददाताओं से बातचीत में रालोद के भाजपा के साथ जाने की अटकलों के बारे में पूछे जाने पर कहा, ह्वभारतीय जनता पार्टी दलों को तोड़ना जानती है। किसको कब लेना है, वह जानती है। वह जानती है कि कैसे बेईमानी करनी है। चंडीगढ़ में आपने देखा कि किस तरह से बेईमानी हुई । भारतीय जनता पार्टी जानती है कि कब किसको खरीदना है। वह यूं ही थोड़ी सबसे बड़ा दल बन गया है। उन्होंलने कहा, ह्वभाजपा जानती है कि कब किसको कैसे क्या.करना है। किसके पास ईडी भेजना है, किसके पास सीबीआई भेजनी है, कब कहां आयकर का छापा डलवाना है और किस पत्रकार का कब मुंह बंद करना है। इस बीच, उत्त र प्रदेश के उप मुख्यामंत्री ब्रजेश पाठक ने लखनऊ में संवाददाताओं से बातचीत में राष्ट्रीय लोकदल और भाजपा की कथित रूप से बढ़ती नजदीकियों के बारे में पूछे जाने पर कहा, ह्वराजनीति में हमेशा संभावनाएं रहती हैं और भारतीय जनता पार्टी हमेशा भारत माता के प्रति समर्पित भाव से काम करने वाली पार्टी है। वह उत्तर प्रदेश के चतुर्दिक विकास में सहायक लोगों के साथ है। हम सभी का हृदय से स्वागत करते हैं। कांग्रेस विधानमंडल दल की नेता आराधना मिश्रा ने रालोद के भाजपा के साथ जाने की अटकलें के बारे में कहा, ह्वदेखिये, यह चर्चा तो मीडिया में चल रही है। इसके अलावा जहां तक गठबंधन की बात है, वहां पर सब कुछ ठीक है। कोई चिंता का विषय नहीं है। सपा और रालोद ने वर्ष 2019 का लोकसभा चुनाव और वर्ष 2022 का उत्तसर प्रदेश विधानसभा का चुनाव साथ मिलकर लड़ा था। रालोद और सपा ने विपक्ष के इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूअसिव अलायंस (इंडिया) में शामिल होने का ऐलान किया था और सपा ने गठबंधन के तहत रालोद को आगामी लोकसभा चुनाव के लिये सात सीटें दी थीं। हालांकि रालोद ज्या दा सीटों की मांग कर रहा था।

डीएम सर्किल रेट से हाउस टैक्स बढ़ाने के विरोध में 11 फरवरी को पंचायत होगी

गाजियाबाद, एजेंसी

डीएम सर्किल रेट से हाउस टैक्स बढ़ाने के विरोध में 11 फरवरी को रईसपुर गांव में पंचायत होगी। इसके लिए पूर्व पार्षदों ने तैयारी शुरू कर दी है। लोगों से संपर्क कर पंचायत में पहुंचने की अपील की जा रही है। पूर्व पार्षद मनोज चौधरी ने बताया नगर निगम एक अप्रैल से डीएम सर्किल रेट से हाउस टैक्स लगाने की तैयारी कर रहा है। ऐसा होने से हाउस टैक्स में चार गुणा बढ़ोतरी हो जाएगी। इससे लोगों पर आर्थिक भार पड़ेगा। उन्होंने बताया पूर्व के सदन में हर साल पांच फीसदी टैक्स बढ़ाने का प्रस्ताव पास है। इसके बाद भी शहर में डीएम सर्किल रेट से हाउस टैक्स लगाने की तैयारी की जा रही है। उन्होंने मांग उठाई कि निगम को यह फैसला वापस लेना होगा। ऐसा नहीं होने पर आंदोलन किया जाएगा।निगम के फैसले के खिलाफ 11 फरवरी को रईसपुर गांव के राम वाटिका फार्म हाउस में पंचायत की जाएगी। इसमें हर वार्ड से लोग शामिल होंगे। पूर्व पार्षद जाकिर सैफी, कल्लन, आसिफ चौधरी, माया देवी और आनंद चौधरी आदि भी पंचायत में वार्ड के लोगों के साथ शामिल होंगे। बता दें कि इससे पहले काजीपुरा गांव में भी पूर्व पार्षद निगम के खिलाफ पंचायत कर चुके हैं।

‘इंडिया’ गठबंधन के घटकों में अच्छा समन्वय है : कांग्रेस

नागपुर, एजेंसी

कांग्रेस के सचिव डॉ.विनीत पुनिया ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि विपक्षी इंडिया गठबंधन के सदस्यों के बीच अच्छा समन्वय है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जानबूझकर गठबंधन के खिलाफ विमर्श पैदा कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा ऐसा कर रही है, क्योंकि वह जानती है कि जनता इंडिया गठबंधन को पसंद कर रहे हैं। पुनिया यहां कांग्रेस के जय जवान अभियान के बारे में जानकारी देने के लिए आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस अभियान की शुरूआत पिछले सप्ताह राहुल गांधी ने 1.5 लाख युवाओं को न्याय दिलाने के मकसद से की थी, जिनका चयन रक्षा सेवाओं में किया गया है, लेकिन अग्निपथ योजना शुरू होने के बाद नियुक्ति नहीं दी जा रही है। इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) के घटक दलों के बीच मतभेद की खबरों के संबंध में पूछे जाने पर कांग्रेस पदाधिकारी ने कहा, यह भाजपा का विमर्श है, जो जानबूझकर पैदा कर रही है।

उन्होंने कहा, विपक्षी इंडिया गठबंधन के घटकों के बीच अच्छा समन्वय और समझ है। उनके बीच कोई समस्या नहीं है। जब चर्चा होती है, तो स्वाभाविक है कि साझेदार अधिक अवसर की मांग करेंगे और इसमें कुछ भी गलत नहीं है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि गठबंधन के घटक एक दूसरे के खिलाफ हैं। पुनिया ने कहा, भाजपा निराश हो रही है और उसकी कोशिशें निराशा की वजह से है। वे जो कुछ भी कर रहे हैं, वह उनकी असुरक्षा को दशार्ता है। वे खुद जानते हैं कि उनकी स्थिति मजबूत नहीं है। वे जानते हैं कि जनता, किसान और युवा उनसे खुश नहीं हैं।

पटाखा कारखाना विस्फोट ममले में दोषी पाए गए किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा : मुख्यमंत्री

भोपाल, एजेंसी

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने बृहस्पतिवार को विधानसभा में कहा कि उनकी सरकार हरदा पटाखा कारखाने में विस्फोट के लिए जिम्मेदार किसी भी व्यक्ति को नहीं बख्शेगी। हालांकि, मामले की न्यायिक जांच की मांग और मुख्यमंत्री के जवाब से असंतोष जताते हुये कांग्रेस सदस्य सदन से बहिर्गमन कर गये। मुख्यमंत्री ने विधानसभा में कहा कि मामले की जांच की जा रही है और जो भी इस घटना के लिए जिम्मेदार होगा उसे दंडित किया जाएगा। कांग्रेस ने मंगलवार को हरदा में पटाखा इकाई में विस्फोट की घटना की न्यायिक जांच की और इस त्रासदी के लिए जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराने की मांग की। पटाखा कारखाने में हुये धमाके में कम से कम 11 लोगों की जान चली गई थी और 200 से अधिक लोग घायल हो गए थे। अधिकारियों के अनुसार, घटना के संबंध में अब तक कारखाने के दो मालिकों सहित तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। मप्र सरकार ने घटना की विस्तृत जांच करने के लिए प्रमुख सचिव (गृह) संजय दुबे की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय समिति का गठन किया है। प्रश्नकाल के तुरंत बाद, अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने हरदा पटाखा कारखाने में विस्फोट की घटना के मुद्दे पर राम निवास रावत और अन्य सहित कांग्रेस नेताओं द्वारा लाए गए स्थगन प्रस्ताव का उल्लेख किया। राज्य के विधायी मामलों के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि सरकार इस मुद्दे पर तुरंत चर्चा के लिए तैयार है। चर्चा शुरू करते हुए रावत ने कहा कि 2015 में भी इसी कारखाने में विस्फोट हुआ था, लेकिन इकाई मालिकों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई। उन्होंने दावा किया, ह्वहालांकि सरकार (मंगलवार की घटना में) 11 मौतों का जिक्र कर रही है, लेकिन सच्चाई यह है कि उस समय इकाई में नियमों के खिलाफ बच्चों सहित बड़ी संख्या में लोग काम कर रहे थे। रावत ने कहा कि कारखाना एक कृषि भूमि पर चल रहा था और पूछा कि अधिकारियों ने इसकी अनुमति कैसे दी। उन्होंने कहा कि हरदा के कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक का स्थानांतरण मात्र कोई सजा नहीं है। उन्हें निलंबित किया जाना चाहिए तथा घटना के लिए जिम्मेदार अधिकारियों एवं लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की जानी चाहिए।सदन में विपक्ष के उपनेता हेमंत कटारे ने कहा कि तत्कालीन (संभागीय) आयुक्त के खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं की गयी, जिन्होंने दिवाली त्योहार के आधार पर कलेक्टर के आदेश पर एक महीने तक रोक लगाकर कारखाने को फिर से खोलने की अनुमति दी थी। उन्होंने इस मामले में तत्कालीन आयुक्त के खिलाफ भी कार्रवाई की मांग की।

युवक की हत्या कर शव ईख के खेत में फेंका

गाजियाबाद, एजेंसी

निवाड़ी थानाक्षेत्र के गांव सिखैड़ा हजार में बदमाशों ने युवक की हत्या कर शव ईख के खेत में फेंक दिया। आरोपियों ने पहचान छिपाने के लिए शव को जलाने का प्रयास किया। पुलिस ने अधजले शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस मृतक की शिनाख्त का प्रयास कर रही है। वहीं, डीसीपी और एसीपी ने घटनास्थल का निरीक्षण कर जरूरी निर्देश दिए हैं। एसीपी मोदीनगर ज्ञानप्रकाश राय ने बताया कि गुरुवार सुबह सूचना मिली कि गांव सिखैड़ा हजार में किसान रतनपाल सिंह के ईख के खेत में युवक का अधजला शव पड़ा है। सूचना मिलते ही निवाड़ी थानाप्रभारी पुलिस फोर्स के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। एसीपी ने बताया कि मृतक की उम्र लगभग 25 साल के आसपास है। अब तक शिनाख्त नहीं हो सकी है। उन्होंने बताया कि युवक के हाथ पर मां नाम का टैटू बना है। आशंका जताई जा रहा है कि पहले युवक की हत्या की गई। इसके बाद ज्वलनशील पदार्थ डालकर जला दिया गया। हालांकि, आग जल्द बुझ गई, जिस कारण शव पूरी तरह जल नहीं पाया। घटनास्थल से फॉरेंसिक टीम ने जरूरी साक्ष्य एकत्र किए हैं। डीसीपी ग्रामीण ने घटनास्थल पर पहुंचकर पुलिस को दिशा-निर्देश दिए। डीसीपी ने बताया कि प्रथम दृष्यता मामला हत्या का लग रहा है। मृतक की शिनाख्त के लिए पुलिस की कई टीमों का गठन किया गया है। शिनाख्त होने के बाद ही पूरी स्थिति साफ हो सकेगी।

बाबा सिद्दीकी ने कांग्रेस से इस्तीफा दिया, अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा में शामिल होंगे

मुंबई, एजेंसी

कांग्रेस नेता एवं महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री बाबा जियाउद्दीन सिद्दीकी ने बृहस्पतिवार को कहा कि उन्होंने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है और वह अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) में शामिल होंगे। बाबा जियाउद्दीन सिद्दीकी को बाबा सिद्दीकी के नाम से भी जाना जाता है। पूर्व केंद्रीय मंत्री मिलिंद देवड़ा के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना में शामिल होने के एक महीने के भीतर शहर के दूसरे नेता ने कांग्रेस को अलविदा कहा है। सिद्दीकी के बेटे जीशान शहर से कांग्रेस विधायक हैं। बाबा सिद्दीकी ने हालांकि कहा कि वह (जीशान) अपना फैसला खुद लेंगे। सिद्दीकी (66) ने कांग्रेस छोड़ने के अपने फैसले का कोई कारण नहीं बताया है। पार्टी पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा कि कहने के लिए बहुत कुछ है लेकिन कुछ चीजों को अनकहा छोड़ दिया जाएं तो बेहतर है। बाबा सिद्दीकी ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि कुछ फैसले दर्दनाक होते हैं, लेकिन फिर भी ऐसे फैसले लेने पड़ते है। सिद्दीकी मुंबई में कांग्रेस का एक प्रमुख अल्पसंख्यक चेहरा थे जो कांग्रेस-राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) की गठबंधन सरकार के समय मंत्री भी रहे थे। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, मैं एक युवा के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी में शामिल हुआ था और यह 48 वर्षों की महत्वपूर्ण यात्रा रही है। आज मैं तत्काल प्रभाव से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देता हूं। उन्होंने कहा, बहुत कुछ है जिसे मैं व्यक्त करना चाहता हूं लेकिन जैसा कि कहा जाता है कि कुछ चीजों को अनकहा छोड़ देना ही बेहतर है। मैं उन सभी को धन्यवाद देता हूं जो इस यात्रा में हिस्सा रहें। बाद में पत्रकारों से बात करते हुए सिद्दीकी ने कहा।

युवक ने मोबाइल लूटने वाले दो आरोपियों को दबोचा

गाजियाबाद, एजेंसी

युवक ने मोबाइल लूटकर भाग रहे बाइक सवार दो लुटेरों को बहादुरी दिखाते हुए पकड़ लिया। घटना छह फरवरी की रात 150 फुटा रोड की है, जिसमें थाना शालीमार गार्डन पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों को जेल भेज दिया। शालीमार गार्डन एक्सटेंशन दो में रहने वाले रवि मारवाह ने बताया कि वह शादी में जाने के लिए बेटे के साथ घर से निकले थे। इसी दौरान अपाचे बाइक सवार दो युवक आए और उनका फोन लूट लिया। बाइक चला रहे युवक ने हेलमेट लगा रखा था और मोबाइल लूटने वाले ने मुंह ढक रखा था। मोबाइल लूटकर बदमाशों ने बाइक दौड़ाई तो वह बेटे को छोड़ दौड़े और पीछे वाले बदमाश की जैकेट पकड़ी। उसने कोहनी मार दी तो वह दोबारा दौड़े और बाइक चला रहे बदमाश को धक्का मारा, जिसके बाद दोनों गिर गए। आरोपी बाइक छोड़कर भागने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन उन्होंने दोनों को पकड़ने का प्रयास किया। एक ने उनके हाथ पर दांत गढ़ा दिए। काफी लोग इकट्ठे थे, लेकिन कोई भी उन्हें पकड़ नहीं रहा था। तभी दो जानकार युवक आए और उन्होंने आरोपियों को पकड़ने में मदद की। एसीपी शालीमार गार्डन सिद्धार्थ गौतम ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी इरशाद गार्डन निवासी नईम और लक्ष्मण गार्डन निवासी वाजिद है। दोनों से चार मोबाइल मिले हैं, जिनमें से तीन दिल्ली से लूटे हैं। आरोपियों से मिली बाइक को ट्रेस किया जा रहा है।

दहेज की खातिर पति ने पेट में लात मारी, शिशु की मौत

गाजियाबाद, एजेंसी

कविनगर थानाक्षेत्र में दहेज की मांग पूरी न होने पर ससुरालियों द्वारा विवाहिता को मारपीट कर घर से निकालने का मामला सामने आया है। विवाहिता का आरोप है कि पति ने पेट पर लात मारी, जिससे गर्भ में पल रहे शिशु की मौत हो गई। पुलिस ने पति, सास-ससुर और ननद-ननदोई के खिलाफ केस दर्ज किया है। मधुबन बापूधाम थानाक्षेत्र के गांव में रहने वाली महिला के मुताबिक उसकी शादी 21 नवंबर 2021 को कविनगर निवासी युवक के साथ हुई थी। शादी में पिता ने 50 लाख रुपये खर्च किए थे। आरोप है कि शादी के बाद से ही ससुराल पक्ष के लोग उसे प्रताड़ित करने लगे थे। वह उस पर मायके से फ्लैट, 50 लाख रुपये और दो बीघा जमीन दिलाने का दबाव डालते थे। विरोध करने पर पति, सास-ससुर और ननद ननदोई उसके साथ मारपीट करते थे। पीड़िता का कहना है कि ससुर उस पर गलत नजर रखता और जब वह नहाकर अपने कमरे में जाती तो किसी बहाने से कमरे में घुसकर गलत नीयत से छूता था।

संक्षिप्त खबरें

दो महिलाओं को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

कैमूर।जिला के कुदरा थाना प्रशासन द्वारा नगर पंचायत कुदरा बाजार से, भरी बाजार में एक महिला की पर्स काट कर 30000 रुपए चोरी करने के मामले में, दो महिलाओं को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल।संदर्भ में जानकारी देते हुए थाना अध्यक्ष विकास कुमार के द्वारा बताया गया कि विगत सोमवार को थाना क्षेत्र के तुर्की ग्राम वासी अनीता देवी पति अनुज कुमार गुप्ता कुदरा बाजार करने आई हुई थी, जिनका की पर्स बाजार में भीड़ का फायदा उठाते हुए, दो महिलाओं के द्वारा काटकर30000 रुपए निकाल लिया गया। महिला द्वारा चोरी की जानकारी होते ही, अपने पास की महिलाओं पर शक हुआ शोरगुल के बाद लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गया। विषय की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंचे थाना प्रशासन द्वारा, दोनों महिलाओं को गिरफ्तार कर लिया गया।जिन्हें स्वास्थ्य जांच के उपरांत जेल भेज दिया गया। लोगों को ऐसे में अपने आप से भी सावधान रहने की जरूरत है, प्रशासन द्वारा हर संभव सहयोग किया जाएगा। गिरफ्तार कोमल बाई पति कमल सिसौदिया एवं फरिता सिसौदिया पति वंशत सिसौदिया दोनों ग्राम- कड़िया, थाना- गोडा, जिला- राजगढ़, मध्यप्रदेश की निवासी हैं।

हीरोइन बेचने वाले तीन को गिरफ्तार कर भेजा जेल

दुर्गावती कैमुर। मंगलवार के दिन हीरोइन बनाने और बेचने की सूचना पर डुमरी पहुंची पुलिस के कार्य में बाधा पहुंचाने वाले तीन लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर बुधवार को जेल भेज दिया। गिरफ्तार तीनों आरोपियों में दो डुमरी गांव निवासी सबीर खान का पुत्र आरिफ खान व नौरेज खान बताया गया है। जबकि तीसरा आरोपी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला अंतर्गत मोहम्मदपुर गांव निवासी स्वर्गीय मुतुर्जा खान का पुत्र अब्बास बताया गया है।इस संबंध में थानाध्यक्ष राजीव रंजन सिंह ने बताया की मंगलवार के दिन डुमरी गांव निवासी साबिर खान के यहां हीरोइन बनाने की और बेचने की गुप्त सूचना पर पुलिस छापेमारी करने के लिए डुमरी गई थी जिसके क्रम में पुलिस के कार्य में ये लोग बाधा पहुंचाने लगे। जिसको मौजूद पुलिस बल की टीम ने गिरफ्त में लेकर थाने ले आई जहां कागजी प्रक्रिया पूरी करने के बाद बुधवार के दिन जेल भेज दिया गया। गाजीपुर जिले के मोहम्मदपुर का रहने वाला आरोपी अब्बास के ऊपर यूपी के हीं कई थानों में हत्या, एनडीपीएस व गैंगस्टर के मामले दर्ज है। वही डुमरी गांव का रहने वाला नौरेज खान के ऊपर भी हत्या व एनडीपीएस के मामले दर्ज हैं।

अवैध बिजली चोरी के विरुद्ध लोगों पर लगा जुर्माना

नावानगर (बक्सर) स्थानीय बिजली जेई बिपिन किशोर के नेतृत्व में टीम ने इकील गांव में छापेमारी किया छापेमारी में चार लोगों को गलत तरीके से बिजली जलाते पकड़ा गया। इसको लेकर जेई द्वारा सभी चारो पर जुमार्ना लगाते हुए सोनवर्षा ओपी में प्राथमिकी दर्ज कराया गया है। इसकी पुष्टि करते हुए जेई ने बताया कि गुप्त सूचना प्राप्त हुआ था की इकील गांव में कुछ लोग गलत तरीके से बिजली जला रहे है। सूचना पर तत्काल संतोष कुमार गुप्ता, सोनू हुसैन और चितरंजन कुमार सिंह के साथ इकील गांव में छापेमारी किया गया। छापेमारी में फूलकुमारी देवी, बद्री नारायण सिंह, विश्वनाथ चौधरी और संतोष चौधरी को गलत तरीके से 3 बिजली जलाते पकड़ा गया। इसको लेकर विश्वनाथ चौधरी पर 9624 संतोष चौधरी पर 5007, फूलकुमारी देवी पर 16776 और बद्री नारायण सिंह पर 23659 का जुमार्ना लगाते हुए सोनवर्षा ओपी में प्राथमिकी दर्ज कराया गया है।

ओपी पुलिस ने वाहन चालकों पर ऑनलाइन किया जुमार्ना

कोचस (रोहतास) गुरुवार को परसथुआ पुलिस ने वाहन जांच के दौरान चार पहिए तथा दो पहिया वाहनों से दस हजार रुपए का जुमार्ना ऑनलाइन किया है।इसकी जानकारी देते हुए ओपी थाना अध्यक्ष नीरज कुमार ने बताया कि प्रशासनिक विधि व्यवस्था तथा सड़क दुर्घटना मे कमी लाने हेतु पुलिस कप्तान के निर्देश पर जिले के सभी थानो मे वाहन जांच चलाया जा रहा है, जिसमे परसथुआ ओपी पुलिस ने थाना परिसर के सामने राष्ट्रीय राजमार्ग 319 पर वाहन जांच चलाया जिसमें दो पहिए तथा चार पहिए वाहनों के पास जरुरी के कागजात नहीं होने पर दस हजार रूपए का ऑनलाइन जुमार्ने के तौर पर किया है। वहीं उन्होंने यह भी कहा कि थाना क्षेत्र मे वाहन जांच अभियान निरंतर चलती रहेगी।

12 घंटे के अंदर बाइक लूट कांड का रोहतास पुलिस ने किया उद्भेदन , चार गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

रोहतास। बीते दिनों रोहतास जिले के नोखा थानाक्षेत्र अंतर्गत खराडी नहर पुल के समीप एक युवक के साथ मारपीट कर बाइक लूटने की घटना का पुलिस ने उद्भेदन कर लिया है। घटना में शामिल चार अपराधियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया तथा कानूनी प्रक्रिया पूरी करते हुए जेल भेज दिया गया।

मामले में गुरुवार को आयोजित एक प्रेसवार्ता के दौरान एसडीपीओ दिलीप कुमार ने बताया कि नोखा थानाक्षेत्र अंतर्गत खराडी नहर पुल के पास दो बाइक पर सवार 05 अपराधकर्मियों द्वारा एक व्यक्ति के साथ मारपीट कर बाइक व मोबाइल लूट की घटना को अंजाम दिया गया था। जिसको लेकर नोखा थाने में एफआईआर दर्ज की गई और छापेमारी के क्रम में बाइक की बरामदगी करते हुए चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि इस अपराध में शामिल तीन आरोपियों को अगरेर थानाक्षेत्र से गिरफ्तार किया गया है जबकि एक युवक को सासाराम मुफस्सिल थाना क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया है। जिसमें सोनू कुमार उर्फ राजा, निर्मल कुमार उर्फ भोला, साहेब कुमार एवं ऋषिकेश कुमार उर्फ राजा शामिल है। वहीं इनके पास से 02 मोटरसाईकिल एवं 03 मोबाईल भी बरामद किया गया है तथा अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।

भभुआ वार्ड 18 में चोरों ने दो जगहों से 10 बकरों सहीत हजारों का समान किया चोरी

प्रात : किरण संवाददाता

भभुआ (कैमूर) भभुआ वार्ड 18 में रात के समय चोरों ने बकरा गोदाम से दरवाजे की कुंडी उखाड़ कर 10 बकरों की चोरी कर लिया। वहीं बगल के गैराज की छत का कराकट उखाड़ कर 20 हजार की टायर चोरी कर फरार हो गये। सुबह जब गैराज मालिक एवं बकरा मालिक ने दुकान खोला तो देखा की बकरा और टायर चोरी कर लिया गया। दोनों ने भभुआ थाना में आवेदन देकर न्याय की गुहार लगाई है। दिए गए आवेदन में गैराज के मालिक भभुआ वार्ड नं 22 निवासी मोहम्मद कमाल ने बताया कि मेरे छत के कराकट उखाड़ कर चोरों ने 20 हजार रुपए का नया टायर की चोरी कर फरार हो गये।

वहीं दूसरा पीड़ित भभुआ वार्ड नं 16 निवासी एकबाल कुरैशी ने बताया कि बकरा रखने का गोदाम भभुआ वार्ड 18 में लल्लू भाई मॉल के पास है। जहां कल रात को बेखौफ चोरों ने लकड़ी का दरवाजा का कुंडी निकाल कर करीब 70 हजार रुपये के 10 बकरों की चोरी कर कर ली। वहीं चोर बकरा को बेचने के लिए मोहनिया ले गये जिसका वीडियो भी बनाया गया। भभुआं थानाध्यक्ष मुकेश कुमार ने आश्वासन दिया है कि जल्द से जल्द कार्यवाई की जाएगी।

बिक्रमगंज पुलिस ने वाहन जांच में 55 हजार पांच सौ रुपये का काटा ऑनलाइन चालान

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास):वरीय पदाधिकारियों के दिशा-निर्देश पर बिक्रमगंज थाने की पुलिस ने थानाध्यक्ष के नेतृत्व में चलाया वाहन जांच अभियान । जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष मनोज कुमार ने बताया कि वरीय पदाधिकारियों के दिशा-निर्देश पर स्थानीय शहर के तेंदुनी चौक एवं थाना चौक पर वाहन जांच अभियान पुलिस पदाधिकारियों के द्वारा चलाया गया । वाहन जांच के क्रम में पुलिस पदाधिकारियों के द्वारा वाहन चालकों से 55 हजार पांच सौ रुपये का ऑनलाइन चालान काटा गया ।

श्री कुमार ने कहा कि वाहन जांच अभियान निरंतर चलता रहेगा । वाहन जांच के क्रम में पदाधिकारियों ने चालकों के हेलमेट , ड्राइविंग लाइसेंस , ऑनर बुक, ट्रिपल लोडिंग ,डिक्की सहित अन्य बिंदुओं पर गहन रूप से जांच की । मौके पर स्थानीय थाना के वरीय पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस बल के जवान लोग मौजूद थे ।

पश्चिमी पट्टी में गुरुवार को लगी आग

प्रात : किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) नोखा नगर परिषद क्षेत्र के पश्चिमी पट्टी में गुरुवार को आग लग गई। पचिमी पट्टी मस्जिद के पीछे रखे गल्ले में आग लगी और तेजी से फैलनी लगी।

कुछ लागों ने जब देख तो शोर मचाया। आग की बात फैलते ही कोहराम मच गया, मौके पर बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए। नोखा थाने की पुलिस को भी सूचना दी गई। नोखा पुलिस ने अगिनशमन को सूचना दी। सूचना पर पहुंची अगिनशमन वाहन की टीम ने स्थानीय लोगों की सहायता से आग पर काबू पाया, जिससे बड़ी घटना होने से बच गई। स्थानीय लोगों ने बताया कि बिजली की शार्ट-सर्किट से गल्ला में आग लगी है। आगली में दो किसानों विंध्याचल और अच्छेलाल का गल्ला पूरी तरह जल गया है। जबकि आस-पास रखा आधे दर्जन किसानों का गल्ला आंशिक रूप से जला है। अगर फायर ब्रिगेड सही समय पर ना आता, तो आग तेजी से फैल सकती थी, लेकिन समय रहते आग पर काबू पा लिया गया। ग्रामीणों ने पीड़ित किसानों के लिए मुआवजे की मांग की है। बताते हैं कि अच्चे लाल सपरिवार बाहर गया है, उसके लौटने पर आवेदन देकर क्षतिपूर्ति की मांग प्रशासन से की जाएगी।

बाईकों के आमने-सामने भिडंत में दो की मौत, अन्य दो घायल

बहन को इंटर परीक्षा दिलाकर लौटने के क्रम में भाई की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

रोहतास। सासाराम-बक्सर स्टेट हाइवे पर दो बाइकों की आमने की टक्कर में दो की मौत हो गई है, जबकि दो गंभीर रूप से घायल हैं। घायलों को इलाज के लिए जिला सदर अस्पताल सासाराम भर्ती कराया गया। जहां बेहतर इलाज हेतु चिकित्सक ने एक को गंभीर हालत में रेफर कर दिया,बताया जाता है कि इंटर की परीक्षा देने आई बहन अपने भाई एवं चचेरे भाई के साथ एक ही बाइक पर सवार हो अपने गांव कोनार लौट रहे थे। इस क्रम में तीनों जैसे ही सासाराम-बक्सर स्टेट हाइवे पर बराडीह चितौली मोड़ समीप पहुंचे कि दूसरी ओर से आ रहे बाइक से टककर हो गई। जिस घटना में कोनार निवासी योगेंद्र सिंह के बेटे बिट्टू सिंह की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि उसकी बहन प्रिया कुमारी गंभीर रूप से घायल हो गई। जबकि इनका चचेरा भाई सत्यम सिंह भी गंभीर रूप से घायल हो गया। जबकि दूसरे मृतक की पहचान कैमूर जिला के सबार थाना क्षेत्र के ठकुरहठ गांव निवासी स्वर्गीय दुखी पासवान का 30 30 वर्षीय बेटा अतुल पासवान बताया जाता है। जबकि अन्य दोनों घायलों को गंभीर हालत में सदर अस्पताल के ट्रामा सेंटर लाया गया, जहां प्रिया कुमारी का इलाज चल रहा है। जबकि देवेंद्र सिंह के बेटे सत्यम सिंह के प्राथमिक इलाज के बाद हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया गया है। सासाराम मुफ्फसिल थानाध्यक्ष संजीत कुमार ने बताया कि बाइक के आमने-सामने की टक्कर में दो कि मौत हुई है। दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल लाया गया है। वही घटना मामला में पुलिस अग्रिम कार्रवाई में जुट गई है।

परिवारिक विवाद में दो पक्षों के बीच हुई मारपीट में वृद्ध घायल, रेफर

संझौली(रोहतास)। थाना क्षेत्र के सुसाड़ी गांव में गुरुवार की दो पक्षों के बीच हुई मारपीट में एक वृद्ध व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। मारपीट का कारण परिवारिक विवाद बताया जा रहा है। वृद्ध घायल सुसाड़ी गांव निवासी शिव जी साह बताए जाते है। घायल को स्थानीय पीएचसी में इलाज के बाद बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल सासाराम हेतु रेफर कर दिया है, जहां उनका इलाल चल रहा है। वही मारपीट को ले सुसाड़ी निवासी शिव जी साह द्वारा स्थानीय थाने में आवेदन दी गई है। थानाध्यक्ष मुकेश कुमार ने बताया कि आपसी परिवारिक विवाद में दो पक्षों के बीच मारपीट में एक पक्ष से सुसाड़ी गांव निवासी शिव जी साह घायल हुए है। मारपीट को ले सुसाडी निवासी शिव जी साह ने थाने में आवेदन दिया है। मारपीट में जो लोग शामिल होंगे, जांच के बाद उनके विरुद्ध करवाई की जाएगी।

बकाया राशि रहने के कारण विद्युत कनेक्शन कटने के पश्चात जलाना पड़ा महंगा, विभाग ने लगाया जुर्माना

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास):बिक्रमगंज नगर परिषद में बिलिंग गुणवत्ता एवं बकायेदार उपभोक्ताओं की जांच को लेकर एक जांच दल का गठन कर विद्युत ऊर्जा चोरी को लेकर कनीय विद्युत अभियंता, बिक्रमगंज नवदीप गोयल के नेतृत्व में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। बताते चले कि बकायेदार उपभोक्ताओं का विद्युत विपत्र की राशि बकाया रहने के कारण विभाग द्वारा विशेष अभियान चलाकर विद्युत कनेक्शन काट रही है परंतु कुछ उपभोक्ताओं द्वारा बिना बकाया राशि एवं रिकनेक्शन शुल्क जमा किये अवैध रूप से तार जोड़कर विद्युत ऊर्जा की चोरी करने लग रहे हैं। इसी बीच नगर परिषद बिक्रमगंज अंतर्गत ग्राम-धनगाई के उपभोक्ता का बकाया पर विद्युत कनेक्शन कटने के पश्चात अवैध रूप से तार जोड़कर जलाने को लेकर ईश्वर दयाल सिंह पर 21937 रुपये दंडित राशि लगाया गया है। बात दें कि श्री सिंह पर 56791 बकाया रहने के कारण विभाग द्वारा अस्थायी रूप से कनेक्शन काटा गया था परंतु बिना बकाया राशि जमा किये अवैध रूप से बिजली की चोरी की जा रही थी। बकाया राशि तथा दंडित राशि दोनों को समायोजित करने के पश्चात विभाग ने 78728 रुपये राजस्व की क्षति लगाई गई है। आगे बताते चलें कि मीटर बाइपास कर विद्युत ऊर्जा चोरी करने को लेकर ग्राम-धनगाई के ही सुशीला कुमारी पर 13950, चुनमुमा देवी पर 8288, लालबाबू सिंह पर 50411, कमलेश सिंह पर 8973, जितेंद्र कुमार सिंह पर 8587 रुपये दंडित राशि लगाई गई है। सहायक विद्युत अभियंता, बिक्रमगंज राज कुमार के द्वारा बताया गया की बिजली चोरी के खिलाफ विशेष अभियान चलाया जा रहा है। जिसमे उपभोक्ताओं के परिसर में लगे सर्विस तार, मीटर, बिलिंग एवं बिल के ससमय भुगतान की सघन जांच की जा रही है। जांच में मीटर की सील टूटी हुई, टेम्परिंग या बाईपास पाए जाने पर तत्काल प्राथमिकी दर्ज कराया जा रहा है साथ ही साथ बकायेदार उपभोक्ता का मौके पर ही बिजली कनेक्शन काटा जा रहा है।

बूथ संबंधित फीडबैक को लेकर भाजपा ने की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास)। गुरुवार को गांव चलो अभियान अंतर्गत काराकाट विधानसभा में घुसियां कलां शक्ति केंद्र पर बूथ नंबर 120 एवं 121 पर बुथ कमेटी की बैठक हुई । जिसकी अध्यक्षता संजय कुमार गुप्ता ने की । बैठक में ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष सह काराकाट लोक सभा संयोजक नवीन चंद्र साह ने बुथ संबंधित फीडबैक लिया तथा संगठनात्मक कार्यों की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए वोटर लिस्ट वर्गीकरण करने को कहा । साथ ही समर्थक तटस्थ विरोधी यानी सामाजिक वर्गीकरण के आधार पर बुथ की श्रेणी बनाना एबीसी ,अच्छा , सामान्य व कमजोर । साथ ही साथ प्रत्येक माह के अंतिम रविवार को प्रधानमंत्री के मन की बात सुनने का आग्रह किया तथा 11 फरवरी को पंडित दीनदयाल की पुण्यतिथि समर्पण दिवस के रुप में मनाने को कहा। तत्पश्चात गांव के भ्रमण का कार्यक्रम सदस्यों के साथ संपन्न किया गया तथा जन कल्याणकारी योजनाओं से आम जनता को घर-घर जाकर अवगत कराया गया । इस क्रम में 200 पत्रक का वितरण तथा 25 प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना का लाभ लेने हेतु उत्सुक हुए । टोला सेवक , जीविका दीदी ,आशा , ममता , आंगनवाड़ी सहित अन्य लोगों से संपर्क स्थापित किया गया । इस प्रवास के कार्यक्रम में काराकाट विधानसभा विस्तारक माधव केसरी , पालक रामजी सिंह , प्रकाश कुमार , जवाई प्रसाद गुप्ता , रमेश चौधरी, अंजली कुमारी , मीना देवी , बजरंग दल के रामबाबू कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित थे ।

ग्राम पंचायत मोरौना में बैठक आयोजित

बिक्रमगंज (रोहतास): बिक्रमगंज प्रखंड के ग्राम पंचायत मोरौना में ग्राम पंचायत डिवेलपमेंट प्लान के सफल संचालन एवं पंचायत स्तरीय लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जीपीपीएफटी फोरम के गठन को लेकर बैठक आहूत की गई । बैठक ग्राम पंचायत भवन मोरौना में मुखिया की अध्यक्षता में आहूत की गई । नीति आयोग के सहयोगी संस्था पिरामल फाउंडेशन के प्रोग्राम लीडर कुश कुमार एवं अर्जुन गोस्वामी ने पंचायत के चिन्हित थीम पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया और कैसे पंचायत को मॉडल पंचायत बनाया जा सके । इस पर विस्तारपूर्वक बताया । बैठक में सभी नामित सदस्य एवं प्रतिभागियों के सर्व सहमति से जीपीपीएफटी फोरम के गठन की सहमति बनी । वहीं ग्राम पंचायत विकास योजना के निर्माण प्रक्रिया में सम्मिलित किए जाने वाले मुद्दे पर भी चर्चा की गई । मौके पर बिक्रमगंज बीसीएम अनीश नारायण , पिरामल स्वास्थ्य के प्रोग्राम लीडर कुश कुमार, अर्जुन गोस्वामी, सभी आशा , एडब्ल्यूडब्ल्यू , जीविका दीदी , शिक्षक , एएनएम सीता कुमारी सहित वार्ड सदस्यों ने भाग लिया ।

फेसबुक लाइव से एसडीपीओ ने सुनी लोगों की समस्या, निष्पादन का दिया भरोसा

बिक्रमगंज(रोहतास)। विभागीय कार्यक्रम के अंतर्गत गुरुवार को फेसबुक लाइव आकर बिक्रमगंज एसडीपीओ कुमार संजय ने लोगों से संवाद स्थापित कर समस्याओं को सुना। इसके साथ ही संबंधित व्यक्तियों को उनकी समस्या निष्पादित कराने का भरोसा दिया। पुलिस प्रशासन द्वारा किए जा रहे इस प्रयास का लोगों ने जमकर सराहना किया। इस कार्यक्रम से जुड़कर कई लोगों ने कई तरह की समस्याओं को रखने का काम किया। पुलिस विभाग के अंतर्गत आने वाली समस्याओं को खुद देखने एवं दूसरे विभाग से संबंधित समस्याओं को संबंधित विभागों में स्थानांतरित करने की बात अधिकारी द्वारा की गई। 32 मिनट तक चले इस कार्यक्रम के माध्यम से सैकड़ो लोगों ने सैकड़ो समस्याओं को रखने का काम किया। हालांकि सभी की समस्या अधिकारी द्वारा निपटा दिया जाएगा ऐसा संभव नहीं दिख रहा है। परंतु लोगों से जुड़ने एवं उन्हें संतुष्ट रखने का एक अनोखा पहल यह कार्यक्रम प्रतीत हो रहा है।

मां सरस्वती की प्रतिमा को अंतिम रूप देने में जुटे मूर्तिकार

14 फरवरी को मनेगी बसंत पंचमी पूजन,छात्रों में दिखी खुशी

प्रात : किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) प्रखंड क्षेत्र के नगर परिषद नोखा बाजार विभिन्न पंचायत स्थित कुम्हार टोली में मां सरस्वती पूजनोत्सव की तैयारी जोरों पर है। जिस पूजन को लेकर मां सरस्वती की प्रतिमा को मूर्तिकारों द्वारा दिन-रात मेहनत कर अंतिम रूप देने में जुटे है।

ज्ञात हो कि फरवरी को मां की पूजन साथ बसंत पंचमी का त्योहार मनाया जाएगा। इसकी तैयारी थाना क्षेत्र के विभिन्न स्थानों सहित शैक्षणिक संस्थानों में जोरों से की जा रही है।जिसको लेकर इस ठंड भरी मौसम में भी बाजारों में विभिन्न जगहों पर मां सरस्वती की प्रतिमा बना उन्हें अंतिम रूप देने में कलाकार जुटे है। इस संदर्भ में नोखा नगर परिषद कुम्हार टोली मूर्तिकार मनोज कुमार ने बताया कि पिछले कई वर्षो से पूर्वजों के सिखाएं मार्ग पर चलकर वह मूर्ति बना रहे हैं। कलाकार मनोज कुमार ने बताया कि माता सरस्वती की मूर्ति को विभिन्न डिजाइनों में ग्राहकों के मांग अनुसार बनाते हैं। साथ ही साथ मिट्टी के अलावा मूर्ति निर्माण करने में पेंट, श्रृंगार की वस्तु सहित अन्य सामान खरीदने पड़ते हैं। जिस मूर्ति का निर्माण कार्य सभी कलाकार करीब ढ़ाई महीने पूर्व से ही बनाने में लग जाते हैं। मूर्तिकार ने बताया कि बड़ी मूर्ति बनाने में करीब तीन दिन व छोटी मूर्ति करीब एक दिन में बनाई जाती है। उन्होंने बताया कि प्रतिमाएं आर्डर पर 800 से 15000 रुपये तक की उपलब्ध रहती हैं। अब सिर्फ प्रतिमाओं को सजाने व आकर्षक रूप देने का कार्य किया जा रहा है। दूसरी तरफ इस पूजन को लेकर जिला क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर सरकारी व गैर सरकारी सहित कोचिंग संस्थानों के छात्रों में काफी उत्सुकता देखने को मिल रही है। जो अभी से ही पूजा की भरपूर तैयारी में जुट गए है। ज्ञान हो कि सरस्वती पूजा और वसंत पंचमी हर साल शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाई जाती है। जो इस बार 2024 में, सरस्वती पूजा और वसंत पंचमी 14 फरवरी बुधवार को मनाई जाएगी। जिसका शुभ मुहूर्त 14 फरवरी 2024 बुधवार को सुबह 07 : 10 बजे से 12 बजकर 22 मिनट पर होगी।

स्कूलों में चलाया गया फाइलेरिया जागरूकता अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

दुर्गावती। स्थानीय प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय रोहुआं में गुरुवार को ब्लॉक कोऑर्डिनेटर पीसीआई दुर्गावती धनंजय कुमार के द्वारा फाइलेरिया जागरूकता अभियान चलाया गया। जिसमें बच्चों को फाइलेरिया (हाथी पाँव) के लक्षण, बचाव, उपचार, प्रबंधन के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि फाइलेरिया के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए यह कार्यक्रम 10 फरवरी से लेकर 27 फरवरी तक चलेगा। उन्होंने अपने अनुभव साझा करने के साथ ही इस रोग के लक्षण, बचाव, उपचार, प्रबंधन आदि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। कोऑर्डिनेटर धनंजय कुमार के द्वारा सभी बच्चों को मच्छरों से बचाव के तरीके बताए तथा फुल आस्तीन के कपड़े पहनने के लिए प्रेरित किया गया। उन्होंने कहा कि घर के आस-पास जलभराव न होने दें। जहां स्वच्छता रहता है वहां मच्छरों का प्रकोप कम होता है।

विचाराधीन कैदी की हुई मौत

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। छपरा मंडल कारा के हत्या आरोपित विचाराधीन कैदी की मौत छपरा सदर अस्पताल में उपचार के दौरान हो गई। जिसका पोस्टमार्टम मजिस्ट्रेट की नियुक्ति में मेडिकल बोर्ड के द्वारा किया गया। मृत विचाराधीन कैदी सारण जिले के रसूलपुर थाना अंतर्गत चपरैठा गांव निवासी स्वर्गीय रामाश्रय गिरी का 70 वर्षीय पुत्र जयराम गिरी बताया गया है। उनकी मौत कारण सांस की बीमारी बताया जा रहा है। मंडल कारा में तबीयत बिगड़ने पर उन्हें कुछ दिन पहले ही छपरा सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां उपचार के दौरान आज मौत हुई है। उनके मौत की सूचना मिलते ही परिवार वाले रोते-पीटते छपरा सदर अस्पताल पहुंचे,जहां उनके द्वारा बताया कि यह गया कि उन्हें सांस की बीमारी थी जिसके कारण मौत हुई है। वहीं जिला प्रशासन के द्वारा इस मामले में उक्त कैदी के पोस्टमार्टम कराए जाने को लेकर मजिस्ट्रेट बहाल किया गया और सदर अस्पताल से मेडिकल बोर्ड की मांग की गई। जिस पर सिविल सर्जन डॉक्टर सागर दुलाल सिन्हा के द्वारा अस्पताल उपाधीक्षक डॉक्टर आर एन तिवारी की देखरेख में मेडिकल बोर्ड का गठन किया। जिसके बाद शव का पोस्टमार्टम मेडिकल बोर्ड द्वारा किए जाने के बाद उसे परिवार वालों को सौंप दिया गया।

उपमुखिया की कुर्सी बच गई

प्रात : किरण संवाददाता

अमनौर। स्थानीय प्रखण्ड स्थित अमनौर कल्याण पंचायत के उप मुखिया के विरुद्ध लगाए गए अविश्वास प्रस्ताव कोरम के अभाव में बिना चर्चा के हुआ खारिज।दो फरवरी को उप मुखिया के बीरुद्ध दस सदस्यीय वार्ड सदस्यों ने पंचायत सचिव को हस्ताक्षर युक्त आवेदन देकर अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के लिए बैठक बुलाने की मांग किया था।जिस आलोक में गुरुवार को पंचायत सचिव के उपस्थिति में अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के लिए बैठक बुलाई गई थी।बैठक में 15 वार्ड सदस्यों में मुखिया समेत मात्र छ वार्ड सदस्य ही उपस्थित हुए।उप मुखिया भी बैठक में नही हुए शामिल।पंचायत सचिव राजनेश्वर प्रसाद ने एक तिहाई बहुमत नही होने के कारण कोरम के अभाव में खारिज कर दिया। जिससे उप मुखिया बिकाश कुमार सिंह की कुर्सी बरकरार रह गई।

एनसीपी घड़ी अजीत पवार के मान्यता मिलने पर आशुतोष सिंह ने सासाराम में मिठाई बाटकर खुशियां मनाई

प्रात : किरण संवाददाता

सासाराम। बिहार में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी पोस्ट ऑफिस सासाराम मिठाई बात कर खुशियां मनाते सासाराम शहर में भ्रमण कर मिठाइयां लोगों को खिलाया गया और खुशियां मनाया गया,जिसका नेतृत्व आशुतोष सिंह जिला प्रभारी रोहतास सह मुख्य प्रवक्ता बिहार प्रदेश ने किया इस मौके पर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के सभी पदाधिकारी कार्यकर्ता शहर में भ्रमण करते हुए,खुशियां मनाई और जिला कार्यालय सासाराम से चलकर पोस्ट ऑफिस चौराहा पर बोलते हुए आशुतोष सिंह मुख्य प्रवक्ता बिहार प्रदेश सह उपाध्यक्ष प्रदेश उपाध्यक्ष जिला प्रभारी रोहतास आशुतोष सिंह ने कहा कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी अजीत पवार राष्ट्रीय अध्यक्ष सह उपमुख्यमंत्री महाराष्ट्र को ही असली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माने हैं और भारत सरकार चुनाव आयोग ने अजित पवार को ही घड़ी सिंबल और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की मान्यता दिए हैं इस खुशी में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के रोहतास जिला कार्यकारी अध्यक्ष रामबाबू के संचालन में मुख्य अतिथि सह जिला प्रभारी रोहतास आशुतोष सिंह मुख्य प्रवक्ता बिहार प्रदेश के नेतृत्व में सासाराम बिहार में चारों तरफ खुशियां मनाते राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के लोग इस मौके पर मुख्य रूप से आए आशुतोष सिंह मुख्य प्रवक्ता बिहार प्रदेश उपाध्यक्ष,कार्यकारी रोहतास जिला अध्यक्ष रामबाबू,महिला जिला अध्यक्ष संगीता देवी, अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष आमिर एकबाल वालीजी,भूतपूर्व सैनिक जिला अध्यक्ष परशुराम सिंह,किसान जिला अध्यक्ष संजय दुबे,खुशबु कुमारी,अमरजित गुप्ता,विशेश्वर प्रसाद गुप्ता,सिकंदर शर्मा,संतोष राय,पिंटू राय,दिपक कुमार सहित सैकड़ो लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

सतुआ पंचायत के पैक्स अध्यक्ष के आसामयिक मौत पर मचा कोहराम

बनियापूर (सारण) प्रखंड के सतुआ पंचायत के वर्तमान पैक्स अध्यक्ष के असामयिक निधन पर पंचायत सहित स्वजनों मे कोहराम मच गया है। बता दे कि सतुआ पंचायत के वर्तमान पैक्स अध्यक्ष जगलाल राय के 45 वर्षीय रजनीश यादव का पटना के पारस अस्पताल मे हुई मौत की सूचना पाते घटना से परिवार मे कोहराम मच गया है।बताया गया है कि प्रखंड के आनंदपुर गाव निवासी पैक्स अध्यक्ष रजनीश यादव 26 जनवरी को बनियापुर गणतंत्र दिवस समारोह मे शामिल होने आए थे जहा अचानक सीने मे दर्द शुरू हो गया,जहा त्वरित स्थानीय चिकित्स्कों से इलाज के बाद उन्हे पटना के निजी अस्पताल मे इलाज चल रहा था,जहा इलाज के क्रम मे उनकी मौत हो गयी।जिससे परिजनों साहित पूरे पंचायत मे शोक की लहर दौड़ गयी है।

खतरनाक और खूंखार अवतार में होंगे वरुण

जवान फेम एटली के बैनर तले बनी वरुण धवन की फिल्म बेबी जॉन का फर्स्ट लुक वीडियो रिलीज हो गया है। फिल्म के नाम के साथ ही इसके रिलीज डेट की भी घोषणा हो गई है। बड़े पर्दे पर इन दिनों एक्शन फिल्मों का जोर है।

जवान के डायरेक्टर एटली के सहयोग से बनी वरुण धवन की धमाकेदार एक्शन फिल्म बेबी जॉन का फर्स्ट लुक वीडियो आ गया है। करीब 60 सेकेंड के इस वीडियो में वरुण धवन का अवतार और अंदाज देख आपके भी रोंगटे खड़े होने वाले हैं। इस फिल्म में वरुण धवन के साथ कीर्ति सुरेश और वामिका गब्बी भी नजर आने वाली हैं। बॉलीवुड और साउथ इंडियन फिल्म इंडस्ट्री के इस मेल को देखकर यही लग रहा है कि 2024 में एक बार फिर पर्दे पर गर्मी बढ़ने वाली है। वरुण धवन लंबे समय बाद बेबी जॉन में दमदार एक्शन अवतार में नजर आने वाले है। फर्स्ट लुक वीडियो में उनका अंदाज खतरनाक और खूंखार है। पहले इस फिल्म का टाइटल कंफर्म नहीं था। पिछले दिनों शूटिंग करते हुए वरुण के पैरों में चोट भी आ गई थी।

खूंखार, खतरनाक वरुण धवन का बेबी जॉन अवतार

फिल्म के टाइटल की घोषणा करते हुए जो वीडियो शेयर किया गया है, उसमें दमदार बैकग्राउंड म्यूजिक के साथ वरुण धवन हाई-ऑक्टेन एक्शन करते नजर आ रहे हैं। वह इसमें सिंघासन पर एक परिंदे को हाथ में पकड़े बैठे हुए हैं और खूंखार लग रहे हैं, जबकि अगले ही पल गोलियां चला रहे हैं। जवान की बंपर सफलता के बाद से ही एटली और वरुण धवन की इस फिल्म को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म था। ए. कालीस्वरन हैं बेबी जॉन के डायरेक्टर बेबी जॉन को जहां एटली प्रजेंट कर रहे हैं, वहीं इसके डायरेक्टर ए. कालीस्वरन हैं। मुराद खेतानी, प्रिया एटली और ज्योति देशपांडे भी इस फिल्म को प्रजेंट कर रहे हैं। यह फिल्म जियो स्टूडियोज, एटली के ए फॉर एप्पल स्टूडियोज और सिने1 स्टूडियोज के बैनर तले बनी है।

फिल्म 'कुछ खट्टा हो जाए' से रही है सई मांजरेकर की वापसी

गुरु रंधावा और सई मांजरेकर की फिल्म कुछ खट्टा हो जाए का ट्रेलर रिलीज हो गया है। यह एक कॉमेडी जॉनर की फिल्म है। पंजाबी सिंगर गुरु रंधावा इसके जरिए एक्टिंग डेब्यू कर रहे हैं। सलमान खान की फिल्म दंबग-3 की लीड एक्ट्रेस सई मांजरेकर भी वापसी कर रही हैं। ट्रेलर की शुरुआत विजय राज की आवाज में इंट्रोडक्शन देते होती है। गुरु रंधावा का किरदार यानी हीर चावला आगरा का रहने वाला एक आलसी और अक्खड़ स्वभाव का दिलफेक लड़का है। उसकी गर्लफ्रेंड के रोल में सई मांजरेकर एक पढ़ाकू लड़की हैं। दोनों की शादी हो जाती है। अब चावला परिवार चाहता है कि जल्दी से परिवार को उनका चिराग मिल जाए। हालांकि लड़की के कुछ और सपने हैं। वो किसी भी तरीके से ब्रुस बनना चाहती है। ट्रेलर में दिखाया गया है कि गुरु और सई अपनी फैमिली को खुश करने के लिए फेक प्रेग्नेंसी प्लान करते हैं। अब आगे क्या होता है, इसके लिए हमें फिल्म की रिलीज का इंतजार करना पड़ेगा। फिल्म 16 फरवरी को रिलीज हो रही है। गुरु और सई के अलावा फिल्म में अनुपम खेर और ईला अरुण जैसे कलाकार भी नजर आएंगे। सई की यह तीसरी हिंदी फिल्म होगी। वो इससे पहले 'दबंग 3' और 'मेजर' में नजर आ चुकी हैं। वहीं गुरु इससे पहले हिंदी मीडियम, ब्लैकमेल और टाइम टू डांस जैसी फिल्मों के गानों में स्पेशल अपीयरेंस दे चुके हैं। अब उनकी यह पहली फुल फ्लेज्ड फिल्म होने जा रही है। इस फिल्म को अमित और लवीना भाटिया ने प्रोड्यूस किया है। वहीं इसके डायरेक्टर जी. अशोक हैं। अशोक इससे पहले साउथ में अनुष्का शेट्टी स्टारर सुपरहिट फिल्म 'भागमति' बना चुके हैं। बॉलीवुड में उन्होंने भूमि पेडनेकर के साथ 'दुर्गामति' नाम से इसका रीमेक बनाया था।

जान्हवी कपूर को नहीं मिला सीता का रोल, रणबीर के अपोजिट दिखेंगी साई पल्लवी

डायरेक्टर नितेश तिवारी की फिल्म रामायण इन दिनों चर्चा में है। फिल्म की फाइनल कास्टिंग जानने के लिए दर्शक बहुत एक्साइटेड हैं। वहीं सीता की कास्टिंग को लेकर कई एक्ट्रेसेस के नाम सामने आए थे। पहले खबर आई थी कि फिल्म में सीता का रोल साउथ एक्ट्रेस साई पल्लवी निभाएंगी। इसके बाद हाल ही में खबर आई कि मेकर्स सीता के रोल के लिए जान्हवी कपूर को अप्रोच कर रहे हैं। लेकिन रिपोर्ट के मुताबिक सीता के किरदार के लिए साई पल्लवी को फाइनल किया गया है। रिपोर्ट की मानें तो, रामायण में श्रीराम का किरदार रणबीर कपूर प्ले करेंगे। वहीं हनुमान जी के रोल के लिए सनी देओल को साइन किया गया है। रावण का किरदार साउथ एक्टर यश निभाते नजर आएंगे। फिल्म की शूटिंग इसी साल अप्रैल से शुरू होगी। फिलहाल, रामायण के प्री-प्रोडक्शन पर काम किया जा रहा है। जान्हवी कपूर को अप्रोच करने को लेकर मेकर्स ने इस खबर का खंडन किया है। उनका कहना है कि ये अफवाह है। हमारी टीम को सीता के रोल के लिए साई पल्लवी और आलिया भट्ट में से एक एक्ट्रेस को सिलेक्ट करना था। मेकर्स ने साई पल्लवी को इस रोल के लिए फाइनल किया है। रिपोर्ट के मुताबिक, रामायण का पहला पार्ट 2025 में दिवाली के आस-पास आएगा। मेकर्स फिल्म को दो पार्ट में रिलीज करने की सोच रहे हैं। वो रामायण की पूरी कहानी को दो पार्ट में ठीक तरीके से दिखाना चाहते हैं। डायरेक्टर नितेश तिवारी रामायण को डायरेक्ट करेंगे। इस फिल्म में राम, सीता, हनुमान और रावण के किरदार लॉक किए जा चुके हैं, बाकी के किरदारों की कास्टिंग जारी है।

नए प्रोजेक्ट की तैयारी कर रहे सैयामी खेर और निर्देशक अनुराग कश्यप

चोक्ड में अपने सहयोग के बाद, एक्ट्रेस सैयामी खेर और निर्देशक अनुराग कश्यप एक और प्रोजेक्ट के लिए तैयारी कर रहे हैं। सूत्र बताते हैं कि प्रतिभाशाली जोड़ी जल्द ही अपने अगले प्रोजेक्ट के बारे में आधिकारिक घोषणा करने वाली है। सैयामी और अनुराग न केवल प्रोफेशनल रूप से जुड़े हुए हैं, बल्कि वे दोस्ती का एक मजबूत बंधन भी साझा करते हैं। चोक्ड में रोशन मैथ्यू, अमृता सुभाष और राजश्री देशपांडे भी सहायक भूमिकाओं में हैं। 2020 में रिलीज हुई यह फिल्म 2016 के भारतीय बैंक नोट विमुद्रीकरण की पृष्ठभूमि पर आधारित है, यह फिल्म एक बैंक कैशियर की कहानी बताती है जो अपने रसोई सिंक में छिपी हुई नकदी का पता लगाता है। अनुराग, जो मेलबर्न में फिल्म महोत्सव में सैयामी की लेटेस्ट फिल्म घूमर के प्रीमियर के समय मौजूद थे, ने अपनी प्रशंसा व्यक्त की। कश्यप की लेटेस्ट फिल्म कैनेडी थी, जो 2023 में रिलीज हुई। इसका प्रीमियर 2023 कान्स फिल्म फेस्टिवल, सिडनी फिल्म फेस्टिवल और बुकियॉन इंटरनेशनल फैंटास्टिक फिल्म फेस्टिवल में हुआ था।

गॉसिप के बाद फीस बढ़ाने पर विचार कर सकती हैं रश्मिका मंदाना

पिछले साल 1 दिसंबर को रिलीज हुई फिल्म 'एनिमल' ने बॉक्स ऑफिस पर धूम मचा दी। साउथ इंडियन डायरेक्टर संदीप रेड्डी वांगा की यह फिल्म रणबीर कपूर, अनिल कपूर, बॉबी देओल, रश्मिका मंदाना, तृप्ति डिमरी जैसे सितारों से सजी थी। फैंस ने इसके सभी कलाकारों पर भरपूर प्यार लुटाया। साउथ इंडियन एक्ट्रेस रश्मिका भी फिल्म के बाद से ही जबरदस्त लाइमलाइट में है। उनकी रणबीर के साथ जोड़ी खूब फबी। उन्होंने 'गीतांजलि' का किरदार निभाया था। रश्मिका की फैन फॉलोइंग में तगड़ा इजाफा हुआ है। अब खबर आ रही है कि फिल्म की सक्सेस के बाद से रश्मिका ने अपनी फीस बढ़ा दी है। अब इस पर रश्मिका की रिएक्शन सामने आई है। एक पोर्टल ने लिखा कि रश्मिका ने 'एनिमल' की सफलता के बाद अपनी फीस बढ़ा दी है और अब वह एक फिल्म के लिए 4-4.5 करोड़ रुपए ले रही हैं। इस पर रश्मिका ने जवाब दिया, कौन कह रहा है। यह सब देखने के बाद लगता है कि मुझे इस बारे में सोचना चाहिए। अगर मेरे प्रोड्यूसर पूछेंगे क्यों फीस बढ़ानी है तो मैं कहूंगी कि मीडिया कह रहा है सर। मुझे उनकी बातें माननी चाहिए शायद...क्या करूं अब?

लाल सलाम में एक्सटेंडेड कैमियो रोल में नजर आएंगे रजनीकांत

रजनीकांत की पिछले साल आई फिल्म 'जेलर' ने पूरी दुनिया में धमाल मचा दिया था। इसने बॉक्स ऑफिस पर ताबड़तोड़ कमाई की। 72 साल की उम्र में भी रजनीकांत का जलवा कहीं कम नहीं हुआ और उन्हें लेकर फैंस में जबरदस्त दीवानगी देखी गई। रजनीकांत फिलहाल अपनी बेटी ऐश्वर्या के डायरेक्शन में बनी फिल्म 'लाल सलाम' के कारण सुर्खियों में हैं। लाल सलाम से ऐश्वर्या ने डायरेक्शन में 9 साल बाद कमबैक किया है। फिल्म 9 फरवरी को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। हालांकि इससे पहले इसका ट्रेलर रिलीज कर दिया गया, जिसे देख फैंस की उत्सुकता और बढ़ गई है। फिल्म में विक्रांत और विष्णु लीड रोल में हैं। रजनीकांत फिल्म में एक्सटेंडेड कैमियो रोल में नजर आएंगे। फिल्म तमिल, तेलुगु, हिंदी, मलयालम और कन्नड़ में रिलीज होगी। ट्रेलर क्रिकेट ड्रामा के साथ धर्म, राजनीति और सत्ता जैसे विषयों के इर्द-गिर्द घूमता है। इसमें दिग्गज क्रिकेटर कपिल देव की भी झलक देखने को मिली। फिल्म लाइका प्रोडक्शंस द्वारा निर्मित और ए सुबास्करन द्वारा प्रस्तुत की गई है। रजनीकांत मोइदीन भाई के किरदार में नजर आएंगे। म्यूजिक ऑस्कर विजेता संगीतकार एआर रहमान ने तैयार किया है। निर्माण पिछले साल मार्च में शुरू हुआ था और शूटिंग मुंबई, चेन्नई और पुडुचेरी में हुई है। रजनीकांत के सभी फैंस को पूरा यकीन है कि 'लाल सलाम' सुपरस्टार के लिए एक और ब्लॉकबस्टर फिल्म है।

दो साल बाद बतौर लीड हीरो कमबैक करेंगे जॉन अब्राहम

बॉलीवुड में आए दिन कोई ना कोई नई अनाउंसमेंट होती रहती है। बुधवार को भी कई फिल्ममेकर्स ने अपनी फिल्मों के फर्स्ट लुक पोस्टर और ट्रेलर शेयर किए। जॉन अब्राहम की अगली फिल्म 'वेदा' का फर्स्ट लुक पोस्टर सामने आया है। इस फिल्म को निखिल आडवाणी डायरेक्ट करेंगे। इससे पहले दोनों साथ में 'बाटला हाउस' में काम कर चुके हैं। एक्शन-ड्रामा वेदा इस साल 12 जुलाई को थिएटर्स में रिलीज होगी। इसमें जॉन के अलावा शरवरी वाघ और अभिषेक बनर्जी जैसे कलाकार भी नजर आएंगे। जॉन आखिरी बार पिछले साल जनवरी में रिलीज हुई 'पठान' में नजर आए थे। हालांकि, उस फिल्म में उन्होंने विलेन का रोल प्ले किया था। बतौर लीड जॉन आखिरी बार 2022 में रिलीज हुई एक विलेन रिटर्न्स में नजर आए थे।

विवेक ओबेरॉय से कभी मदद नहीं मिली

अक्षय ओबेरॉय ने मात्र 12 साल की उम्र से अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की। उन्होंने साल 2002 में आई फिल्म अमेरिकन चाय में एक बाल कलाकार का किरदार निभाया था। हाल ही में अक्षय, ऋतिक रोशन और दीपिका पादुकोण स्टारर फिल्म फाइटर में नजर आए हैं। अक्षय ओबेरॉय बॉलीवुड एक्टर विवेक ओबेरॉय के कजिन ब्रदर हैं।

आपने पॉजिटिव और निगेटिव दोनों तरह के किरदार निभाए हैं। क्या निभाना में मजा आता है और क्या निभाने में मुश्किल होती है?

हर एक्टर की लाइफ में एक ऐसी फिल्म जरूर आती है, जो उसके लिए बहुत अहम बन जाती है। मेरे लिए वो फिल्म गुड़गांव थीं। मैंने उसमें एक हरियाणवी व्यक्ति का किरदार निभाया था। हालांकि मैं न्यू जर्सी से था, और ऐसे में इस तरह के किरदार में ढलना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। शुरुआत में लोगों को मेरी शक्ल देखकर ये भी लगा था कि मैं निगेटिव रोल कैसे निभा पाऊंगा। लेकिन शंकर रमन, जो फिल्म के डायरेक्टर थे, उन्होंने बखूबी ये कर दिखाया था। उसके बाद मुझे फ्लेश मिली। फ्लेश में मेरे काम की काफी तारीफ हुई थी। फिल्म में मैंने खूंखार ट्रांसजेंडर का रोल निभाया था।

आप विवेक ओबेरॉय के कजिन ब्रदर हैं, लेकिन आपने कभी इस बारे में बात नहीं की।

अगर मुझे विवेक भाई की तरफ से मदद मिलती, तो क्यों नहीं लेता। अगर वो मेरे साथ होते, तो उनका हाथ क्यों नहीं पकड़ता। ना उन्होंने कभी पूछा, ना मैंने कभी कहा। वो अपना काम करते रहे, और मैं अपना। हालांकि मैं सुरेश ताऊजी और विवेक भाई की बहुत इज्जत करता हूं। दोनों बहुत ही गजब के एक्टर्स हैं। लेकिन हां, मैंने कभी उनसे सपोर्ट नहीं लिया। सच कहूं तो हमारा ज्यादा मिलना-जुलना भी नहीं था। मैं उनको ब्लेम नहीं करूंगा।

ओटीटी के आने से क्या बदलाव आया

मेरे जैसे बहुत सारे लोगों को ओटीटी का फायदा मिला है। इससे ट्रांसपेरेंसी और मेरिट जरूर आ गई है। मुझे भी ओटीटी पर सराहना मिली, इसलिए फाइटर फिल्म में रोल मिला। पहले जान-पहचान की वजह से काम मिलता था, लेकिन अब ओटीटी पर आपका काम देखकर रोल मिल जाते हैं।

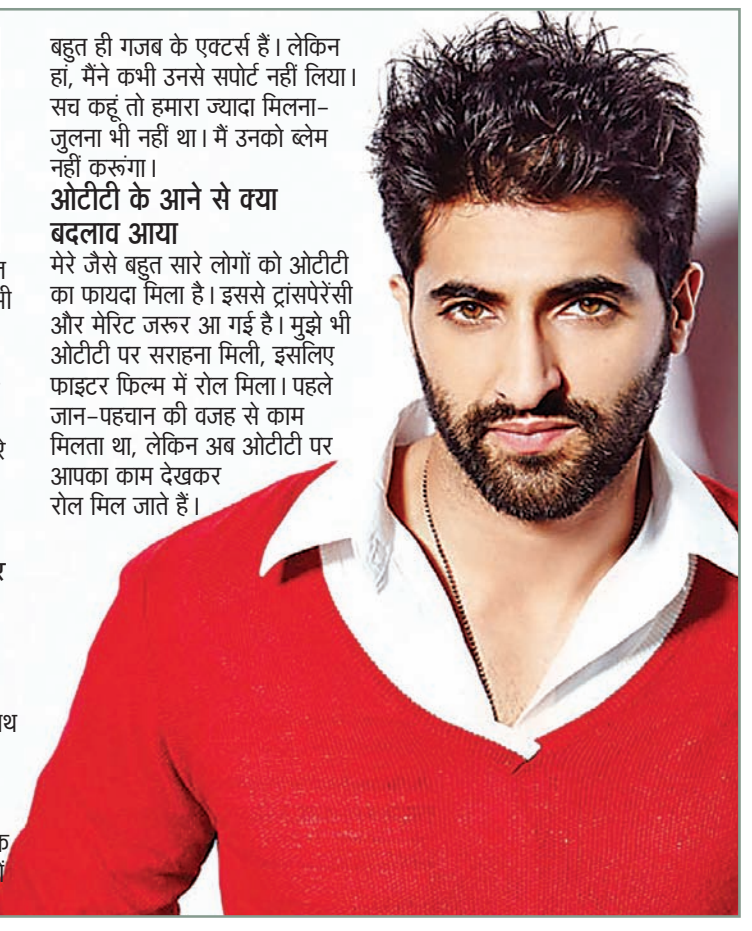

संक्षिप्त समाचार

फाइबरवेब इंडिया लिमिटेड ने 140 करोड़ के स्पनलेस प्रोजेक्ट का अनावरण किया

मुंबई, एजेंसी। फाइबरवेब (इंडिया) लिमिटेड, 100 प्रतिशत ईओयू और नॉन-वूवन फैब्रिक्स की निर्माता, ने वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही और 9 महीने के अनआडिटेड वित्तीय परिणामों के साथ अपने स्पनलेस प्रोजेक्ट विस्तार प्लान की घोषणा की है। प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए, फाइबरवेब (इंडिया) लिमिटेड के डायरेक्टर, श्री भावेश पी शेठ ने कहा, हमारे द्वारा भू-राजनीतिक परिस्थितियों का सामना करने के बावजूद हम हमारी वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही के परिणामों की घोषणा कर हर्षित है। विशेष रूप से यूरोप और यूएसए को जहाजों का आवागमन प्रभावित होने और उसके कारण भाड़ा दरों में अचानक वृद्धि होने से रेड सी क्षेत्र में शत्रुता के चलते व्यवधान आने से निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, फिर भी हमने लाभप्रदता बरकरार रखी। इस दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति के चलते हमारी टॉपलाइन प्रभावित हुई, इसके बावजूद हमारी शानदार ऑर्डर बुक पोजीशन बरकरार रही। हमारे वित्तीय प्रदर्शन के अतिरिक्त हम स्पनलेस प्रोजेक्ट (बायोडिग्रेडेबल) में हमारे नए विविधीकरण की घोषणा कर रोमांचित है, जो हमारी कंपनी के लिए ढेर सारे सुअवसरों का वादा करता है। विस्तार की अनुमानित लागत लगभग 140 करोड है। हम इस वित्त वर्ष की समाप्ति तक ऑर्डर को अंतिम रूप देने की उम्मीद करते हैं। योजना के अनुसार हर चीज के प्रगति करने पर आगामी वित्त वर्ष की समाप्ति से व्यापारिक उत्पादन शुरू होने की उम्मीद है। हम आगे आने वाले सुअवसरों के बारे में आशावादी बने हुए हैं और दृढ निश्चय और लगन के साथ हमारे उद्देश्यों को हासिल करने के प्रति प्रतिबद्ध है।

साथ ही वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही और 9 महीने का परिणाम पेश किया

नेटफ्लिक्स मनोरंजन का एक और धमाका लेकर आया

मुंबई, एजेंसी। नेटफ्लिक्स आपके लिये मनोरंजन का एक और धमाका लेकर आया है। नई सीरीज मामला लीगल है के साथ एक जबरदस्त कोर्टरूम कॉमेडी का आनंद उठाने के लिये तैयार हो जाईये। इसका प्रीमियर 1 मा को होने जा रहा है। यह हल्की-फुल्की सीरीज हास्य, दिलचस्प कहानी और कानूनी भाषा का मजेदार मिश्रण लेकर आयेगी, जो इसे निश्चित तौर पर एक देखने लायक सीरीज बनाती है। काल्पनिक पटपड़गंज जिला अदालत की पृष्ठभूमि पर आधारित यह सीरीज अपने अनूठे वकीलों के नजरिये से कानून की अजीबो-गरीब दुनिया को दिखाती है, जो बेतुके मामलों और विचित्र मुवक्किलों का प्रतिनिधित्व करते हैं। पोशम पा पिक्चर्स (जादूगर, काला पानी), द्वारा निर्मित इस सीरीज के लिये समीर सक्सेना शोरनर की भूमिका निभा रहे हैं। राहुल पांडे द्वारा निर्देशित इस सीरीज को सौरभ खन्ना और कुणाल अनेजा ने लिखा है। रवि किशन इस सीरीज में वीडी त्यागी के किरदार में नजर आयेंगे, जो पटपड़गंज बार एसोसिएशन का प्रेसिडेंट है। उसका सपना भारत का अटॉर्नी जनरल बनने का है। वीडी त्यागी और उसके वकीलों की टीम, जिसमें निधि विश्ट, नाईला ग्रेवाल, अंजुम बत्रा और विजय राजौरिया शामिल हैं, जुगाड़ की मदद से ''लीगल ईगल'' की एक नई परिभाषा गढ़ती है। इन अपारंपरिक किरदारों के जरिये, दर्शकों को इस कानूनी संस्था द्वारा लड़े जा रहे दिलचस्प मुकदमों की एक झलक मिलेगी, जोकि मामला लीगल है के असली सार को दर्शाता है।

1,799 में बुक कीजिए हवाई टिकट, एयर इंडिया समेत कई एयरलाइन ने पेश किया खास ऑफर

नई दिल्ली, एजेंसी। क्या आप गर्मियों की छुट्टियों में कहीं घूमने, किसी खास जगह पर जाने का प्लान बना रहे हैं ऐसे में आपको फ्लाइट की टिकट अभी बुक करानी चाहिए या और बेहतर डील की प्रतीक्षा करनी चाहिए। जानकारों का कहना है कि अभी एयरलाइंस कंपनियों की डील का फायदा उठाते हुए टिकट रिजर्वेशन करा लेने चाहिए, नहीं तो बाद में ज्यादा पैसे चुकाने पड़ सकते हैं। एयरलाइन के अधिकारियों का कहना है कि इस गर्मी में यात्रियों की तादाद ज्यादा होगी, लेकिन फ्लाइट की संख्या इस डिमांड के साथ तालमेल रखने में सक्षम नहीं हो सकती हैं। ऐसे में बाद में टिकट के लिए आपको ज्यादा खर्च करने पड़ सकते हैं।

हालांकि अधिकारियों का कहना है कि इस साल एयरलाइंस कंपनियां 150 से अधिक नए विमान जोड़ेंगी, जो पिछले साल से 34 प्रतिशत अधिक है। एयरबस और बोइंग ने देश से रेकॉर्ड संख्या में ऑर्डर पूरा करने के लिए

उत्पादन बढ़ाया है। लेकिन अधिकारियों का कहना है कि मुसाफिरों की संख्या के लिहाज से यह संख्या अभी भी पर्याप्त नहीं है। दूसरी तरफ तकनीकी समस्या और कमजोर फाइनैंशल कंडिशन के कारण उस वक्त लगभग 200 विमान खड़े रहेंगे। हालांकि कंपनी मौजूदा विमानों पर अपनी लीज का विस्तार करके और कम अवधि के लिए नए विमानों को पट्टे पर लेकर कैपिसिटी बढ़ा रही है।

क्या है ऑफर

एयर इंडिया ने हाल ही में इकॉनमी क्लास के कुछ घरेलू रूट के लिए 1,799 रुपये और विदेशी रूट के लिए 3,899 रुपये के किराये के साथ सेल शुरू की है। इंडिगो और विस्तारा सहित अन्य एयरलाइंस ने भी इसी तरह के ऑफर दिए हैं। एयरलाइंस के एक अधिकारी का कहना है एयरलाइंस भी पहले से टिकट बुकिंग करके निश्चिंत हो जाना चाहती है। इसलिए सेल्स के ऑफर पहले दिए जाते हैं।

डील का लाभ उठाएं

ऑनलाइन ट्रैवल पोर्टल क्लियरट्रिप के चीफ एग्जिक्यूटिव अय्यप्पन राजगोपाल का कहना है कि गर्मियों में यात्रा की योजना बना रहे हैं तो मार्च तक टिकट रिजर्वेशन करा लेने चाहिए, वरना ज्यादा पैसे देने के लिए तैयार रहना होगा। एविएशन कंसल्टेंसी फर्म ch-aviation का कहना है कि ग्राउंडेड एयरक्राफ्ट को सेवा में बहाल करने में समय लगेगा। ऐसे में जो लोग अपनी यात्रा की प्लानिंग कर रहे हैं, वे अभी भी अच्छे सौदे का लाभ उठा सकते हैं।

पूरा होने जा रहा है रतन टाटा का एक और सपना

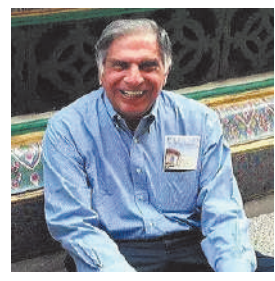

नई दिल्ली, एजेंसी। रतन टाटा का एक सपना जल्द ही पूरा होने वाला है। यह सपना है पशुओं के अस्पताल का। 86 साल की उम्र में रतन टाटा अपने लंबे समय से चले आ रहे पसंदीदा प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए तैयार हैं। लंबे समय से लटके पेट प्रोजेक्ट के रूप में मुंबई के लिए उनका पशु अस्पताल अब बनकर तैयार है। 2.2 एकड़ में फैला ये अस्पताल करीब 165 करोड़ रुपयों की लागत से तैयार हुआ है। यह हॉस्पिटल मार्च के पहले हफ्ते से काम करना शुरू कर देगा। इस अस्पताल में कुत्तों, बिल्लियों, खरगोशों और अन्य छोटे जानवरों के लिए 24×7 की सुविधा रहेगी। महालक्ष्मी में टाटा ट्रस्ट्स स्मॉल एनिमल हॉस्पिटल के उद्घाटन से पहले टीओआई के साथ एक इंटरव्यू में, रतन टाटा ने कहा, आज एक पालतू जानवर किसी के परिवार के सदस्य से अलग नहीं है। अपने पूरे जीवन में कई पालतू जानवरों के संरक्षक के रूप में, मैं इस अस्पताल की जरूरत को समझता हूं। उन्होंने कहा कि शहर में एक हाईटेक पशु स्वास्थ्य केंद्र होना चाहिए। इसे साकार होते देखकर मुझे खुशी हो रही है।

नहीं भूले ये घटना

रतन टाटा के मुताबिक, उन्हें अपने कुत्ते को ज्वाइंट रिप्लेसमेंट के लिए अमेरिका के मिनेसोटा यूनिवर्सिटी में ले जाने से पहले कई समस्याओं का सामना करना पड़ा था। इसे वह आज तक नहीं भूले हैं। उन्होंने बताया कि बहुत देर हो जाने की वजह से कुत्ते के ज्वाइंट को एक पार्टिकुलर पोजिशन में जमा दिया गया। इसके बाद उन्हें लगा कि मुंबई में भी एक ऐसा ही पशु अस्पताल होना चाहिए। साल 2012 में टाटा संस के चेयरमैन पद से हटने के बाद वह इसपर काम शुरू कर सके। अब 12 साल बाद रतन टाटा का यह सपना साकार होने जा रहा है। साल 2024 में विभिन्न बाधाओं के बावजूद रतन टाटा का सपना पूरा होने वाला है। यह पशु चिकित्सालय भारत के सबसे बड़े अस्पतालों में से एक होगा। इसका संचालन स्वयं टाटा की ओर से किया जाएगा।

इस वजह से हुई देरी

पहले राज्य सरकार के साथ भूमि सौदे के बाद साल 2017 में वी मुंबई के कलंबोली में इसे बनाने की योजना बनाई गई थी। लेकिन मुंबई में आने-जाने में लगने वाले समय को देखते हुए अस्ताल को एक सेंट्रल लोकेशन पर ले जाने का फैसला किया गया। उन्होंने बताया कि यह लोगों के लिए एक बड़ी समस्या हो सकती है खासतौर से उनके लिए जिन्हें इमरजेंसी सर्विस की जरूरत होती है। इसे देखते हुए सही जगह जमीन को ढूंढना और परमीशन लेने की वजह से इस प्रोजेक्ट में देरी हुई है।

कई अस्पतालों का किया निर्माण

ट्रस्ट की ओर से इससे पहले भारत का पहला कैंसर देखभाल अस्पताल टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, एनसीपीए, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस-बेंगलुरु का निर्माण किया है।

5 शेयरों के लौटे अच्छे दिन! 48 से 945 तक बढ़े भाव, पीएम मोदी के टिप्स का असर!

नईदिल्ली, एजेंसी। अगस्त 2023 में सदन में भाषण के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी ने निवेशकों को एक खास तरह की टिप्स दी थी। उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा था कि जिन सरकारी कंपनियों पर विपक्ष सवाल उठाए, उसपर दांव लगा देना चाहिए। वैसे तो पीएम मोदी ने मजाकिया लहजे में ये बात कही थी लेकिन इस भाषण के छह महीने के भीतर ज्यादातर सरकारी कंपनियों के शेयर ने चौंकाने वाला रिटर्न दिया है। इसमें भी एनबीसीसी लिमिटेड के अलावा इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन , हुडको, एसजेवीएन लिमिटेड और कोचिन शिपयार्ड प्रमुख हैं। आइए जानते हैं कि छह महीने की अवधि में इन टॉप 5 शेयरों ने कितना रिटर्न दिया है। हाउसिंग सेक्टर से जुड़ी इस कंपनी के शेयर ने निवेशकों को 250 फीसदी से ज्यादा का रिटर्न दिया है। बीते 5 फरवरी को शेयर की कीमत 176.50 रुपये तक गई थी, जो 52 वीक हाई भी है। दिलचस्प बात ये है कि पीएम मोदी के भाषण वाली तारीख 10 अगस्त 2023 को यह शेयर 48 रुपये के भाव पर ट्रेड कर रहा था।

पेटीएम मुद्दे से निपटने का काम रिजर्व बैंक का, कार्रवाई से जुड़ी चिंताओं पर सचिव बोले

नई दिल्ली, एजेंसी। पेटीएम प्रकरण से फिलहाल सरकार का कोई लेना-देना नहीं है। मुद्दे से निपटना भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) का काम है। केंद्रीय वित्तीय सेवा सचिव विवेक जोशी ने बुधवार को ये बातें कही। उन्होंने कहा कि पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड (पीपीबीएल) एक छोटी वित्तीय इकाई है और इसमें कोई प्रणालीगत स्थिरता संबंधी चिंता नहीं है।

गैर-अनुपालन पर चिंताओं के बीच देश के केंद्रीय बैंक आरबीआई ने पीपीबीएल के खिलाफ कई कदम उठाए हैं। उसे 29 फरवरी के बाद जमा, प्रीपेड उपकरणों और ई-वॉलेट से संबंधित कोई भी सेवा प्रदान करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। उसे नए ग्राहकों को जोड़ने से भी रोक दिया गया है। जोशी ने एक साक्षात्कार में कहा, ''यह नियामक की ओर से की गई कार्रवाई है। वे बैंकों को विनियमित करते हैं। जहां तक पेटीएम के खिलाफ कार्रवाई की बात है तो सरकार के पास अब तक करने के लिए कुछ नहीं है। हमारा मानना है कि आरबीआई ने उपभोक्ता और अर्थव्यवस्था के समग्र हित में कार्रवाई की होगी।'' पेटीएम के खिलाफ कार्रवाई की बात है तो सरकार के पास अब तक करने के लिए कुछ नहीं है। हमारा मानना है कि आरबीआई ने उपभोक्ता और अर्थव्यवस्था के समग्र हित में कार्रवाई की होगी।'' पेटीएम की पेमेंट एग्रीगेटर सहयोगी कंपनी में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के संबंध में उन्होंने कहा कि चीन से निवेश के लिए अनुमति मांगी गई है।

एनर्जी कंपनी को गुजरात सरकार से मिला 1100 करोड़ का बड़ा ऑर्डर

नईदिल्ली, एजेंसी। सोलर एनर्जी कंपनी एसजेवीएन लिमिटेड के शेयर आज गुरुवार को फोकस में हैं। कंपनी के शेयर आज 10 प्रतिशत तक चढ़ गए और इसका भाव 160.90 रुपये के इंट्रा डे हाई पर पहुंच गए। कंपनी के शेयरों में यह तेजी एक ऑर्डर के बाद आई है। दरअसल, एसजेवीएन लिमिटेड को गुजरात एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी से सोलर एनर्जी प्रोजेक्ट के लिए 1,100 करोड़ रुपये का ऑर्डर मिला है। एसजेवीएन को जीयूवीएनएल फेज में 200 मेगावाट सोलर एनर्जी प्रोजेक्ट के लिए गुजरात एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी से आशय पत्र मिला है। ग्राउंड-माउंटेड सोलर परियोजना को कंपनी की शाखा एसजेवीएन ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एसजीईएल) द्वारा ईपीसी कॉन्ट्रैक्ट के जरिए भारत में कहीं भी विकसित किया जाएगा। परियोजना बिजली खरीद समझौते की तारीख से 18 महीने में चालू हो जाएगी। जीयूवीएनएल और एसजीईएल के बीच 25 सालों के लिए पीपीए पर हस्ताक्षर किया जाएगा। इस परियोजना के चालू होने से 5,79,976 टन कार्बन उत्सर्जन में कमी आने की उम्मीद है और यह कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के सरकार के मिशन में योगदान देगा। तकनीकी दृष्टि से, स्टॉक का रिलेटिव स्ट्रेंथ इंडेक्स (आरएसआई) 78.3 पर है, जो यह दर्शाता है कि यह ओवरबॉट ज़ोन में कारोबार कर रहा है। एसजेवीएन के शेयर 5 दिन, 20 दिन, 50 दिन, 100 दिन और 200 दिन के मूविंग औसत से अधिक पर कारोबार कर रहे हैं।

2027 में क्रूड की मांग में वृद्धि का सबसे बड़ा केंद्र होगा भारत, स्वच्छ ऊर्जा से नहीं पड़ेगा फर्क

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत 2027 में वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की मांग में वृद्धि का सबसे बड़ा केंद्र बन जाएगा। चीन को पीछे छोड़कर भारत यह उपलब्धि हासिल करेगा। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) ने कहा, स्वच्छ ऊर्जा और विद्युतीकरण पर बड़े जोर के बावजूद दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था में परिवहन एवं उद्योग की खपत वृद्धि को गति देगी। हालांकि, भारत में तेल की मांग 2030 में भी चीन से पीछे रहेगी।

पेरिस की एजेंसी आईईए ने बुधवार को भारत ऊर्जा सप्ताह में जारी रिपोर्ट 2030 तक भारतीय तेल बाजार परिदृश्यमें कहा, भारत में तेल की मांग 2023 के 54.8 लाख बैरल प्रतिदिन (बीपीडी) से बढ़कर 2030 में 66.4 लाख बीपीडी पहुंच जाएगी। रिपोर्ट में आईईए के आंकड़े घरेलू और निर्यात के लिए कच्चे तेल को ईंधन में बदलने से संबंधित हैं। पेट्रोलियम मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, घरेलू खपत करीब 50 लाख बीपीडी है। आईईए के निदेशक (ऊर्जा बाजार एवं सुरक्षा) किसुके सदामोरी ने कहा, भारत करीब 12 लाख बीपीडी की वृद्धि दर्ज करने की राह पर है। 2030 तक इसके 66 लाख बीपीडी के स्तर तक पहुंचने का अनुमान है।

ऊर्जा बदलाव पर भरोसेमंद रूपरेखा के पक्ष में भारत

भारत ने बुधवार को व्यवस्थित तरीके से हरित ऊर्जा की ओर बदलाव के लिए एक भरोसेमंद वृद्धि रूपरेखा बनाने की वकालत की। पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने भारत ऊर्जा सप्ताह में कहा, भारत अपनी तेल खरीद में विविधता लाने के विकल्प तलाश रहा है। इसमें रूस और वेनेजुएला में उपलब्ध अवसर का उपयोग भी शामिल है। मंत्री ने 'वीयूसीए दुनिया में देशों और उद्योग के लिए ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना' विषय पर आयोजित मंत्रिस्तरीय पैनल में कहा, कोयला और पेट्रोल जैसे जीवाश्म ईंधन की आलोचना करने की जगह एक संतुलित एवं सार्थक बातचीत की जरूरत है। आईईए में तेल उद्योग एवं बाजार प्रभाग की प्रमुख टोरिल बोसोनी ने कहा, विकसित देशों और चीन में कच्चे तेल की मांग धीमी हो गई है। इसके उलट, भारत वृद्धि का सबसे बड़ा स्रोत बन गया है। भारत वर्तमान में अमेरिका और चीन के बाद तीसरा बड़ा क्रूड उपभोक्ता है। वह 85 फीसदी तेल आयात करता है। ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति के बीच हरित हाइड्रोजन को लेकर भारत में बड़ी उम्मीद जगी है। भारत पेट्रोलियम ने भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र संग मिलकर स्वदेशी इलेक्ट्रोलाइजर का निर्माण किया है। भारत पेट्रोलियम के महाप्रबंधक सौरभ जैन ने कहा, बीना रिफाइनरी में हाइड्रोजन से ऊर्जा का उत्पादन शुरू हो गया है। कोचीन रिफाइनरी में 500 किलोवॉट क्षमता का हरित हाइड्रोजन रिफिलिंग प्लांट लगाया जा रहा है। पीएम मोदी ने हरित हाइड्रोजन पर समीक्षा की है। इलेक्ट्रोलाइजर की मदद से भारत हरित हाइड्रोजन में भी आत्मनिर्भर बनेगा।

कम हो सकती हैं आपकी बीमा प्रीमियम की दरें, जीएसटी घटाने की संसदीय समिति ने की सिफारिश

नईदिल्ली, एजेंसी। आपके बीमा ीमियम की देय राशि में थोड़ी कटौती होने ी उम्मीद जगी है। केंद्र सरकार की एक ंसदीय स्थाई समिति ने बीमा प्रीमियम पर सूली जा रही जीएसटी की ऊंची दर को म करने की सिफारिश की है। वर्तमान में ह दर 18 फीसदी है। संसदीय समिति ने फारिश की है कि बीमा उत्पादों पर वसूली ाने वाली जीएसटी को तर्कसंगत बनाया ाए। इनमें विशेष रूप से स्वास्थ्य और टर्म ्योरेंस पर इर को कम किए जाने की बहुत रूरत है। कमेटी ने कहा कि ऊंची ोएसटी दर के कारण बीमा प्रीमियम ज्यादा जाता है।

बीमा को और अधिक किफायती बनाने लिए समिति ने कहा है कि स्वास्थ्य ोमा उत्पादों, विशेष रूप से वरिष्ठ गरिकों के लिए खुदरा बीमा और माइक्रो ोमा पॉलिसियों (जैसे पीएमजेएवाई के हत निर्धारित सीमा तक, वर्तमान में 5 लाख रुपये) और टर्म पॉलिसियों पर लागू जीएसटी दरों को कम किया जा सकता है। समिति के अनुसार भारत में बीमा उद्योग ने हाल के वर्षों में गतिशील वृद्धि दिखाई है, वर्तमान सरकार की ओर से किए गए सुधारों के बाद कुल बीमा प्रीमियम में वृद्धि हुई पर भारतीय बीमा उत्पादों की पैठ अभी भी कम है।

अभी तय करना है लंबा रास्ता

2020 में वैश्विक बीमा बाजार में भारत का हिस्सा लगभग दो प्रतिशत था, ऐसे में भारतीय बीमा क्षेत्र को उन्नत देशों की अर्थव्यवस्थाओं के बीमा क्षेत्रों के समकक्ष आने के लिए अभी एक लंबा रास्ता तय करना है। 2021 में भारत में कुल बीमा प्रीमियम में 13.46 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि वैश्विक कुल बीमा प्रीमियम में वर्ष के दौरान 9.04 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जीवन बीमा व्यवसाय में, भारत 2021 में दुनिया में नौवें स्थान पर रहा। गैर-जीवन बीमा व्यवसाय में, भारत दुनिया में चौदहवें स्थान पर है। समिति के अनुसार, विभिन्न बीमा उत्पादों को लोगों के लिए लाभकारी बनाने की आवश्यकता है, न कि केवल जीवन बीमा को।

पेटीएम मनी के केवाईसी प्रक्रिया को रिव्यू कर रहा सीडीएसएल

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत की सबसे बड़ी सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी पेटीएम मनी की कस्टमर वेरिफिकेशन प्रॉसेस को रिव्यू कर रही है। भारतीय रिजर्व बैंक के 31 जनवरी के निर्देश के बाद सेंट्रल डिपॉजिटरी सर्विसेज इंडिया पेटीएम की मूल कंपनी वन 97 की संस्थाओं द्वारा अपनाई जाने वाली नो-योर-कस्टमर प्रक्रिया पर निगरानी बढ़ाने वाली लेटेस्ट संस्था है। आरबीआई ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक को इस महीने के अंत से बैंकिंग सेवाएं बंद करने को कहा है। हालांकि, इस आदेश का पेटीएम मनी पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह स्वतंत्र रूप से संचालित होता है।

ईटी की खबर के मुताबिक उद्योग के अंदरूनी सूत्रों ने कहा कि सीडीएसएल और अन्य सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी, नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी अपनी

एजेंसियों के माध्यम से इन प्लेटफार्मों का नियमित ऑडिट करते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग और केवाईसी के आसपास सभी प्रणालियां लागू हैं। एक ब्रोकिंग स्टार्टअप के संस्थापक ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, इस क्षेत्र में उनके केवाईसी पैरामीटर्स बैंकिंग की तुलना में अधिक कठोर हैं। यहां ग्राहक के केवाईसी का ऑडिट किसी थर्ड पार्टी द्वारा किया जाता है और उल्लंघनों पर दंड लगाया जाता है। ईटी के सवालों का जवाब देते हुए वन97 के एक प्रवक्ता ने कहा कि पेटीएम मनी यूजर्स को एक सीडीएसएल डीमैट खाता उपलब्ध करता है। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड के नियमों के तहत, सीडीएसएल नियमित रूप से कई ऑडिट और समीक्षा करता है, जो एक सामान्य प्रक्रिया है। प्रवक्ता ने कहा, हमने सेबी के नियमों और दिशानिर्देशों के हाइएस्ट कंप्लाएंस स्टैंडर्ड को बनाए रखा है और ऐसा करना जारी रखेंगे। सीडीएसएल ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की है। स्टार्टअप संस्थापकों में से एक ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, ज्यादातर नए डीमैट खातों का ऑडिट किसी थर्ड पार्टी द्वारा किया जाता है और डिपॉजिटरी हर खाते पर नजर रखते हैं। उन्होंने कहा कि ब्रोकर द्वारा शुरुआती जांच करने के बाद एक्सचेंज ग्राहक द्वारा जमा किए गए डॉक्यूमेंट्स की भी जांच करते हैं। तभी कोई ट्रेडिंग शुरू कर सकता है। मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम और सेबी के केवाईसी रजिस्ट्रेशन एजेंसी नियमों के अनुसार, डिपॉजिटरी प्रत्येक ग्राहक के केवाईसी को अनिवार्य करती है।

आरोन फिंच ने टी20 विश्व कप 2024 के लिए प्लेइंग 11 चुनी, स्टार बल्लेबाज को किया बाहर

नई दिल्ली। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान आरोन फिंच ने इस साल वेस्टइंडीज और यूएसए में एक जून से होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप के लिए ऑस्ट्रेलिया के लिए अपनी प्लेइंग इलेवन चुनी है। फिंच ने स्टार ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज स्टीव स्मिथ को अपनी प्लेइंग इलेवन से बाहर कर दिया और कहा कि बैटिंग लाइन-अप में पर्याप्त मारक क्षमता है। उन्होंने यह भी कहा कि विकेटकीपर-बल्लेबाज जोश इंगलिस स्मिथ की भूमिका निभाने के साथ-साथ निचले क्रम में फिनिशर की भूमिका निभाने के लिए काफी बहुमुखी हैं।

फिंच ने कहा, %संभवत-इस समय मेरी 11 में वह (स्मिथ) नहीं है और इसका कारण यह है कि मुझे लगता है कि सूची में पर्याप्त बल्लेबाजी क्षमता है... जोश इंग्लिस, वह इतना बहुमुखी है कि वह लगभग भूमिका निभा सकता है। स्टीव स्मिथ खेलते हैं और फिनिशर भी हैं।%

इस युग के सबसे बेहतरीन बल्लेबाजों में से एक होने के बावजूद स्मिथ के पास सर्वश्रेष्ठ टी20आई आंकड़े नहीं हैं। उन्होंने 25.69 की औसत और 125 से अधिक की स्ट्राइक रेट से पांच अर्धशतकों के साथ 1,079 रन बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 90 है। 15 टी20आई में इंग्लिस ने 158 से ज्यादा के स्ट्राइक रेट और एक शतक के साथ 29.76 की औसत से 387 रन बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 110 है।

फिंच ने मध्यम गति के हरफनमौला मार्कस स्टोइनिस और स्पिन गेंदबाजी बल्लेबाजी हरफनमौला मैथ्यू शॉर्ट को भी शामिल किया। उन्होंने कहा, %मेरे पास मार्कस स्टोइनिस और मैट शॉर्ट हैं। कैरेबियन में विकेट बहुत अधिक स्पिन कर सकते हैं। अगर आपको लगता है कि आपको गेंद के साथ अतिरिक्त कवर की जरूरत है तो मैं वहां मैट शॉर्ट या मार्कस स्टोइनिस का विकल्प रखना चाहूंगा।%

शॉर्ट ने सात टी20 मैच खेले हैं जिसमें उन्होंने 22.28 की औसत से 156 रन बनाए हैं और एक अर्धशतक के साथ 167 से अधिक की स्ट्राइक रेट से रन बनाए हैं। उन्होंने इस फॉर्मेट में एक विकेट भी लिया है। दूसरी और 57 टी20आई में स्टोइनिस ने 30.50 की औसत और 145 से अधिक की स्ट्राइक रेट के साथ 915 रन बनाए हैं। उनके नाम दो अर्धशतक और 24 विकेट भी हैं।

नेट्स में प्रैक्टिस करने उतरे धोनी, दोस्त की स्पोर्ट्स शॉप को किया प्रोमोट

महेंद्र सिंह धोनी की बैट के साथ ट्रेनिंग की तस्वीरें और वीडियो वायरल हो रहे हैं जिस पर उनके बचपन के दोस्त की स्पोर्ट्स शॉप के नाम का स्टिकर लगा हुआ है। धोनी ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 के लिए अपनी तैयारी तेज करते हुए नेट्स दिखाई दिए।

धोनी को नेट्स में एक बल्ले के साथ ट्रेनिंग करते देखा गया जिस पर %प्राइम स्पोर्ट्स% का स्टिकर लगा हुआ था। सोशल मीडिया पर प्रशंसकों ने तुरंत यह समझ लिया कि यह स्टिकर धोनी का अपने बचपन के दोस्त की खेल के सामान की दुकान को प्रोमोट करने का तरीका था। धोनी ने अकसर अपने क्रिकेट करियर के शुरुआती दौर में अपने बचपन के दोस्तों से मिले समर्थन के बारे में बात की है। उनके एक दोस्त ने उन्हें उनके करियर में पहली बार बैट प्रायोजक दिलाने में मदद की। 2016 की बायोपिक %एमएस धोनी- द अनटोल्ड स्टोरी% में क्रिकेटर के अपने दोस्तों के साथ समीकरण को बड़े पर्दे पर लाया।

धोनी के नेट्स में उतरने के बाद ऐसा लगता है कि वह पिछले साल सर्जरी के बाद घुटने की चोट की समस्या से पूरी तरह उबर चुके हैं और आईपीएल 2024 में चेन्नई सुपर किंग्स का नेतृत्व करेंगे। पिछले साल सीएसके को जीत दिलाने के बाद धोनी ने पुष्टि की कि वह कम से कम एक और साल खेलने के लिए लौटेंगे।

यह पहली बार नहीं है कि एमएस धोनी ने अपने बल्ले पर जगह का इस्तेमाल उन लोगों के लिए किया है जिन्होंने वर्षों से उनकी मदद की है। 2019 विश्व कप के दौरान पूर्व विकेटकीपर ने कई बल्लों के साथ खेला, प्रत्येक पर अलग-अलग ब्रांड का लोगो था। अगस्त 2020 में एमएस धोनी द्वारा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा के बाद ही प्रशंसकों को एहसास हुआ कि धोनी अपने अंतिम टूर्नामेंट में अपने बल्ले के प्रायोजकों को उच्चतम स्तर पर श्रद्धांजलि दे रहे थे। जुलाई 2019 में भारत की विश्व कप 2019 के सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड से हार के बाद धोनी ने कोई अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं खेला, लेकिन उन्होंने 15 अगस्त को ही संन्यास की घोषणा कर दी।

इंग्लैंड के स्पिनरों की सफलता पर बोले रेहान

स्टोक्स के नेतृत्व को दिया सफलता का श्रेय

नई दिल्ली। भारत के दौरे पर इंग्लैंड के स्पिनरों ने शुरुआती दो टेस्ट मैचों में उम्मीदों से कही बेहतर प्रदर्शन किया है और युवा गेंदबाज रेहान अहमद ने इस सफलता का श्रेय टीम के माहौल और बेन स्टोक्स के नेतृत्व को दिया है। पांच मैचों की श्रृंखला इस समय 1-1 से बराबर है, लेकिन इसका आश्चर्यचकित करने वाला पहलू यह है कि इंग्लैंड के अनुभवहीन स्पिनरों ने भारतीय स्पिनरों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है।

रेहान, टॉम हार्टले और शोएब बशीर की स्पिन गेंदबाजों की तिकड़ी दो मैचों में 33 विकेट चटकाये है तो वही बेहद रविचंद्रन अश्विन, रविंद्र जडेजा, अक्षर पटेल और कुलदीप यादव जैसे अनुभवी स्पिनरों ने आपस में 23 विकेट साझा किये है। 19 साल के अहमद ने कहा, 'इससे पता चलता है कि टीम का माहौल कितना बढ़िया है।% उन्होंने कहा, 'अपने देखा होगा कि हार्टले और बशीर यहां आने के बाद दबाव में नहीं दिखे और

इसका श्रेय टीम को जाता है।% रेहान ने कहा, 'हमारी टीम में माहौल और नेतृत्व ऐसा है कि आप यह भूल जाते है कि आप किसके खिलाफ खेल रहे है। आपका ध्यान सिर्फ इस बात पर होता है कि आपको क्या करने की जरूरत है।%

टीम की नेतृत्व इकाई में स्टोक्स और मैकुलम जैसे दिग्गजों की मौजूदगी में रेहान ज्यादा दबाव लेने से बचना चाहते है। उन्होंने कहा, 'उन्हें (स्टोक्स और मुख्य कोच ब्रेंडन मैकुलम) इसकी परवाह नहीं है कि चीजें कितनी बुरी हो सकती हैं। यह हमेशा इस बारे में होता है कि आप इससे क्या हासिल कर सकते है। अगर मैं चार खराब गेंद फेंकने के बाद विकेट चटकाने में सफल रहता हूं तो यह लगातार 16 अच्छी गेंदें फेंकने से बेहतर है।% रेहान ने दिसंबर 2022 में पाकिस्तान के खिलाफ पदार्पण किया था। वह इंग्लैंड के लिए सबसे कम उम्र (तब 18 साल 126 दिन) टेस्ट पदार्पण करने वाले खिलाड़ी है।

टी20 विश्व कप में सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज होंगे बुमराह, दक्षिण अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज का बयान

जोहानिसबर्ग। सभी प्रारूपों में जसप्रीत बुमराह के हालिया प्रदर्शन से प्रभावित दक्षिण अफ्रीका के पूर्व मध्यम तेज गेंदबाज वेर्नोन फिलैंडर ने कहा है कि वह इस साल होने वाले टी विश्व कप में भारत की सफलता की कुंजी रहने के साथ सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज भी साबित होंगे।

इंग्लैंड के खिलाफ विशाखापत्तनम में दूसरे टेस्ट में नौ विकेट लेकर भारत को 91 रन से जीत दिलाकर श्रृंखला में 1.1 से वापसी कराने वाले बुमराह आईसीसी टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने वाले पहले भारतीय तेज गेंदबाज बन गए हैं। इससे पहले कपिल देव दिसंबर 1979 से फरवरी 1980 के बीच दूसरे नंबर पर पहुंचे थे।

फिलैंडर ने विशेष इंटरव्यू में कहा, 'बुमराह इस समय मुकम्मिल गेंदबाज है। उनके पास जबर्दस्त कौशल है और उन्होंने सटीक गेंदबाजी का हुनर सीख लिया है जिससे टेस्ट क्रिकेट में इतनी सफलता मिल रही है। पहले वह हर समय विकेट लेने वाली गेंद फेंकना चाहते थे जिससे महंगे साबित होते थे लेकिन अब उनके प्रदर्शन में निरंतरता है।%

उन्होंने कहा, 'वह ऐसे गेंदबाज हैं जिन्हें टी20 क्रिकेट में भी कभी कमतर नहीं आंका जा सकता। वह नयी गेंद से स्विंग कराते हैं और बल्लेबाज को आगे बढ़कर खेलने के लिये मजबूर करते हैं। उनके यॉर्कर काफी धारदार होते हैं और टी20 क्रिकेट में यही तो चाहिए। मुझे लगता है कि वह टी20 विश्व कप में सबसे कामयाब तेज गेंदबाज होंगे।%

टी20 विश्व कप जून में वेस्टइंडीज और अमेरिका में खेला जाएगा।उन्होंने मोहम्मद शमी की भी तारीफ करते हुए कहा कि वह गेंद को बखूबी स्विंग कराते हैं। दक्षिण अफ्रीका के लिये 64 टेस्ट में 224 विकेट लेने वाले इस गेंदबाज ने कहा, 'भारत के मौजूदा तेज गेंदबाजों से मैं काफी प्रभावित हूं।

बुमराह के अलावा मोहम्मद शमी भी हैं जो सीम का बखूबी इस्तेमाल करते हैं। दक्षिण अफ्रीका में गेंदबाजी करना आसान नहीं होता लेकिन भारत की सपाट पिचों पर गेंदबाजी करने के बाद उन्होंने जिस तरह यहां गेंदबाजी की, वह काबिले तारीफ है।%

फिलैंडर ने कहा कि विदेशी सरजमीं पर उम्दा प्रदर्शन करने वाले तेज गेंदबाजों का टीम में होना भारतीय क्रिकेट के लिए अच्छा संकेत है। उन्होंने कहा, 'जब भी भारतीय टीम यहां आती है तो पिछली बार से बेहतर प्रदर्शन करती है। उपमहाद्वीप में स्पिनरों ने भारत को मैच जिताए हैं लेकिन अब उसके पास मैच जिताने वाले तेज गेंदबाज भी हैं। भारत को आस्ट्रेलिया में जीतते देखकर अच्छा लगा जिसका श्रेय विराट कोहली को भी जाता है जब उनकी कप्तानी में गेंदबाजों के प्रदर्शन में निखार देखने को मिला था।%

वह 2019 में ऑस्ट्रेलिया में खेली गई श्रृंखला का जिक्र कर रहे थे जब विराट कोहली की कप्तानी में पहली बार भारत ने आस्ट्रेलिया को उसकी सरजमीं पर टेस्ट श्रृंखला में हराया था। भारत के खिलाफ पांच घरेलू टेस्ट (2013 और 2018) में 25 विकेट लेने वाले फिलैंडर ने कहा कि कोहली उनके लिए सबसे कठिन बल्लेबाज साबित हुए हैं। उन्होंने कहा, 'भारत जैसे मजबूत बल्लेबाजी क्रम का सामना करना अच्छा लगता रहा है। मानसिक मजबूती के पैमाने पर देखा जाए तो कोहली काफी खतरनाक है और गेंदबाजों के लिये कड़ी चुनौती पेश करते हैं।%

टी20 विश्व कप से ठीक पहले आईपीएल होने से खिलाड़ियों के चोटिल होने या थकान के मसले पर उन्होंने कहा कि गेंदबाजों का सही प्रबंधन करना जरूरी है। उन्होंने कहा, 'आईपीएल टी20 विश्व कप की तैयारी के लिये बेहतरीन प्लेटफॉर्म है लेकिन इसमें काफी मैच खेलने होंगे। यह सुनिश्चित करना होगा कि तेज गेंदबाजों का प्रबंधन बखूबी हो।%

अपने करियर में आईपीएल नहीं खेल सके फिलैंडर अब कोच या सलाहकार के रूप में इस लीग से जुड़ना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 'आईपीएल ऐसा टूर्नामेंट है जिससे आप कभी ना कभी जुड़ना जरूर चाहेंगे। शायद कोच और सलाहकार के तौर पर मेरे लिए दरवाजे खुलेंगे ताकि मैं युवा खिलाड़ियों के साथ अनुभव साझा कर सकूं। बेतवे दक्षिण अफ्रीका 20 की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा, 'मैदान में इतनी भीड़ पहली बार देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट को मजबूत करने के लिए इस तरह की पहल की जरूरत थी।%

एमबापे ने दागा गोल, ब्रेस्ट को हराकर PSG फ्रेंच कप के क्वार्टर फाइनल में पहुंचा

पेरिस। किलियान एमबापे ने मौजूदा सत्र का अपना 30वां गोल दागा जिससे पेरिस सेंट-जर्मेन (पीएसजी) ने ब्रेस्ट पर 3-1 से जीत के साथ फ्रेंच कप फुटबॉल के क्वार्टर फाइनल अपनी जगह पक्की की। इस जीत के साथ ही टीम का अजेय क्रम 15 मैचों तक पहुंच गया। पीएसजी के साथ जून में मौजूदा अनुबंध के खत्म होने के बाद रीयल मैड्रिड जाने की अटकलों के बीच एमबापे इस सत्र में शानदार लय में है।

'ओप्टा% के आंकड़ों के मुताबिक फेंच कप के 28 मैचों में उन्होंने 35 गोल किए हैं और 15 गोल में दूसरे खिलाड़ियों की मदद की है। पिछले चार मैचों में उन्होंने 11 गोल दागे हैं। उन्होंने मैच के 34वें मिनट में टीम का खाता खोला जिसके तीन मिनट के बाद डानिलो पेरेरा ने टीम की बढ़त को दोगुना कर दिया। मध्यांतर के बाद एमबापे टीम को 3-0 से आगे करने से चूक गये जब उनका प्रयास क्रॉसबार से टकराकर विफल हो गया।

स्टीव मौनी ने 65वें मिनट में गोल कर ब्रेस्ट की वापसी कराई लेकिन कोनकालोस रामोस ने आखिरी क्षणों (90+ दो मिनट) में पीएसजी को 3-1 से आगे कर दिया। अन्य मुकाबलों में सात बार के फ्रांस के चैंपियन लियोन ने लिली के खिलाफ 2-1 से जीत के साथ क्वार्टर फाइनल में जगह पक्की की। नीस ने मोंटपेलियर को 4-1 से शिकस्त देकर अंतिम आठ में जगह बनाई।

यह भारत के लिए एक झटका है, कोहली के अगले दो टेस्ट न खेलने की खबरों पर बोले नासिर हुसैन

नई दिल्ली। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन ने अपने निजी जीवन को प्राथमिकता देने के विराट कोहली के फैसले का समर्थन किया, लेकिन उनका मानना है कि उनकी अनुपस्थिति भारत के लिए एक बड़ा %झटका% होगी। रिपोर्ट के मुताबिक इंग्लैंड के खिलाफ पहले दो टेस्ट मैचों से अनुपस्थित रहने वाले विराट इंग्लैंड के खिलाफ राजकोट और रांची में होने वाले तीसरे और चौथे टेस्ट मैच में नहीं खेलेंगे।

हुसैन ने कहा, %विराट कोहली खेल के अब तक के सबसे महान बल्लेबाजों में से एक हैं और किसी भी सीरीज और किसी भी टीम को कोहली जैसे कद वाले खिलाड़ी की कमी खलेगी। खेल को कोहली जैसे खिलाड़ियों का भी ख्याल रखने की जरूरत है। वह और अधिक के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेल रहे हैं। अब 15 साल से अधिक हो गए हैं और अगर उन्हें खेल से कुछ समय के लिए परिवार के साथ रहने के लिए छुट्टी की जरूरत है तो हम विराट कोहली को शुभकामनाएं देते हैं। इसका मतलब है कि हमारे पास एंडरसन-कोहली मुकाबले की वैसी रोमांचक संभावना नहीं है जैसी हमने देखी है। पिछले कुछ वर्षों में ऐसा ही होगा।%

अगर कोहली तीसरे और चौथे टेस्ट में चूकते हैं तो भारत को निश्चित रूप से बल्लेबाजी विभाग में एक बड़ी कमी को पूरा करना होगा। रजत पाटीदार को कोहली के प्रतिस्थापन के रूप में नामित किया गया था लेकिन वह मौके का फायदा उठाने में असफल रहे। केएल राहुल और रवींद्र जड़ेजा भी चोट के कारण दूसरे टेस्ट में नहीं खेल पाए। नासिर के लिए अगर राहुल तीसरे टेस्ट के लिए फिटनेस हासिल करने में सक्षम हैं, तो वह एक ऐसे खिलाड़ी होंगे जो भारत की बल्लेबाजी में गहराई जोड़ सकते हैं।

डेरिल मिचेल एसए के खिलाफ दूसरे टेस्ट से हुए बाहर

केन विलियमनस को मिल सकता है ब्रेक

वैलिंग्टन, एजेंसी। न्यूजीलैंड के हरफनमौला डेरिल मिचेल पैर की चोट के कारण साउथ अफ्रीका के खिलाफ आगामी दूसरे टेस्ट से बाहर हो गए हैं। इसके अलावा, वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू टी20 सीरीज के लिए भी उपलब्ध नहीं होंगे। टीम मैनेजमेंट चाहता है कि मिशेल कंगारुओं के खिलाफ टेस्ट सीरीज से पहले पूरी तरह से फिट हो जाएं। इस वजह से उन्हें इतना लंबा ब्रेक दिया गया है।

मिचेल सभी फॉर्मेट में कीवी टीम के एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी हैं और वे उम्मीद कर रहे होंगे कि उसके पैर की चोट गंभीर न हो। वह पिछले छह-सात महीनों से अपनी चोट को मैनेज कर रहे हैं, लेकिन मुख्य कोच गैरी स्टीड का कहना है कि यह मिशेल के लिए चोट से पूरी तरह से उबरने का सबसे अच्छा मौका है। कोच ने कहा कि हमने पहले भी उन्हें आराम दिया, मगर मेडिकल एड्वाज लेने के बाद पता चला कि उन्हें लंबे ब्रेक की जरूरत है। यह वास्तव में कठिन है, क्योंकि अगले कुछ समय में ब्रेक लेने के लिए उन्हें ज्यादा मौके नहीं मिलेंगे, इस वजह से हमने उन्हें तीन हफ्ते का आराम लेने के लिए कहा है। उम्मीद है कि वह पूरी रिकवरी के साथ वापसी करेंगे।

मिशेल लगभग छह या सात महीने से इस चोट से जूझ रहे हैं और उन्हें जनवरी में पाकिस्तान के खिलाफ अंतिम टी20 मैच से आराम दिया गया था, लेकिन अब यह निर्णय लिया गया है कि खुद को सर्वश्रेष्ठ मौका देने के लिए उन्हें लंबे समय तक बाहर रहने की जरूरत है। उम्मीद है कि वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आगामी दो टेस्ट मैचों की सीरीज में वापसी करेंगे। इसके अलावा केन विलियमसन के ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए उपलब्ध होने की संभावना नहीं है, क्योंकि उनकी पत्नी तीसरे बच्चे को जन्म देने वाली है।

न्यूजीलैंड को लगा झटका, डेरिल मिशेल दूसरे टेस्ट और टी20 श्रृंखला से बाहर

सिडनी। न्यूजीलैंड के बल्लेबाज डेरिल मिशेल को पैर की चोट के कारण दक्षिण अफ्रीका के साथ होने वाले दूसरे टेस्ट और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 श्रृंखला से बाहर कर दिया गया है। मिशेल पिछले छह सात महीने से चोट की चोट की समस्या से जूझ रहे है। उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 53.46 की औसत से रन बनाए है।

चोट के कारण उन्हें जनवरी में पाकिस्तान के खिलाफ अंतिम टी-20 मैच से आराम दिया गया था। लेकिन अब टीम के चयनकर्ताओं ने मिशेल को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए सर्वश्रेष्ठ देने और पूरी तरह फीट होने के लिए लंबे समय तक टीम से बाहर रखने का फैसला किया है।

न्यूजीलैंड के कोच गैरी स्टीड ने कहा, 'हमने पहले उन्हें थोड़ा आराम देने का फैसला लिया, लेकिन इस पर चिकित्सकीय सलाह लेने के बाद यह संभावना है कि उन्हें लंबे समय तक आराम की जरूरत है।% उन्होंने कहा, 'यह वास्तव में कठिन है, क्योंकि अगले सप्ताह में बहुत अधिक ब्रेक नहीं आने वाले हैं, जबकि ऐसा सोचा गया था कि इससे हमें प्रयास करने और उसे फिर से सर्वोत्तम का मौका देने के लिए करीब तीन सप्ताह का समय मिलता है।%

उन्होंने कहा, 'इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि यह उस अवधि में भी प्रयाप्त होगी, लेकिन हमें पूरी उम्मीद है कि इससे उनके हमारे साथ लंबे समय तक रहने की संभावना में सुधार होगा।% ऐसा माना जा रहा है कि मिशेल के स्थान पर विल यंग को टीम में अतिरिक्त बल्लेबाज के रूप में शामिल किया जा सकता हैं। हालांकि, इस बात की संभावना बनी हुई है कि ग्लेन फिलिप्स और मिशेल सैंटनर के क्रम में आगे बढ़ने से टीम को फिर से संतुलित किया जा सकता है।

स्टीड ने कहा, '(विल यंग) निश्चित रूप से विकल्पों में से एक है।% उन्होंने कहा, 'विल बैक अप के रूप में है और ग्लेन फिलिप्स ने दिखाया है कि वह उपयोगी से अधिक है और इसे अलग तरीके से आकार दिया जा सकता है। हमारे पास जो टीम है उससे हम बहुत खुश हैं। डेरिल की स्पष्ट रूप से एक बड़ी क्षति है, हालांकि, उन्होंने कई उत्कृष्ट प्रदर्शनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है बल्लेबाजी प्रदर्शन लेकिन यह उनके और हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम इसे लंबे समय तक सही रखें।%

उन्होंने कहा, 'अगर हम उसे चुनना चाहते हैं तो ट्रेंट उपलब्ध है।% उन्होंने कहा, 'वह और मैं अभी भी बातचीत कर रहे हैं...उम्मीद है कि अगले कुछ दिनों में यह पता चल जाएगा कि यह कैसा दिखता है।%

संक्षिप्त समाचार

सर्विकल कैंसर टीकाकरण से जुड़ी घोषणा के लिए भारत की सराहना की

वाशिंगटन , एजेंसी। एक प्रतिष्ठित भारतीय-अमेरिकी कैंसर विशेषज्ञ (रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट) ने भारतीय बजट में सर्विकल कैंसर से बचाव के लिए नौ से 14 वर्ष की लड़कियों के टीकाकरण को लेकर की गई घोषणा की बुधवार को सराहना की। डॉ. दत्तात्रेयुडु नोरी ने पीटीआई से कहा, ''बजट में सर्विकल कैंसर के लिए निवारक कार्यक्रमों पर जोर भारत में एक महत्वपूर्ण जन स्वास्थ्य समस्या को हल करने की दिशा में एक सराहनीय कदम है। सर्विकल कैंसर से बचाव के लिए 9-14 वर्ष की लड़कियों को टीका लगाने की पहल विशेष रूप से सराहनीय है, क्योंकि यह बीमारी देश में प्रतिदिन 150 से अधिक महिलाओं की जान ले लेती है चिकित्सा के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए वर्ष 2015 में पद्मश्री से सम्मानित डॉ. नोरी ने कहा कि सर्विकल कैंसर भारत में महिलाओं में पाया जाना वाला दूसरा सबसे आम कैंसर है जिसके हर साल 85,000 से अधिक नए मामले सामने आते हैं और हर साल इससे लगभग 50,000 मौतें होती हैं। वर्ष 2022 में 14.6 लाख कैंसर के मामले सामने आए थे जिनके वर्ष 2025 में बढ़कर 15.7 लाख होने का अनुमान है। डॉक्टर नोरी ने 'मेमोरियल स्लोअन केटरिंग कैंसर सेंटर% और कॉर्नेल विश्वविद्यालय के 'न्यूयॉर्क-प्रेस्बिटेरियन अस्पताल% जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कैंसर के उपचार के लिए अपना पूरा जीवन सपर्पित कर दिया है।

लापता सैन्य हेलीकॉप्टर की मिली जानकारी, पांच नौ सैनिकों की तलाशी अभी भी जारी

वॉशिंगटन एजेंसी। अमेरिका में सुपर स्टैलियन हेलीकॉप्टर अचानक से लापता हो था। हालांकि, बुधवार यूएस मरीन कॉर्प्स ने विमान के मिलने की जानकारी दी। हालांकि, इस हेलीकॉप्टर में सवार पांच नौसैनिक की तलाश अभी भी जारी है। 6 फरवरी, 2024 को सुपर स्टैलियन हेलीकॉप्टर मरीन क्रीच एयर फोर्स बेस से मरीन कॉर्प्स एयर स्टेशन मिरामार के लिए रवाना हुआ था, लेकिन हेलीकॉप्टर विमान स्टेशन नहीं पहुंचा। अधिकारियों ने हेलीकॉप्टर को पाइन वैली, कैलिफोर्निया में ढूंढ लिया। यूएस मरीन कॉर्प्स ने आगे जानकारी दी कि सैन डिएगो काउंटी शेरिफ विभाग और कई संघीय, राज्य और स्थानीय एजेंसियों के समन्वय में विमान चालक दल का पता लगाने के लिए जमीनी और विमानन संपत्तियों का उपयोग कर रहा है। मरीन कॉर्प्स ने हेलीकॉप्टर के साथ अवशेष मिलने का कोई उल्लेख नहीं किया, जिससे संकेत मिलता है कि उसमें सवार लोग बच गए होंगे। पिछले साल नवंबर में जापान के तट पर वी-22 ऑस्प्रे टिल्ट-रोटर विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जिसमें आठ वायुसैनिकों की मौत हो गई थी।

यूक्रेन और इजरायल के लिए बुरी खबर, यूएस सीनेट ने 118 अरब डॉलर के पैकेज पर लगाई ब्रेक

न्यूयार्क , एजेंसी। अमेरिकी संसद के उच्च सदन (सीनेट) ने युद्ध में घिरे इस्राइल और यूक्रेन को मदद मुहैया कराने के लिए 9.7 लाख करोड़ रुपये (118.2 अरब डॉलर) के पैकेज पर मुहर लगा दी थी। हालांकि, रिपब्लिकन ने बुधवार को इस पैकेज मुहैय्या कराने पर ब्रेक लगा दी। अमेरिकी सीनेट में राष्ट्रपति जो बाइडेन की अपील के बावजूद रिपब्लिकन पार्टी के समर्थन वापस लेने के कारण सीमा प्रवर्तन उपायों और यूक्रेन को मदद देने संबंधी एक प्रस्ताव मंगलवार को गिर गया। बाइडन ने इस प्रस्ताव के गिरने के लिए पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को जिम्मेदार ठहराया है। रिपब्लिकन के विरोध के बाद डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता चक शूमर का कहना है कि इस मामले पर एक जल्द वोटिंग कराई जाएगी। बता दें कि संसद में पास हुए प्रस्ताव के तहत अमेरिका अब कुल राशि में से लगभग आधी यानी 60.1 अरब डॉलर (करीब 4 लाख 98 हजार करोड़ रुपये) की राशि यूक्रेन की मदद के लिए तय की गई थी। वहीं, इजरायल की मदद के लिए 14.1 अरब डॉलर (करीब 1.1 लाख करोड़ रुपये) तय किए गए थे।

दिल्ली में मौसम के बदले तेवर, धूप खिली लेकिन सर्द हवाओं ने ठिठुरन बढ़ाई

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली में हवा की रफ्तार बढ़ने से प्रदूषण से बड़ी राहत मिली है। ठंडी हवाओं के चलने से प्रदूषण घटा है, लेकिन ठिठुरन बढ़ गई है। बुधवार को दिल्ली का एक्यूआई 175 अंकों के साथ मध्यम श्रेणी में रहा। वहीं, नजफगढ़ सबसे कम प्रदूषित क्षेत्र रहा। बीते तीन दिनों से हवा की गति बढ़ने से प्रदूषण के लिए जिम्मेदार कणों का तेजी से बिखराव हो रहा है। इस कारण लोग तीन महीने बाद साफ हवा में सांस ले पा रहे हैं। बुधवार को सुबह-शाम बर्फीली हवाएं चलीं।

पिछले कुछ दिनों में कोहरा भी कम हुआ है। वहीं सबसे अधिक प्रदूषित पूसा रहा जहां एक्यआई 276 दर्ज किया गया। विशेषज्ञों के अनुसार, अगले दो दिनों तक एक्यूआई मध्यम श्रेणी में ही बना रहेगा। गुरुवार को दिल्ली में हवा की रफ्तार 12 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटा रहेगी। वहीं, शुक्रवार को 6 से 12 किलोमीटर प्रतिघंटा रहने का अनुमान है। शनिवार से हवा की रफ्तार घटने से प्रदूषण में बढ़ोत्तरी देखने को मिलेगी। ठंडक बनी रहेगी। बुधवार को हवा की गति 10 से 24 किलोमीटर प्रतिघंटा रही। गुरुवार को भी 12 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से हवा चलने का अनुमान है। बुधवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान 20.7 डिग्री दर्ज किया गया जो सामान्य से तीन डिग्री ज्यादा है। न्यूनतम तापमान 6.9 डिग्री दर्ज किया गया जो सामान्य से तीन डिग्री कम है। अगले चार से पांच दिनों तक दिल्ली में न्यूनतम तापमान सात डिग्री के आसपास बने रहने का अनुमान है। मौसम कार्यालय ने गुरुवार को आसमान साफ रहने और दिन में 20-30 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से सतही हवाएं चलने का पूर्वानुमान जताया है। अधिकतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के मुताबिक बुधवार सुबह आठ बजे दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 174 रहा जो मध्यम श्रेणी में है। शून्य और 50 के बीच एक्यूआई को अच्छा, 51 और 100 के बीच संतोषजनक, 101 और 200 के बीच मध्यम, 201 और 300 के बीच खराब, 301 और 400 के बीच बेहद खराब और 401 और 500 के बीच गंभीर माना जाता है।

अचानक हमास का नाम भूल गए बाइडन, अमेरिकी राष्ट्रपति ने मांगी माफी

वॉशिंगटन एजेंसी। हमास के खिलाफ युद्ध में अमेरिका इजरायल के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है। वहीं, दूसरी ओर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन युद्ध विराम की वकालत भी कर रहे हैं। इसी बीच अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन का एक वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है, जिसमें देखा जा सकता है कि बातचीत के दौरान वो हमास का नाम ही भूल गए। उन्होंने हमास के जगह विपक्षी आंदोलन शब्द का इस्तेमाल किया। हालांकि, थोड़ी देर बाद कुछ लोगों ने उन्हें याद दिलाया कि वो हमास की बात कर रहें हैं, फिर उन्होंने माफी मांगते हुए हमास कहते हुए बातचीत की। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार हमास ने जिन नागरिकों को बंधक बनाया है उन्हें रिहा करने को लेकर इजरायल के साथ चर्चा से जुड़े एक सवाल का जवाब देते वक्त बाइडन हमास का नाम भूल गए। 81 वर्षीय राष्ट्रपति जो बाइडन के स्वास्थ्य को लेकर भी काफी चर्चा होती है। वहीं, वो आगामी राष्ट्रपति चुनाव में डेमोक्रेटिक के दावेदार माने जा रहे हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन की इजरायल में नेताओं से मुलाकात से पहले बुधवार को हमास ने इजरायली बंधकों की रिहाई के संबंध गाजा में 135 दिनों के युद्ध विराम की योजना का मसौदा दिया।

दिल्ली जल बोर्ड में भ्रष्टाचार से मिली रिश्वत की रकम चुनावी कोष के तौर पर आप को दी गई

नईदिल्ली, एजेंसी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बुधवार को आरोप लगाया कि जल बोर्ड घोटाले का पैसा आप नेताओं को दिया गया। पैसा आम आदमी पार्टी के इलेक्शन फंड के लिए भी दिया गया। संघीय एजेंसी ने एक बयान में कहा कि डीजेबी से जुड़े कथित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में मंगलवार की छापेमारी के बाद 1.97 करोड़ रुपये मूल्य का सामान और चार लाख रुपये की विदेशी मुद्रा जब्त की गई।

इसने कहा कि छापेमारी के दौरान आपत्तिजनक दस्तावेज और डाटा भी जब्त किए गए। ईडी ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सहायक बिभव कुमार, आप के राज्यसभा सदस्य एन.डी. गुप्ता और अन्य लोगों के परिसरों की मंगलवार को तलाशी ली थी। एजेंसी ने कहा कि गिरफ्तार किए गए डीजेबी के पूर्व मुख्य अभियंता जगदीश कुमार अरोड़ा ने एनकेजी इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड नामक कंपनी को डीजेबी का ठेका देने के बाद रिश्वत की रकम नकद और बैंक खातों में प्राप्त की थी और उन्होंने इस पैसे को डीजेबी के मामलों का प्रबंधन करने वाले विभिन्न व्यक्तियों और आप से जुड़े लोगों को भी दिया। ईडी ने दावा किया, रिश्वत की रकम आप को चुनावी कोष के तौर पर भी दी गई।

रेलवे ने विदेशी आपूर्तिकर्ता को किया 6.85 करोड़ का अनियमित भुगतान

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय रेलवे के बनारस लोकोमोटिव व?र्क्स (बीएलडब्ल्यू) ने डीजल इंजनों के लिए 2017 में एक विदेशी विक्रेता से 6.85 करोड़ रुपये के उपकरण खरीदे, जिनका उत्पादन पहले ही बंद हो चुका था। लोक लेखा समिति (पीएसी) ने अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। समिति ने बुधवार को लोकसभा में अपनी यह रिपोर्ट पेश की। उसने आश्चर्य व्यक्त किया कि विक्रेता ने खरीद समझौते का उल्लंघन करते हुए इन उपकरणों की डिलीवरी तय समय के बाद की जबकि बीएलडब्ल्यू को इन्हें अस्वीकार करना चाहिए था। रेलवे बोर्ड ने मई 2016 में बीएलडब्यू में इलेक्ट्रिक इंजन बनाने का फैसला किया रिपोर्ट में कहा गया है कि हालांकि वह लगभग 36 प्रतिशत रियायती मूल्य पर खरीदने पर सहमत हुआ था। यह मामला डीजल इंजनों के निर्माण के लिए 660 चैनल एयर बाक्स की खरीद से संबंधित है। रिपोर्ट के मुताबिक रूटों के बढ़ते विद्युतीकरण को देखते हुए रेलवे बोर्ड ने मई 2016 में बीएलडब्यू में इलेक्ट्रिक इंजन बनाने का फैसला किया और इसकी शुरुआत फरवरी 2017 से की गई। समिति ने डिलीवरी अवधि को बढ़ाया 2019-20 से बीएलडब्ल्यू में डीजल इंजनों का उत्पादन पूरी तरह से बंद कर दिया गया।

अमेरिका में भारतीय छात्रों की मौत का रहस्य गहराया

न्यूयॉर्क एजेंसी। इंडियाना राज्य में स्थित प्रतिष्ठित पर्ड्यू विश्वविद्यालय में डॉक्टरेट की पढ़ाई कर रहा एक भारतीय छात्र इस हफ्ते मृत पाया गया था। इस मामले में अधिकारियों ने बताया कि छात्र ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या की है। उसके सिर में गोली लगी है। पर्ड्यू विश्वविद्यालय की एक समाचार एजेंसी के अनुसार, समीर कामथ को पांच फरवरी की शाम करीब पांच बजे मृत पाया गया था। उनका शव विश्वविद्यालय के क्रो ग्रोव में हृह्लष्ट॥श्वस्भूमि ट्रस्ट पर मिला था, जो एक प्रकृति संरक्षित क्षेत्र है। वॉरेन काउंटी के कोरोनर जस्टिन ब्रुमेट ने बुधवार को बताया था कि इंडियाना के क्रॉफर्ड्सविले में छह फरवरी को कामथ का फोरेंसिक पोस्टमार्टम किया गया था। ब्रुमेट के कार्यालय ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि कामथ की मौत सिर में गोली लगने की वजह से हुई है। यह आत्महत्या का मामला है। उसने खुद को गोली मारी है। हालांकि, एक रिपोर्ट इस मामले में अभी और सामने आनी है। विज्ञप्ति में कहा गया है, कई अन्य स्थानीय और संघीय एजेंसियों के साथ मिलकर जांच की गई है। इससे मौत का कारण साफ है।

अतीक अहमद की ग्रेटर नोएडा वाली कोठी मन्नत कुर्क, ढोल बजाकर कार्रवाई

पांच करोड़ है मकान की कीमत

नईदिल्ली, एजेंसी। कुख्यात माफिया अतीक अहमद का ग्रेटर नोएडा पुलिस ने सेक्टर-36 में बना मकान कुर्क कर लिया। तीन मंजिला इस मकान की कीमत करीब पांच करोड़ बताई गई है। प्रयागराज कमिश्नरेट में दस्तावेजों की जांच और सुनवाई के बाद अतीक अहमद के मन्नत नामक इस घर को अटैच करने का आदेश पुलिस कमिश्नर रमित शर्मा ने दिया था। इसके बाद ग्रेटर नोएडा पुलिस ने कुर्की की कार्रवाई की है। दरअसल, उमेश पाल हत्याकांड के बाद कुख्यात माफिया अतीक अहमद की ग्रेटर नोएडा में संपत्ति होने की बात सामने आई थी। इसके बाद पुलिस ने इस मकान को अपने कब्जे में लिया था।

प्रयागराज पुलिस कई बार ग्रेटर नोएडा आकर जांच करने के साथ दस्तावेज खंगाले थे। इसके बाद ग्रेटर नोएडा विकास प्राधिकरण से रिपोर्ट मांगी गई थी। ब्रिक्रेता, गवाहों से दस्तावेज, बैंक खातों की डिटेल ली गई थी। इसके बाद पता चला कि मन्नत नाम का यह मकान अतीक अहमद के नाम है। इसके बाद इस मकान को कुर्क करने के आदेश जारी हुए। प्रयागराज पुलिस आयुक्त न्यायालय के आदेश पर ग्रेटर नोएडा पुलिस ने बुधवार को सेक्टर 36 स्थित माफिया के मकान को एडीसीपी अशोक कुमार और एसीपी रामकृष्ण तिवारी की अगुवाई में ढोल बजाकर कुर्क करने की कार्रवाई की गई। बहुचर्चित उमेश पाल हत्याकांड के बाद अतीक का बेटा असद और शूटर गुलाम कानपुर होते हुए ग्रेटर नोएडा पहुंचे थे। पुलिस जांच से साफ हुआ कि असद और गुलाम कुछ मिनट के लिए अतीक के मन्नत नाम के इस मकान में पहुंचे थे।

पुलिस ने शक जाहिर किया था कि यहां पहले से कैश छिपाया गया था, जिसे लेने के लिए दोनों घर के अंदर गए थे। 90 वर्ग मीटर का प्लॉट अतीक अहमद को 9 मार्च 1994 में अलॉट किया गया था, जिसकी अलॉटमेंट आईडी उ-13018 है। इस मकान में एक राजमिस्त्री पप्पू का परिवार रहता था। पप्पू ने पुलिस को बताया था कि छह साल पहले उसे एक व्यक्ति ने घर का रखरखाव करने के लिए रखा था। उसके बाद से वह वापस नहीं आया। अतीक के बेटे ने यहां रहकर ग्रेटर नोएडा के एक नामी कॉलेज से पढ़ाई की थी। बताया गया था अतीक अहमद कभी-कभी यहां पर आता था। और इसी मकान पर अतीक को रंगदारी और वसूली की रकम अदा की जाती थी।

ट्रेवल एजेंसी की आड़ में चला रहे थे कबूतरबाजी, तीन गिरफ्तार

नईदिल्ली, एजेंसी। आईजीआई एयरपोर्ट पुलिस ने कबूतरबाजी के एक मामले में तीन दिनों के भीतर तीन एजेंट गिरफ्तार किए हैं। इनमें ट्रेवल एजेंसी चलाने वाला शख्स और एक अधिवक्ता शामिल है। पुलिस ने बीते रविवार को उदित मोगा, सोमवार को सागर डबास और मंगलवार को केवल सिंह को गिरफ्तार किया। आरोपियों ने एक यात्री को नवंबर 2022 में गुयाना का फर्जी वीजा देकर इस्तानबुल भेज दिया था। डीसीपी उषा रंगनानी के अनुसार 19 नवंबर 2022 को गुरमीत सिंह, साहिल कुमार और विक्रम सिंह को इस्तानबुल से डिपोर्ट कर आईजीआई एयरपोर्ट भेजा गया था। उनके दस्तावेजों से पता चला कि एयरपोर्ट से गुरप्रीत सिंह सात नवंबर को जबकि, जयपुर एयरपोर्ट से साहिल कुमार 16 नवंबर और विक्रम सिंह 14 नवंबर को बाकू (अजरबैजान) गए थे। वहां से तीनों 18 नवंबर को इस्तानबुल पहुंचे, जहां फर्जी वीजा होने के चलते उन्हें प्रवेश नहीं मिला। इसके बाद मामला दर्ज कर एयरपोर्ट पुलिस ने तीनों यात्रियों को गिरफ्तार कर लिया था। साहिल ने बताया कि केवल सिंह, मोगा सिंह और सागर डबास ने उसे गुयाना का फर्जी वीजा दिया था। 20 लाख रुपये में उनका सौदा तय हुआ। उसने दो लाख रुपये पहले दिए थे, जबकि बकाया वहां पहुंचने के बाद देना था। उसकी गिरफ्तारी के बाद से यह एजेंट लगातार फरार चल रहे थे। इस दौरान पता चला कि उदित मोगा दिल्ली में ही छिपा हुआ है। इस पर एसएचओ विजेन्द्र राणा की देखरेख में एसआई सरोज की टीम ने छापा मारकर उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी ने बताया कि वह महिपालपुर में ट्रेवल एजेंसी चलाता है। वह पहले टिकट और मनी एक्सचेंज का काम करता था। इस दौरान उसकी दोस्ती केवल सिंह और सागर डबास से हुई। तीनों मिलकर लोगों को विदेश भेजने के नाम पर फर्जीवाड़ा करने लगे। उसकी निशानदेही पर पुलिस ने लाडपुर गांव से सागर डबास को गिरफ्तार कर लिया।

नौकरी लगवाने के नाम पर ठगी? फर्जी आईडी से नॉर्थ ब्लॉक में घुसने की कोशिश; पुलिस के हत्थे चढ़ा युवक

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली पुलिस ने फर्जी पहचान पत्र से नॉर्थ ब्लॉक स्थित गृह मंत्रालय के ऑफिस में घुसने की कोशिश करने वाले युवक को मंगलवार को गिरफ्तार किया है। आरोपी का नाम आदित्य प्रताप सिंह है। वह किस मकसद से फर्जी आईडी पर अंदर घुस रहा था, फिलहाल इसकी जांच की जा रही है। प्रारंभिक जांच में मामला जालसाजी के तहत अंदर घुसने का माना जा रहा है। बहरहाल जांच एजेंसियां आरोपी से पूछताछ कर रही हैं।

माना जा रहा है कि आदित्य किसी से जालसाजी करने के इरादे से अंदर घुसा था। हालांकि, जांच एजेंसियां इसकी गिरफ्तारी की पुष्टि तो कर रही हैं, लेकिन अभी कारणों को लेकर कोई स्पष्ट बयान नहीं दिया है। आरोपी को जब पकड़ा गया तो शक के आधार पर उससे स्पेशल सेल और आईबी ने पूछताछ की, लेकिन जब मामला जालसाजी का निकला तो उसे स्थानीय पुलिस के हवाले कर दिया गया।

आरोपी आदित्य अयोध्या के पास के किसी गांव का रहने वाला है। इसका खुलासा तब हुआ, जब वह नॉर्थ ब्लॉक में घुसने की कोशिश कर रहा था। दरअसल वहां मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने उसके द्वारा दिए गए पहचान पत्र की जांच की तो वह फर्जी पाया गया। इसके बाद घटना की जानकारी पुलिस को दी गई। वह सरकारी विभाग में स्टेनो के पद पर काम करता है।

आरोपी पर ठग होने का शक है। अब तक की जांच में पता चला है कि वह मंत्रालय में नौकरी की पेशकश के नाम पर लोगों से ठगी करने में जुटा रहता था। खुद को गृह मंत्रालय का वरिष्ठ अधिकारी बताता था। उसने खुलासा किया कि वह खुद भी नौकरी के नाम पर ठगा जा चुका है। उसने पवन कुमार मिश्रा नाम के एक व्यक्ति का नाम लिया, जिसने खुद को गृह मंत्रालय का एक वरिष्ठ अधिकारी बताया और स्टेनोग्राफर की नौकरी के नाम पर उससे 4 लाख रुपये लिए थे। पवन ने ही उसे निजी सचिव का फर्जी आईडी कार्ड दिया था।

3 छात्रों ने सुलझा दी 2000 साल पुरानी गुत्थी, मिला 5 करोड़ का ईनाम

न्यूयार्क/स्विट्जरलैंड, एजेंसी। पुरातत्व विभाग हमेशा दुनिया के इतिहास को जानने की कोशिश में लगा रहता है। पुरातत्व विभाग को कई जगह जमीन की गहराई में ऐसी भाषा में हजारों साल पुराने टेक्स्ट मिले हैं कि उन्हें समझना लगभग नामुमकिन है लेकिन हाल में ऐसे ही एक 2000 साल पुराने टेक्स्ट को 3 छात्रों ने डीकोड कर 5.8 करोड़ का ईनाम जीत लिया है।

इन 3 छात्रों ने 79 ई. में माउंट वेसुवियस के विस्फोट में दफन होने के दौरान आंशिक रूप से संरक्षित किए गए एक रोमन स्क्रॉल को आर्टिफीशियल इंटैलिजेंस का उपयोग करके वस्तुतः खोल दिया गया है और डिकोड किया है। अमेरिका, स्विट्जरलैंड और मिस्र के इन तीनों छात्रों ने आर्टिफीशियल इंटैलिजेंस के जरिए सुवियस विस्फोट के दौरान जले एक प्राचीन रोमन स्क्रॉल के हिस्से को डीकोड करके दिखाया है। छात्रों ने यह काम मार्च 2023 में लॉन्च किए गए जिसमें

ज्वालामुखी विस्फोट की राख में खोई हुई प्राचीन लिपियों को डिकोड करने वाली टीम को 700,000 (5.8 करोड़ रुपए) दिए जाने का ऐलान किया गया था। वेसुवियस चैलेंज जीतने वाली सबमिशन टीम के प्रमुख यूसुफ नादेर ने कहा तीनों छात्रों ने टेक्स्ट के 15 से अधिक कॉलम को डिकोड किया, जो कि एक स्क्रॉल का लगभग 5त्न है। नादेर ने कहा, ÷मेरा मानना ??है कि टारगेट यह है कि अंततः हमारे पास ऐसे मॉडल हों जो किसी भी प्रकार के स्क्रॉल पर काम करते हों, भले ही वो किसी स्थिति में हों.÷ वेसुवियस चैलेंज इस साल एक नए भव्य पुरस्कार के साथ जारी है। इसमें ढ्ढ का उपयोग करके बाकी स्क्रॉल पढ़ना है। जो स्क्रॉल डिकोड किया गया वह सैकड़ों में से एक है। विजेता टीम ने जिस स्क्रोल को डीकोड किया है वह 2000 साल पुराना है और इसके टेक्स्ट में म्यूजिक और खाने पर एपिक्युरियन फिलोस्फी थी कि कैसे इन दो चीजों ने लोगों को खुशी दी। नादेर ने कहा ÷यह ऐतिहासिक पुरावशेषों के एक विशाल भंडार का प्रतिनिधित्व करता है कि यदि हम इन सभी प्राचीन चीजों को रिकवर कर सकें, तो यह प्राचीन इक्विटी से प्राप्त इतिहास को और स्पष्ट कर देगा।

जॉर्डन हमले का बदला ले रहा यूएस, ईरान समर्थक कताएब हिजबुल्लाह के कमांडर को अमेरिकी सेना ने किया ढेर

वॉशिंगटन एजेंसी। अमेरिका ने ईरान समर्थक सशस्त्र समूह के एक कमांडर को हवाई हमले में मौत के घाट उतार दिया। कुछ दिनों पहले हुए अमेरिकी सेना पर हुए हमले में इस संगठन की भी भूमिका थी। सेना के सेंट्रल कमांड ने सोशल मीडिया पर कहा, यह अमेरिकी सेना के खिलाफ जॉर्डन - सीरियाई सीमा पर अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर किए गए हमलों के जवाब है। अमेरिकी सुरक्षा बलों पर हमलों की सीधे योजना बनाने और इसमें भाग लेने के लिए जिम्मेदार एक कातेब हिजबुल्लाह कमांडर को मार गिराया गया। अमेरिकी प्रशासन की ओर से आगे जानकारी दी गई कि इस हमले में किसी निर्दोष को नुकसान नहीं पहुंचा है। बता दें कि कुछ दिनों पहले जॉर्डन - सीरियाई सीमा पर स्थित अमेरिकी सैन्य ठिकाने पर ड्रोन हमले हुए थे। इस हमले में तीन अमेरिकी सैनिक मारे गए थे। वहीं कई घायल हो गए थे। अमेरिका ने इस हमले के लिए 'ईरान समर्थित चरमपंथी समूह' को जिम्मेदार बताया था। वहीं, राष्ट्रपति जो बाइडन ने हमलावरों को चेतावनी दी थी कि अमेरिका जवाब जरूर देगा। इसके बाद अमेरिकी सेना ने जॉर्डन हमले का जवाब देते हुए इराक और सीरिया में 85 से अधिक ठिकानों पर एयर स्ट्राइक की। इस कार्रवाई में मिलिशिया समूह के छह लड़ाके मारे गए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129